भूमिका

कौन मनुष्य ऐसा है जो दोष रहित हो। कौन ऐसी जाति है जिसमें निर्बलतायें नहीं हैं। निर्दोष और पूर्ण तो केवल परमात्मा ही हैं। विकास सिद्धान्त के अनुसार सब का उद्देश्य उसी पूर्ण पुरुष की ओर जाने का है। इस दौड़ में कोई मनुष्य आगे है कोई मनुष्य पीछे; कोई जाति पीछे है कोई आगे। जो पीछे हैं, उसका कर्त्तव्य है कि अपने से आगे बढ़ी हुई जाति के गुणों से लाभ उठावे; उन्नतिशील जाति ने जो जो उद्योग और परिश्रम किये हैं इन को अपने अनुकूल बना उनका यथायोग्य उपयोग करे। मनुष्य दूसरों के सङ्ग से ही अपने गुण दोष जान सकता है; जातियां भी पारस्परिक सम्बन्ध द्वारा ही उन्नत पथ अनुगामिनी हो सकती हैं। अमरीका इस समय भारतवर्ष से बहुत आगे है। भारतवासियों को इस समय अमरीका की उन्नति के मर्म का जानना अत्यावश्यक है। मैं अमरीका में साढ़े पांच वर्ष के क़रीब रहा हूं। मैंने जो कुछ वहां देखा भाला है, उसका आनन्द तो पाठकों को 'अमरीका-दिग्दर्शन' पढ़ने से ही मिलेगा। परन्तु उसका स्वाद मात्र मैं निम्नलिखित कविता द्वारा पाठकों को चखाता हूं। मैं कवि नहीं हूं; मुझे कविता करना नहीं आता। यह मैं जो अमरीका सम्बन्धी भजन लिखता हूं, यह केवल अपने अनुभवों का सारांश समझाने के लिये है—

१२—इज़्ज़त वे औरतों की, करते हैं सच्चे दिल से।
उनको है जो सताता, भारी सज़ा वो पाता॥

१३—कोई न दीख पड़ता, भिखमङ्गा उस मुल्क में।
मज़दूर छः रुपये, है रोज़ के कमाता॥

१४—उनके यहां की चीज़ें, हर एक मुल्क जातीं।
खिंच खिंच के धन जहां से, उनके यहां है आता॥

१५—न्यूयार्क, बोस्टन में, देखी बड़ी दुकानें।
करोड़ों का माल जिनमें, आसानी से समाता॥

१६—चालीस मंज़िलों के, बनते हैं घर वहां पर।
बिजली की रोशनी से, हर एक जग मगाता॥

१७—न ऊंच नीच जानें, न छूत छात मानें।
सब के हकूक बराबर, सब की है एक माता॥

१८—भारत को गर उठाना, चाहते हो दिल से अब तुम।
तो एक नाश कर दो, यह ऊंच नीच नाता॥

१९—विनती यही है करता, कर जोड़ 'देव' तुम से।
अब छूत छात छोड़ो, भारत है सब की माता॥

पाठक, बस यही भजन, 'अमरीका-दिग्दर्शन' की भूमिका समझिये। इस पुस्तक में छपे बहुत से लेख सरस्वती में निकल चुके हैं, उनके लिये मैं सरस्वती प्रकाशक बाबू चिंतामणि घोषजी को जितना धन्यवाद दूं, वह थोड़ा है। 'अभ्युदय' के सम्पादक पंडित कृष्णकान्त मालवीयजी को भी मैं धन्यवाद दिये बिना नहीं रह सकता, जिन्होंने मुझे मेरे अभ्युदय में छपे लेखों को छापने की आज्ञा दी।

प्रथम संस्करण की भूमिका के अनुसार इतना कथन करने के बाद इस नवीन संस्करण के विषय में कुछ निवेदन करता

विषय-सूची

विद्वद्वर

पण्डित महावीर प्रसाद जी

द्विवेदी के करकमलों में

समर्पित ।

है। आकाशसे बातें करता है। ख्याल हुआ विज्ञान क्या नहीं कर सकता?

सोसाइटीके मकानका पता मैंने पुलिसके एक सिपाहीसे दरयाफ्त किया और शीघ्रतासे उस ओर रवाना हुआ। परन्तु शिकागो संसारके बड़े शहरोंमें तीसरे दरजेका है। इसकी गलियां २० मील लम्बी हैं; एक तो २७ मील है, इसलिए मुझे उस मकान पर पहुंचनेमें २ घण्टेके करीब लग गये। रास्तेका दृश्य, मेरे लिए बहुत ही मनमोहक था। अब मैं मारशल फील्ड (Marshal Field) की आलीशान दूकानके पास पहुंचा तब उसे देखकर मैं विस्मयान्वित होगया। कितनी भारी दूकान! करोड़ों रुपयेका सामान!! अनेकप्रकारकी वस्तु बिक्रीके लिए मौजूद थी। चित्त चाहता था कि इसके अन्दर जाकर अच्छी तरह देखूं, परन्तु समय नहीं था, और मुझे चिन्ता रातको रहनेकी थी।

डीयरबारन गलीमें महाबोधी सोसाइटीका आफिस था। उस अट्टालिकाके पास पहुंचा तो मालूम हुआ कि आफिस १०वीं मंज़िल पर है। मकानोंके ऊपर जानेके लिये क्या ही अच्छा प्रबन्ध किया हुआ है। एक जङ्गलेदार कोठरी रहती है। इसमें कोई दस आदमी खड़े हो सकते हैं। वह बड़े बड़े रस्सोंसे बंधी होती है। कोठरी क्या उसे एक प्रकारका खटोला कहना चाहिये। उसका सम्बन्ध प्रत्येक मंज़िलके साथ होता है। इसके भीतर खड़े होकर जिस मंज़िल पर जाना हो नौकरसे कह दो। वह उसी मंज़िल पर पहुंचा कर दरवाज़ा खोल देता है। बस आप अपने कमरेमें चले आइये। प्रत्येक इमारतमें इस प्रकारके तीन चार स्थान ऊपर नीचे

आने जानेके लिये होते हैं। थोड़ा समय और अधिक लाभ, यह नियम प्रत्येक स्थानमें देखा जाता है।

मकानके ऊपर पहुंच कर दरयाफ़्त करने पर मालूम हुआ कि महाबोधी सोसाइटी ने अपना दफ़्तर बदल लिया है। एक मेम साहबाने बड़े प्रेमसे मुझे नये आफिसका पता लिख कर दिया। मैंने उसे तलाश करनेका विचार किया, परन्तु ११ बजेसे ३ बजे तक लगातार घूमनेसे मैं थक गया था। यही नहीं, बल्कि वेंकोवरसे शिकागो तक चार दिन मैंने केवल मुट्ठी भर चनोंसे ही निर्वाह किया था। यद्यपि प्रत्येक रेल-गाड़ीके साथ भोजनकी गाड़ी (Dining Car) रहती है जहां मुसाफिर समयानुकूल भोजन पाते हैं; परन्तु मेरे लिये यह प्रबन्ध न होनेके तुल्य था। उसमें मांस मदिरासे घृणा होनेके कारण मुझे चार दिन निराहार रहना पड़ा और शिकागो में पहुंच कर भी कहीं कुछ प्रबन्ध न कर सका; तिस पर भी चार घण्टे लगातार शहरमें घूमना। इससे शरीर-रूपी गाड़ी धीमी चलने लगी; तो भी महाबोधी सोसाइटीकी तलाश करना ज़रूर था। तदर्थ मैं रवाना हुआ।

रास्तेमें जाते हुए कई एक स्थानों पर मैंने छोटे छोटे होट-लोंके नोटिस और नामके बोर्ड देखे। दिलमें आया कि क्यों न इनमेंसे किसीमें एक रात ठहर जाऊं और दूसरे दिन शिकागो-विश्वविद्यालयमें जाकर किसी भारतीय विद्यार्थीका पता मालूम करूं। एक पथिकाश्रमके ऊपर गया। जाकर प्रबन्धकर्त्तासे कुछ बात पूछी। उसने मेरा नाम लिख लिया, और मुझे एक कमरेमें जानेका इशारा किया। न जाने उस समय मेरे मनमें क्या आ गया, मैंने अनुमान कि शायद कुछ दालमें काला है। मैं सीढ़ियोंसे नीचे उतर कर गलीमें आ

गया। पीछेसे मालूम हुआ कि यह धूर्तोंका अड्डा था, जो मुसाफिरोंको रातको टिकाते हैं और सोते हुएकी जेबसे सब कुछ निकाल सफाई कर देते हैं। सबेरे प्रबन्धकर्ता अपना किराया लेता है। शामतका मारा बेचारा मुसाफिर चुपचाप सब सहता है और लाचार वहांसे चल देता है।

खैर मैं एक घण्टे बाद महाबोधी सोसाइटीमें पहुंचा। वहां जो महाशय कार्यालयमें काम करते थे उन्होंने बड़े प्रेमसे मेरी राम-कहानी सुनी, मेरे साथ चलकर किसी अच्छे होटल-में मेरे लिये प्रबन्ध करनेको वे उद्यत होगये। उनके साथ बिजलीकी गाड़ी पर बैठ मैं थामसन होटलमें गया। रास्तेमें डाकखानेकी बड़ी इमारत देखनेमें आई।

थामसन होटलके प्रबन्धकर्त्ताने मेरे मैले कपड़े देख और पीछे परदेशी जान कमरा देनेसे इनकार किया। इसलिये वहांसे मैं और मेरा साथी निराश होकर दूसरे होटलमें गये। वहां रहनेके लिये किसी प्रकार प्रबन्ध हो गया, केवल दो रात ठहरनेके लिये ६ रुपये देने पड़े। यह महाशय जो महाबोधी सोसाइटीसे मेरे साथ आये थे, मेरा प्रबन्ध करके चले गये। मैं एक नौकरके साथ रूटोले (एलिवेटर) में बैठ चौथी छत पर पहुंचा। नौकरने मुझे एक अच्छे सजे हुए कमरेमें ले जाकर कहा—"लीजिये महाशय, यह कमरा आपके लिये है" । यह कह कर वह चला गया।

नौकरके जाने पर मैंने दरवाजेको अन्दरसे लगा दिया। मैंने परमात्माका धन्यवाद किया कि रातको रहनेके लिये स्थान तो मिला। परन्तु चिन्ता यह लग रही थी कि कपड़ोंका प्रबन्ध कैसे होगा? कपड़े सब काले हो रहे थे। साबुन पास था। विचार किया कि शायद कल अवसर न मिल सके, इससे

शिकागो का रविवार

कागो संसारके प्रसिद्ध नगरों में से एक है। जगद्विख्यात धनी जान डी राकफेलर स्थापित विश्वविद्यालय यहीं पर है। अमरीका के बड़े बड़े कारखाने, पुतली घर यहीं पर हैं। इन कारखानों में हरएक कौमके लोग काम करते हैं। इतने बड़े प्रसिद्ध नगरके लोग अपने अवकाशका समय कैसे काटते हैं? वे अपना दिल कैसे बहलाते हैं? इस नगरीमें देखने लायक क्या कुछ है? पाठकोंके विनोदार्थ इन प्रश्नों का उत्तर हम इस लेख में देते हैं। आइये आपको शिकागो की सैर करा दें, इसके अजीब अजीब दृश्य दिखावें, और आपको बतलावें कि इस प्रसिद्ध नगरी में कौन कौन स्थान दर्शनीय हैं। साथ ही हम इस नगर के निवासियों के रहन सहन का ब्योरा भी देते जायंगे, जिसमें आपको अमरीका के इस प्रान्त वालों की जीवनचर्या के विषय में भी कुछ ज्ञान हो जाय। इस काम के लिये हमने रविवार का दिन चुना है। उसी की महिमा हम इस लेख में वर्णन करेंगे। इससे हमारा अभीष्ट भी सिद्ध हो जायगा और आपको यह भी मालूम हो जायगा कि शिकागो के निवासी रविवार की छुट्टी किस तरह मनाते हैं।

रविवार छुट्टी का दिन है। भारतवर्ष में छोटे छोटे बच्चे, जो स्कूलों में पढ़ते हैं, वे भी यह बात जानते हैं। एशिया और अफ्रीका में जहां जहां ईसाई लोगों का राज्य है सब वहीं स्कूलों और

प्रकार वर्तमान अवस्था को पहुंचा है। भू-गर्भविद्या-सम्बन्धी पदार्थों को भिन्न भिन्न कमरों में दरजे बदरजे रखकर उनका क्रम-विकास अच्छी तरह बतलाया गया है। यहां पर स्पष्ट मालूम हो जाता है कि उत्तरी अमरीका के हिरन किस प्रकार भिन्न भिन्न ऋतुओं में अपना रङ्ग बदलते हैं। किस प्रकार प्रकृति-माता वर्फ़ के दिनों में उनको भोजन देती है। शीतप्रधान देश में रहनेवाले रीछों के बर्फ़ के भीतर बने हुये घर बड़ी ही अच्छी तरह दिखाए गये हैं। यहां यह बात प्रत्यक्ष मालूम हो जाती है कि अमरीका के प्राचीन निवासी (Red Indians) किन देवी-देवताओं की पूजा करते थे, कैसे घरों में रहा करते थे, किस प्रकार किन चीज़ों की मदद से अपने [illegible] बनाते थे। उनकी नौकाएं, उनके खाने पीने का सामान, उनके पोशाक, उनके युद्ध के शस्त्र—सब चीज़ें बहुत ही अच्छी तरह दिखाई गई हैं। [illegible] अधिक लाभ [illegible] की सहायता से [illegible] है, इस सिद्धान्त की पुष्टि इन दृश्यों को देखकर हो जाती है। जब इन सब चीज़ों को देखा तब अफ़सोस हुआ यह ख्याल हो आया कि क्या भारतवासियों का रहन, उनकी चालें, उनका इतिहास आदि सब कुछ नष्ट होकर किसी दिन अमरीका की इसी अजायबघर ([illegible] Museum) में ही [illegible] रह जायगा।

इस अजायबघर के पास ही [illegible] की [illegible] मूर्ति (Statue) बिराजमान है। इस विद्या-विलासी [illegible] के [illegible] मन में [illegible] के विचार उत्पन्न होते हैं और यह [illegible] के [illegible] जाता है। दक्षिणी अमरीका और उत्तरी अमरीका में किस प्रकार है [illegible] वहां के आदिम-निवासी कहां गये ? जिनकी

कर लेते हैं जो हमारे देश में दस बरस स्कूल में पढ़ने से भी नहीं होती।

अजायबघर से बाहर निकलकर देखिए, झील के किनारे किनारे, सड़क बनी है। बेंचें रखी हुई हैं। वहां स्त्री, पुरुष, बालक आनन्द से बैठे हैं और हंस खेल रहे हैं। उनके चेहरों को देखिए—"स्वतन्त्रता" उनके माथे पर जगमगा रही है। नवयुवक अपनी प्रियतमाओं के साथ इधर से उधर, उधर से इधर, घूमते और वार्तालाप करते हुए क्या ही भले मालूम होते हैं। मिशिगन झील भी उनके इन प्रेम के भावों को देख कर प्रसन्न मालूम होती है। वह अपने स्वच्छ शीतल पवन के झोकों से उन्हें आशीर्वाद सा दे रही है। जल की तरंगे छोटे छोटे बालकों को देखकर, उनसे मिलने के लिए, बड़े आह्लाद से आगे बढ़ती हैं, परन्तु तत्काल ही यह सोच कर कि शायद कुछ बेअदबी न हुई हो शीघ्र हट जाती हैं। इस समय भगवान सूर्य्य अपने दिन के कार्य को पूरा कर पश्चिम की ओर गमन करते हैं।

इस अजायबघर के सिवा और भी बहुत से स्थान शिकागो निवासियों को रविवार मनाने के लिए हैं। शिकागो में अनेक उद्यान (Parks) ऐसे हैं जहां 'शिकागो' वाले नया मन बहलाते हैं और अनेक व्यायाम करते रहते हैं। यहां आकर लोग बैठते हैं; बाजे सुनते हैं, और आनन्द मग्न होकर घर आते हैं।

यहां एक उद्यान है जिसका नाम हम्बोल्ट पार्क है। इस-में शहर के ढंग के बड़े बड़े और फुहारे हैं। उनमें जल भरा रहता है। छोटी छोटी नावें पानी पर तैरा करती हैं। वे नावें खेल के लिए हैं। ग्रीष्म-काल में यहां नावों की दौड़ होती है। रविवार के दिन इन उद्यानों का दृश्य बहुत ही मनो

दूर हो जाता है। नवयुवक नौकायें खेते हुए हंसते, खेलते, गाते, जीवन का आनन्द लेते हैं। एक एक नौका पर प्रायः एक नवयुवक और एक युवती स्त्री होती है। वे सहाध्यायी मित्र, अथवा पति-पत्नी होते हैं। इस तरह की संगति इस देश में बुरी नहीं मानी जाती और न हम लोगों के देश की तरह ऐसे बुरे भाव ही इन लोगों में उत्पन्न होते हैं। स्त्रियों की बड़ी प्रतिष्ठा है। कोई बहुत ही पतित पुरुष होगा जो उनके साथ नीच व्यवहार करेगा। ऐसे पुरुष के लिये कानून में बड़े भारी दण्ड का विधान है। प्राय. सभी उद्यानों में ऐसे जल कुण्ड हैं। जो स्थान जिसके निकट हो वह वहाँ जाकर रविवार को आनन्द मनाता है।

कोई शायद पूछे कि क्या और रोज़ वहां जाना मना है? ऐसा नहीं है। परन्तु कारण यह है कि अधिकांश लोगों को सिवा रविवार के और रोज़ छुट्टी ही नहीं मिलती; इसलिये रविवार को ही इन उद्यानों में लोग एकत्रित होते हैं। रोज़ सिर्फ कहां कहीं टेनिस खेलते हुए स्त्री-पुरुष दिखाई देते हैं। यह बात ग्रीष्मऋतु की है। जाड़ों में जब इन कुण्डों का पानी जम जाता है तब वहां पर लोग "स्केटिंग" (Skating) करते हैं। स्केटिंग एक प्रकार का खेल है। हर साल दिसम्बर में स्केटिंग का समय होता है। बेहद जाड़ा पड़ता है, पर बालक बालिकायें इन स्थानों में नाचती हुई दिखाई देती हैं।

लिङ्कन-उद्यान भी बहुत प्रसिद्ध है। इसमें अमरीका के विख्यात योद्धा वीर-वर ग्राण्ट की मूर्ति है। अश्वारूढ़ ग्राण्ट, इस देश के इतिहास के ज्ञाता को एक भयङ्कर युद्ध का स्मरण कराते हैं। यह युद्ध गुलामों के व्यापार को बन्द कराने के लिये आपस में हुआ था। अमरीका के उत्तर के लोग चाहते थे कि

नामक विहार-स्थल है। यहांकी गलियां अपने देशोंकी जैसी नहीं हैं। गलियां क्या एक बाज़ार है। पत्थरके मकानोंके आगे, दोनों किनारों पर, पाँच फीट के क़रीब रास्ता, सड़कसे ऊँचा, लोगों के चलने के लिये बना हुआ है। बीच की सड़क गाड़ी, घोड़े, मोटर आदिके लिये है। खुले मकानों और चौड़ी सड़कोंके होने पर भी, हवा साफ़ रखने और गरीब मजदूरों के मनोरञ्जन तथा स्नान के लिये थोड़ी थोड़ी दूर पर विहार-वाटिकायें हैं, जहाँ बैठने के लिये बेंचें रखी रहती हैं। काम से थके हुए स्त्री-पुरुष रोज़ सायङ्काल में यहां दिखाई देते हैं। क्योंकि और स्थानों में गाने, बजाने और जल-विहार आदि के लिये थोड़ा बहुत खर्च करना पड़ता है, जो थोड़ी आमदनी के लोग नहीं कर सकते। उनके लिये ऐसे स्थानों, उद्यानों और अजायबघरों में घूमने की स्वतन्त्रता है। यत्न यह किया गया है कि सब को इस स्वतन्त्र देश में आनन्द प्राप्त करने का अवसर मिले। यहाँ जो धन व्यय किया जाता है वह, शारीरिक और मानसिक दोनों प्रकार की उन्नति के लिये, किया जाता है

यह तो हुई दिन की बात, अब रात की सुनिये। यहां बहुत से नाटक-घर, मूर्तियाँ और तमाशे हैं, जहां अपनी अपनी रुचि के अनुसार लोग रात को जाते हैं। शिकागो में लोग अक्सर रात को भी गिरजों में जाते हैं। रात को भी यहां उपदेश, गायन और हरिकीर्तन होते हैं। यहां एक जगह "व्हाइट सिटी" (White City) श्वेत नगर है। बहुत से लोग वहाँ जाते हैं। इस जगह को "श्वेत-नगर" इसलिये कहते हैं कि यहां बिजली की खूब रोशनी होती है, जिससे रात को भी दिन होता सा रहता है। इसके विशाल द्वार पर बड़े बड़े मोटे बिजली के प्रकाश के अक्षरों में "व्हाइट सिटी"

देखकर आप भूल आइये। नहीं; इससे आप यह दृश्य एक महान् उद्देश्य को सामने रख कर है। कृपा करके, विचार तो कीजिये कि यह क्या है?

बिजली की रेलगाड़ी।

(Electric Railway)

अमरीका में आज कल इस बात का यत्न हो रहा है कि किस प्रकार बिजली से रेलगाड़ी चलाने का प्रबन्ध किया जाय। बिजली से चलनेवाली ट्राम आदि साधारण गाड़ियां तो, हमारे देश-बन्धुओं ने कलकत्ता, बम्बई आदि बड़े बड़े शहरों में भी देखी होंगी; परन्तु यह शायद उन्होंने न सुना हो कि अमरीका-निवासी भाफ से चलनेवाली रेलगाड़ी के स्थान पर अब बिजली की रेलगाड़ी चलाने की चिन्ता में हैं। वे चाहते हैं कि किस प्रकार खर्च थोड़ा और काम अधिक हो। उनके रहने और आचार व्यवहार आदि का ढंग हमारे देश का सा नहीं है। हमारे देश में यदि पिता लकड़ी या बांस की पुरानी लकड़ी से बोझा ढोता था, तो उसका लड़का भी उस लकड़ी का पिण्ड नहीं छोड़ता। जिन करघों से सैकड़ों वर्ष पहिले जुलाहे कपड़े बुनते थे, आज भी न जाने कै जुलाहोंके हाथ में वही देखे जाते हैं। कभी किसी के मनमें आगे बढ़कर कदम मारने का हौसला ही नहीं होता।

समय ही रुपया है (Time is money) इसी नियम पर अमरीका-निवासी चल रहे हैं। इनका मूल मन्त्र है—किस प्रकार थोड़ा-समय लगे और काम अधिक हो। इनके कार-खानों में जाइये; आप सब कहीं इसी नियम की सर्व-प्रधा-

कता पाइयेगा। हमारे देश में मारवाड़ा, एक चीरने में सारा दिन लगा देते हैं; पर कभी उनके मन नहीं आता कि हम क्या थोड़ा समय ख़र्च करके इस काम के करने का तरीक़ा नहीं निकाल सकते? अमरीका भाफ़ की रेलगाड़ी से जो फी घण्टा ५० मील से
ये हैं। ये कहते हैं कि यह चाल बड़ी सुस्त है। वेंकोवर से शिकागो २३०० मील है; उसे तै करने में तीन दिन लग जाते हैं इससे ये चाहते हैं, कौन सा उपाय हो, जो दो दिन लगें? एक दिन की बचत हो।

पाठक शायद यह कहें कि ऐसी क्या आफ़त आई है! क्यों अमरीका वालों में यह धुन समाई है? ऐसी जल्दी काहे की है? भाई अमरीका हिन्दुस्तान नहीं। यहां उन्नति, उन्नति की ही ध्वनि सब कहीं सुन पड़ती है। सभ्य संसार में बिना उन्नति के काम नहीं चल सकता—"तातस्य कूपोऽयमिति ब्रुवाणा" ने ही भारत को मटियामेट कर दिया!

भला बिजली की रेलगाड़ी से लाभ क्या? एक बड़ा भारी लाभ तो बिजली की रेलगाड़ी का तत्काल ठहर जाना है। भाफ़ से चलने वाली रेलगाड़ी को ठहराने के लिये समय चाहिये। हमारे देश में लोगों ने बहुधा रेलों की टक्करें सुनी होंगी। उनसे लाखों रुपये की हानि और सैकड़ों की जानें जाती हैं। ऐसी टक्करों को बिजली की गाड़ी कम कर देगी। भाफ़ की रेलगाड़ी में किराया अधिक लगता है, बिजली की गाड़ी में किराये की किफ़ायत होगी, थोड़े ही ख़र्च से लम्बे २ सफ़र हो सकेंगे। थोड़ी तौफ़ीक़ वालों को भी दूर २ के स्थान देखने का अवसर मिलेगा। समय थोड़ा लगेगा। भाफ़ की रेलगाड़ी में बहुत समय लगता है। बिजली की गाड़ी इस

है। साबुन की बट्टी रक्खी रहती है। एक नौकर हुक्म अंगोछा बदला करता है। सब तरह का आराम रहता है। एक ख़ास गाड़ी खाने पीने के लिये रहती मुसाफ़िर समयानुकूल भोजन पाते हैं। अब हाल देखिये। भेड़ बकरी की तरह आते हैं। उनको दम लेना भी कठिन हो जाता है। पानी के लिये हर स्टेशन पर चिल्लाना पड़ता है। दूसरे दर्जे के सिवा तीसरे और ड्यौढ़े में गुज़रती है। किसी को कुछ तकलीफ़ भी नहीं है। स्त्रियों की जो दुर्दशा होती है वह इन सब दुर्दशाओं के होने पर भी भारतवासियों को कभी यह बात नहीं आती कि ये दिक़्क़तें कैसे दूर हैं। अमरीका की गाड़ियों में इतना आराम है। [illegible]

मुसाफ़िरों के आराम का भरपूर प्रबन्ध किया जाता है। इन्हीं कम्पनियों की आपस की इस प्रकार की चढ़ाऊपरी का यह फल है जो यहां की एक कम्पनी बिजली की गाड़ी बनाने का विचार कर रही है। भारतवासी अप्रतिष्ठा सहते हैं; स्टेशनों पर गालियां खाते हैं; खाने पीने की तकलीफ़ उठाते हैं सारी रात जागते व्यतीत करते हैं; गरमियों में क़ैदियों की तरह गाड़ियों के भीतर बन्द रहते हैं; तिस पर भी यह नहीं सोचते कि क्या हम इन दिक़्क़तों को दूर नहीं कर सकते? सचमुच सब कष्ट दूर हो सकते हैं; अमरीका की जैसी सुन्दर गाड़ियां बन सकती हैं; प्रबन्ध अच्छा हो सकता है; सब तरह के आराम मिल सकते हैं; बिजली की गाड़ियां भी बन सकती हैं, हां व्यवसाय, परिश्रम, मेल और पूंजी चाहिये।

मित्र से परिचय-दायक पत्र लेकर मैं वरमिलियन नामक नगर में पहुंचा। वरमिलियन एक छोटा सा कस्बा है। दक्षिण डकोटा रियासत में है। यह शिकागो से पांच सौ मील पश्चिम की ओर है। यहां के एक बड़े ज़मींदार मिस्टर एल्वी एण्ड्रियूज़ के नाम मेरे दोस्त ने मुझे पत्र दिया था। मित्र से यह भी मुझे पता लग गया था कि ज़मींदार महाशय मिशेगन कालेज़ के ग्रेजुएट हैं; कानून में भी आपने एल० एल० बी० की पदवी प्राप्त की है; इसलिये मैं समझता था कि श्रीमान् बड़े ही फूंक फूंक कर चलने वाले होंगे।

जिस समय गाड़ी वरमिलियन पहुंची, दो पहर थी। धूप ऐसी कड़ाकेदार थी कि मुझे अपना प्यारा देश याद आ गया। जब मैं एल्वी महाशय के घर पर पहुंचा तब वे कहीं बाहर गये थे। उनकी वृद्धा माता ने मुझे प्रेम से बिठलाया और ठहरने के लिये कमरा दिखला दिया।

कमरे में अपना देग रख कर मैं दरवाज़े के बाहर बरामदे में कुरसी पर आ बैठा। हवा बहुत धीरे धीरे चल रही थी। इसलिये मैं पसीने से तर हो गया। वृद्धा ने मुझे एक पंखी लाकर दी और मेरे पास कुरसी पर बैठ कर कपड़ा सीने लगी। थोड़ी देर तक हम लोग चुप रहे। वृद्धा ने पूछा—

"एल्वी कहता था कि एक हिन्दू हमारे खेत पर काम करने आवेगा। क्या आप ही खेत पर काम करने के विचार से आये हैं?"

मैं (बड़े अदब से)—"हां, मैं इसी लिए आया हूं।"

उसने कुछ मिनट मुझे ध्यान से देख कर कहा—"अमरीकन खेत का कठिन काम आप ऐसे शरीर का पुरुष कैसे कर सकेगा?"

मैं—"आप ऐसा न समझिये कि मैं बिलकुल ही कमज़ोर हूं। इसमें शक नहीं कि मेरा शरीर अमरीकन मज़दूरों का सा नहीं है; परन्तु मेरा साहस उन्हीं का सा है।"

वृद्धा हँसकर बोली—"अच्छा इसकी परीक्षा होजायगी।" यह फिर अपने काम में लग गई। मैं कुरसी पर बैठा सोचता रहा कि बुढ़िया कहीं रङ्ग में भङ्ग न डाल दे कि मेरा यहां आना ही वृथा होजाय।

रात के मिस्टर पल्थी आ गये। मुझ से बड़ी अच्छी तरह पेश आये। साढ़े चार रुपया रोज़ के काम पर उन्होंने मुझे रखना स्वीकार किया। दूसरे ही दिन मैं उनके खेत पर गया।

वर्मिंग्रियन से आठ दस मील पर यरवेंक नाम का एक बहुत छोटा सा गांव है। यह रेल की सड़क पर है। महाशय की चार सौ एकड़ भूमि यहीं पर है। मुझे यहीं करना था।

मैं जिस समय खेत पर पहुंचा, सब लोग गिरजे गये थे। केवल एक मज़दूर खेत पर था। यहां पर यह बतला देना चाहिये कि जैसे हमारे यहां बड़े बड़े ज़मींदार एक प्रबन्धकर्ता रखते हैं वैसे ही मिस्टर पल्थी के खेत पर भी एक मैनेजर मिस्टर हाक्ने अपनी घर-गृहस्थी के साथ रहता था। इसके एक दरजन लड़के लड़कियां थीं। शाम को ये सब लोग गिरजे से लौटे।

धीरे धीरे भोजन का समय आया। हम लोग मेज़ के चारों ओर कुरसियों पर बैठे। उस समय मेरी अजीब हालत थी। मला कहां शिकागो यूनिवर्सिटी की विशाल भोजनशाला का स्वच्छ और सम्यजनोचित भोजन, और कहां यहां का रूखा सूखा मोटा मद्दा खाना! यद्यपि विश्व-विद्यालय में भी मुझे

इनको खिला पिला कर मोटा करते हैं, तब बेंच डालते हैं।"

मैं—"और ये बैल आप लोग क्या करते हैं?"

हाल्वे—"अभी पांच चार रोज हुए एक सौ बैल हमलोगों ने सुनिटी के बाज़ार में बेचे थे। ये चारों भी बेच डाले जायँगे।"

उस समय मेरे दिल पर बड़ी चोट लगी। मैंने शिकागो का बूचड़खाना अपनी आंखों से देखा था। हज़ारों सूअर, भेड़ और बैल वहां पर मैंने बूचड़खाने के बाहर बंधे देखे थे। "यहां लोग पशुओं को यहां से पाल पाल कर वहां मारने को भेजते हैं और अपने दाम खरे करते हैं। यह क्या माया है? "स्वार्थ! खुद्गर्ज़ी" !! अमरीका में लाखों एकड़ भूमि सिर्फ़ पशुओं के निमित्त है। जमींदार लोगों की अधिकांश आमदनी इसी व्यापार से है। मकई जितनी पैदा होती है उसका दसवां भाग मनुष्य अपने खानेमें लाते होंगे, बाकी सब सूअरों भेड़ों और बैलों के खाने में आती है। जब ये पशु खूब मोटे ताज़े हो जाते हैं तब सभ्यताभिमानी मनुष्य उनको मार कर खा जाते हैं। अमरीका का करोड़ों रुपये का व्यापार इस से होता है। इन पशुओं की कीमत इनके वजन के अनुसार लगती है। इसीलिए हाल्वे इनको मकई खाने को देते थे।

* * * * *

अमरीका में घोड़ों से खेती होती है। प्रातःकाल सात बजे अपनी अपनी गोड़ने की कल, जिसके आगे दो घोड़े रहते हैं, लेकर मज़दूर अपने अपने काम पर पधारे। मैं इस काम को बिलकुल न जानता था, इसलिए गोड़ने का काम

मुझे दिया गया। ग्यारह बजे के क़रीब मैं मकई के खेत में का
काम कर रहा था कि किसी ने पीछे से मेरी पीठ पर हा
रक्खा। मैंने घूम कर देखा तो ज़मींदार महाशय किसानों
कपड़े पहिने हाथमें कुदाली लिए खड़े हैं। मैं बड़ा हैरान हुआ
सज्जन तो बी० ए० फिर एम० एल० बी०, तिस पर भी
सौ एकड़ भूमि का मालिक, मेरी तरह काम करने के लि
तैयार खड़ा है। धन्य ! अमेरिका, धन्य ! अपने ऐसे ही
सभी सुपुत्रों की बदौलत आज तू उन्नति के सर्वोच्च शिखर प
विराजमान है परन्तु जिस देश के शिक्षित और धनवा
मनुष्य शारीरिक परिश्रम से बेतरह नाक भौं सिकोड़ते
वह देश क्यों न अधोगति को प्राप्त हो? क्यों न वह दुः
दरिद्र का लीलास्थल बना रहे? जब मेरी उनकी चार आँ
हुईं तब वे हँस कर बोले—"क्यों कैसा कठिन काम है?"

मैं (मुसकिराकर)—सभी काम आरम्भ में कठिन हो
हैं। पीछे से अभ्यास हो जाने पर आसान हो जाते हैं।"

पत्नी—"शाबाश! ऐसे ख़याल वाले आदमी के लि
दुनियाँ में कोई भी काम मुश्किल नहीं है।"

मैं चुप रहा। फिर पत्नी बोले—"आप यदि आलू के खे
में काम करें तो बहुत अच्छा हो। यह मकई तो प्रायः पशु
के खाने में आती है इसलिये इसकी अच्छी बुरी की पर
परवा नहीं। ख़ासकर इस समय जब दूसरे खेतियों में आद
मियों की सख़्त ज़रूरत है।"

मैं—"ऐसी आज्ञा। मुझे तो काम करना है।"

हम दोनों आलू के खेत में पहुँचे। ज़मींदार महाशय
इस साल १२० एकड़ भूमि में आलू बोये थे। आलू
फ़सल के अच्छे होने की इस साल कम आशा थी। पहिले

छै पूले एकट्ठे इस प्रकार खड़े किये जाते थे कि धूप से जी जल्द सूख जायँ, और यदि पानी बरसे तो उनके ऊपर से बह जाय।

अकसर ज़मींदार अनाज के सूखते ही उसको भूसी से अलग करने के लिये मड़नई की कल (Thrashing Machine) का उपयोग करते हैं। इस मशीन से गेहूं या जौ अलग होकर डब्बेदार गाड़ियों में गिरते जाते हैं। भूसा कल के ज़ोर से उड़ उड़ कर दूर गिरता जाता है। उस का एक बड़ा ऊंचा टीला सा बनता जाता है। पास के एक खेत पर एक दिन मैं गेहूं की मड़नई देखने गया था। एल्बी का विचार शीघ्र मड़नई करने का नहीं था, इस लिए जौ के सूखने पर उन पूलों के बड़े बड़े कुप्प बना दिये गये।

इस खेत पर सौ एकड़ भूमि में ओट (Oats) बोये गये थे। जब वे पक गये तब इसी मशीन से वे भी काटे गये। उनके भी बड़े बड़े कुप्प बना दिये गये। यह मशीन बिलकुल जड़ तक फ़सल नहीं काटती; आठ से दस इञ्च तक डंठल रह जाते हैं। परन्तु इससे कोई हानि नहीं, उलटा फ़ायदा है। जब भूमि पर नये सिरे से हल चलाया जाता है तब ये डंठल खाद का काम देते हैं। पश्चिमी अमरीका में बहुत से ज़मींदार ऊपर ही ऊपर से फ़सल काटते हैं। बाक़ी खाद के लिये रहने देते हैं। यहां भी जब ओट कट चुके, और उनके पूलों के बड़े ऊंचे कुप्प बना दिये गये, तब हल का काम आरम्भ हो गया। हल वाली कल को अंग्रेज़ी में प्लाविंग मशीन (Ploughing Machine) कहते हैं। इसके आगे भी छै, आठ, दस, ज़रूरत के मुताबिक घोड़े रहते हैं। पशुओं के लिये यह बड़ा कठिन काम है। आठ से दस इञ्च सख्त ज़मीन को

मैं—"वाह—यह कैसे हो सकता है? मैं कालेज कैसे आऊंगा?"

इस पर सब लोग हँस पड़े। हाल्वे ने कहा—"घबराइये नहीं। इस मुल्क में मज़दूरों की रक्षा गवर्नमेंट अच्छी तरह करती है। आपको यदि पल्सी मज़दूरी न दे तो आप उसका असबाब नीलाम करवा सकते हैं।"

इस पर पल्सी (बड़ी लड़की) ने हँसकर मुझे सम्बोधन करके, कहा—"अच्छा यदि पल्सी आप को मज़दूरी न दे, तो आप उस की कौन सी चीज़ लेना पसन्द करेंगे।"

मैं—"उसके अस्तबल में जो अच्छी घोड़ी बंधी है, मैं तो उसी पर चढ़कर रफूचक्कर हो जाऊंगा।" इस पर मारे हंसी के सब लोग लोट पोट हो गये।

इस तरह बहुत प्रकार की बात चीत होती रही। मैंने हाल्वे से कहा कि आप कोई दिल्लगी की बात सुनावें। हाल्वे ने कहा, दिल्लगी क्या, एक सच्ची बात सुनाता हूं—

"जब पिछली बार हम लोग बैल बेचने सुसिटी गये, तब लोगों से सुना कि यहां पूर्व से पादरी लोग व्याख्यान देने आये हुये हैं। एक लेकचर उस रोज़ भी तीसरे पहर होने वाला था। मैं भी सुनने गया। एक नौजवान पादरी खड़ा लेकचर दे रहा था। अपने लेकचर में उसने अपने पादरी हो जाने का कारण बतलाया। कहने लगा कि मैं किसान हूं। एक दिन दोपहर को खेत में कड़ा काम कर रहा था कि मुझे आकाश में कुछ शब्द सुनाई दिया। मैंने जो आंख उठाकर देखा तो एक फ़रिश्ता खड़ा पाया। उसके हाथ में एक तख़्ती थी। उस तख़्ती पर मोटे अक्षरों में "पी० सी०" (P. C.) लिखा हुआ था। कुछ देर में फरिश्ता लोप हो गया। मैं

सोचने लगा कि यह क्या ? आखिर मैंने समझा कहा गया है (Preach Christ) ईसा के प्रचार कर, बस मैंने उस दिन से अपना काम छोड़ धर्म का प्रचार करना आरम्भ किया। यह सुन कर, गवों में एक बुड्ढा जो कोने में बैठा था, उठा और लगा—"महाशय, आपने भूल की"। व्याख्यानदाता होकर)—"क्या" ?

बूढ़ा—"फ़रिश्ते ने आप से कहा था 'Plough C अर्थात् मकई बोओ'। आपने उलटा समझा ?"

जितने आदमी वहां बैठे थे, सभी क़हक़हा मार पड़े। व्याख्यानदाता पर मानों घड़ों पानी पड़ गया। को बतलाने की जरूरत नहीं की बुड्ढे के और के कहे हुये शब्दों के प्रथमाक्षर एक ही हैं। दोनों मे भिन्न भिन्न अर्थ किये। हम लोग इस प्रकार बहुत देर बातें करते रहे।

आज तमाम दिन पानी बरसता रहा। शाम को बाद सब लोग फिर बैठक में इकट्ठे हुए। पत्नी भी की गाड़ी से आगये थे। पत्नी पियानो बजाने में कुशल बाजा बजाना आरम्भ हुआ। एक अजीब दृश्य सेवक सब एक समान—कोई भेद-भाव नहीं। अपने देश देखो। नौकर तो पशु से भी बदतर समझा जाता है। अभी बाद लोग किसानों को अपने साथ कुरसी पर इलकारफ़त समझते हैं। पाठक, यदि आपके यहां नौकर हो तो आप उस को शिक्षा दें, उसके अन्दर आत्म सम्मान का माद्दा उत्पन्न करें; यही सच्ची देश सेवा समझिये

एलसी पियानो बजाती थी और गाती भी थी। उसके साथ उसकी दो बहनें और भाई भी गाते थे। अधिकांश गीत देश और लोक-धर्म सम्बन्धी थे। दो घण्टे तक इन गानों के गाने का आनन्द हुआ। अन्त में, हाइवे के कहने पर, एक छोटी लड़की ने, जिसकी उम्र आठ बरस की थी, एक गान गाया। उसके कुछ पद मैं नीचे लिखता हूँ—

There are many flags in many lands,
There are flags of every hue,
But there is no flag in any land,
Like our own red, white and blue.

CHORUS

Then hurrah for the flag,
Our country's flag its stripes and white stars.

VERSE

I know where the prettiest colors are,
And I'm sure if I only knew,
How to get them here I would make a flag
Of glorious red, white and blue.

* * * * *

LAST

We should always love the stars and stripes,
And we mean to be ever true,
To this land of ours and the dear old flag
The red, the white and blue.

[illegible], इस प्रकार की मुलाकात हुई, [illegible] हुई। मैं [illegible], [illegible] से, अपने कमरे में [illegible]

गया। आंखों से टप टप आँसू गिर रहे थे। अकेला अँधेरे कमरे में बैठा जो कुछ सोच रहा था उन भावों को लिखने की शक्ति इस लेखनी में कहां!

* * * * *

घास के खेत में काम करना कठिन है। वर्षा के बाद मच्छरों की बहुतायत हो गई है। इस समय, दोपहर को, हवा भी बन्द है। दोनों हाथों से या तो काम करें या मच्छर हटायें। इधर से हाथ हटाओ तो उधर काटते हैं। मतलब यह कि काम करने वालों का आज नाक में दम था।

हम दो आदमी भाग्यशाली थे—एक तो मैं और दूसरा मेरा साथी। हमारा काम घास की मेंड़ बांध कर उसके पुंज बनाना था। इसलिये हम दोनों ज़मीन से कई फुट ऊंचे रहते थे, और ज्यों ज्यों घास आती जाती थी, त्यों त्यों ऊंचे होते जाते थे। इससे मच्छरों से बहुत कुछ रक्षा होती थी।

घास के पुंज बनाने के लिये जो मशीन रहती है उसके ए आदमी दरकार होते हैं। एक आदमी कटी हुई घास को इकट्ठा करता जाता है—हाथ से नहीं मशीन से। दो अन्य दूसरी मशीनों से उस कटी हुई घास को लाकर एक बड़ी मशीन के दांतों के आगे रखते जाते हैं। ये दांत लकड़ी के डेढ़ डेढ़ गज़ लम्बे होते हैं। जब काफी घास उन दांतों में अट जाती है, तब एक आदमी दूसरी तरफ़ से घोड़े को हांक देता है। घास उन दांतों पर ऊपर उठती हुई चली आती है। ज़मीन से कोई पांच गज़ ऊंचे जाकर ये दांत पीछे की ओर दुलक पड़ते हैं। घोड़े को रोक लेते हैं। सारी घास पीछे गिर जाती है। घोड़े को वापिस हांक लेते हैं। इस तरह मशीन घास को पीछे की ओर फेंकती जाती है। वहां से

ठीक ठीक लिखने का है मेरा यह मतलब हरगिज़ नहीं कि वैष्णव-विचार के विद्यार्थी अमरीका न जावें। आख़िर मुझे खाने को मिलता ही रहा, और अमरीकावाले सिर्फ़ मांस ही थोड़े खाते हैं। शाक तरकारी सब जगह मिल जाती है। इससे केवल आप यह देख सकेंगे कि निर्धन भारतीय विद्यार्थी को अमरीका जाकर कितना आत्म त्याग करना पड़ता है। आपानी विद्यार्थी के लिए ऐसी कठिनाइयां नहीं हैं। वे जहां जाय वहां उनको चावल, मांस और मछली मिल सकती है।

इस लिखने से एक अभिप्राय और भी है। विदेशयात्रा का दरवाज़ा खुला हुआ है। सैकड़ों विद्यार्थी अन्य देशों में जाकर अपना तन, मन, धन लगा कर करते हैं। परन्तु जब ये वापस लौटते हैं तब आप उनसे प्रायश्चित्त करने को कहते हैं। भला जो लोग अमीर हैं वे तो आप के डर से काशी के किसी महामहोपाध्यायजी को बुलाते हैं; आप को खुश करने के लिये दो तीन सौ ब्राह्मणों की तो पेट पूजा कराते हैं; तिस पर भी किसी न किसी बिरादरी वाले की मूर्खता से उन बेचारों की फ़ज़ीहत ही होती है। परन्तु यदि आप किसी मेरे समान विद्यार्थी को जिसने सब के साथ बैठ कर खाया है—यद्यपि मांस नहीं खाया—वापिस आने पर, प्रायश्चित करने को कहें तो वह बेचारा बे मौत ही मरा। न तो उस गरीब के पास इतना रुपया ही है जो शास्त्री महाराज की अगवानी कर सकें; न ब्राह्मणों की दक्षिणा के लिए धन ही है। तो मेरे सदृश लोग तो आप के विचार में अशुद्ध ही रहे। मर मर के अमरीका पहुँचे, वहाँ जाकर सैकड़ों कष्ट उठा कर कुछ सीखा। वह भी किस लिए? अपने पेट की ख़ातिर नहीं, उसका पालन तो अच्छी तरह स्वदेश

ही हो सकता था, बल्कि आप की और आप के सन्तानों की भलाई के लिए। अब ठीक राह पर चलने आये तब आप ने यह पाखण्ड खड़ा किया—"अशुद्ध है, अशुद्ध है" और शुद्ध करने का ठेका लिया है उन लोगों ने जिनका अपना निज का जीवन भी शुद्ध नहीं है। पाठक, मैं आप से हाथ जोड़ कर पूछता हूं कि क्या यही न्याय है? क्या इन्हीं बातों से देश का उद्धार होगा!

परमात्मा हमारा सब का पिता है। उसी की आज्ञा पालन करने के लिये हम लोग देश-विदेश घूमते हैं और मातृभूमि की सेवा के लिये तत्पर रहते हैं। केवल परमात्मा की आज्ञा-उल्लंघन करने से हम लोग अशुद्ध हो सकते हैं, और उसी की उपासना करने से शुद्ध भी हो सकते हैं। मनुष्य की क्या ताकत है जो हमको अशुद्ध से शुद्ध कर सके। जो आप ही मलिन है वह किसी को शुद्ध क्या करेगा। इसलिये हे भारतीय युवको! यदि किसी उच्च उद्देश्य को सामने रख कर आप ने परदेश-गमन किया है और यहां आकर उसी के लिए सब कष्ट सहन करते रहे हो, तो परमात्मा के निकट आप शुद्ध हो। निर्भय होकर स्वदेश को लौटो और अपने उद्देश्य की पूर्ति करो।

जनवा झील की सैर

मातःकालीन कामों से फ़ारिग़ हो, कपड़े पहन, मैं तैयार ही हुआ था कि मेरे साथी ने दरवाज़ा खटखटाया। "आप आ" कहकर मैंने झट से दरवाज़ा खोल दिया।

मेरे साथी ने मुसकराकर पूछा—"कहिये आप तय्यार हैं?"

मैं—"बस तय्यार ही हुआ था कि आप आ गये।"

साथी—"अच्छा अब चलिए।"

मेरे साथी का नाम मार्कस है। वह बहुत ही खुश-मिज़ाज, नौजवान है। लम्बा, चौड़ा, हाथ पैर गठीले, चेहरा साफ़, दाढ़ी मूछ सफ़ाचट, उम्र कोई चौबीस बरस। आप जब उसे देखेंगे उसके चेहरे पर मुसकराहट पायेंगे। यों तो अमरीका-निवासी स्वभाव ही से हंसमुख होते हैं, और हंसी दिल्लगी बहुत पसन्द करते हैं; परन्तु मार्कस में यह विशेष गुण है कि उससे मिलते ही आप का चेहरा खिल उठेगा। आप कैसे ही उदास क्यों न हों सब उदासी भूल जायेंगे। मार्कस के पूर्वज स्वीडन से अमरीका आये थे, इसी लिए शरीर से आप बलिष्ठ हैं।

शिकागो-विश्वविद्यालय से आध मील दूर, जैक्सन बाग़ की दूसरी ओर, "एलिवेटर" नामक गाड़ियों की सड़क है। बात चीत करते हुए हम उसके स्टेशन पर पहुंचे। इन गाड़ियों पर चढ़ने वाले चाहे आध मील जाय, चाहे बीस मील, किराया ढाई आने ही देना पड़ता है। अपना किराया

देकर हम ऊपर प्लेटफ़ार्म पर चले गये। प्लेटफ़ार्म पर कई तरह की छोटी छोटी कलें रक्खी हुई थीं, जो सौदा बेच रही थीं। यदि आप को तम्बाकू की ज़रूरत है तो एक पैसा कल के मुंह में डाल दो और नीचे वाले लोहे के डण्डे को दबा दो, आप को तम्बाकू मिल जायगी। इसी तरह बहुत सी चीज़ों के लिये जुदा जुदा छेद थे, जहां पैसा डालने से वह चीज़ निकलती थी। बिना पैसा डाले नहीं मिल सकती थी। भारतवासियों के लिये यह एक अचम्भे की बात होगी।

गड़गड़ करती हुई गाड़ी आ पहुंची। हम लोगों को जगह न मिलने के कारण खड़े रहना पड़ा। इस समय भीड़ होने का कारण यह था कि लोग सबेरे, आठ बजे, दुकानों पर जाते हैं और गाड़ियां केवल दो ही होती हैं। एक में तम्बाकू पीनेवाले, दूसरी में हमारे जैसे बैठते हैं। मगर यह दिक़्क़त कुछ ही मिनटों के लिये होती है। ज्यों ज्यों शहर निकट आता जाता है, डिब्बा ख़ाली होता जाता है।

मैं—"आप तो गरम कोट लेते आये; मैं तो लाया नहीं, पर आज कुछ ऐसी सर्दी भी तो नहीं है।"

मार्टिन—"यहाँ हवा बदलते देर नहीं लगती। और फिर हम लोगों को झील के उस पार जाना है। वापस आते वक़्त ठण्ड पड़ने लगेगी।"

मैं—"तो क्या सर्दी में ठिठुरना होगा?"

मा०—"ठिठुरना क्यों होगा? हम बोट में [illegible] रहेंगे।"

"क्वाई-मण्ट" में पहुँच कर हमने जनवा झील के आस-पास की [illegible] का दृश्य तमाम किया; पता लगा कि गाड़ी के आने में अभी कुछ मिनट की देरी है; पैदल के मुसाफ़िर

वहां पर दूसरे, तीसरे, दिन हजामत ज़रूरी है; और यदि नाई से हजामत कराओ तो १२½ आने के पैसे लगते हैं। इसलिए रोज़ के और ज़रूरी कामों में हजामत भी शामिल है। मार्वेल आज सुबह शीघ्रता के कारण हजामत नहीं कर सके थे।

मा०—"मैं तो नाई की दुकान पर जाता हूं, पर तमाशा देखो।

मैं—"बहुत अच्छा।"

तमाशा क्या था, वही जो बड़े बड़े शहरों में स्टेशनों पर होता है। मुसाफिरखाने में बहुत सा बेंचें रखी हुई थीं, जिन पर स्त्री-पुरुष बैठे थे। भांति भांति की बातें कर रहे थे। कोई कोई अख़बार पढ़ रहा था।

एक बेंच पर चार पांच आदमी खूब हंस हंस बातें कर रहे थे। मैं उनके पीछे वाली बेंच पर बैठ कर उनकी बातें सुनने लगा। एक ने कहा—

"हम रास्ते में बिजली की गाड़ीसे आ रहे थे। एक आयरिश (Irish) हमारे कमरे में जगह न मिलने के कारण दर्वाज़े ही पर खड़ा रहा। थोड़ी देर बाद किराया लेनेवाला कंडक्टर "Conductor" आया। उसने कहा—"आगे साहब"। आयरिश बोला "ग़ज़ब ख़ुदा का! ढाई आने के पैसे भी दिये और घर तक पैदल भी चले!" इस आगे बढ़ने में उसका पैर दूसरे आदमी के पैर पर पड़ गया। वह आदमी बोला—"तुम्हारी आंखें कहां हैं?" आयरिश बोला—"सिर में"। उस आदमी ने कहा—"तो क्या मेरा पैर नहीं देख पड़ता?" आयरिश बोला—"नहीं, तुम जूता जो पहने हो!"

दूसरा आदमी बोला—"हम तुमको एक दिल्लगी सुनायें।"

"रात को हम तमाशा देखने थियेटर में गये। एक यहूदी अपने लड़केको साथ लेकर तमाशा देखने आया। सिर्फ़ अपने लिये टिकट ख़रीद कर लड़के के साथ वह झट अन्दर घुसने लगा। दरवाज़े पर जो टिकट देखने वाला था उसने रोका और कहा कि एक टिकट इस लड़के के लिये भी ख़रीदना होगा। यहूदी बोला, आप यक़ीन कीजिए, लड़का आँख बन्द किये बैठा रहेगा!" यह सुन सब लोग खिलखिला कर हंस दिये।

फिर तीसरा कहने लगा—"मैं कल दोपहर को एक गली से आ रहा था। एक बड़ा सा कुत्ता भौंकता हुआ मेरे पीछे लगा। मैंने पहिले तो समझा कि शायद मिलाना चाहता है, मगर जब वह उछल कर काटने को बढ़ा तब मैं भागा। कुत्ता भी मेरे-पीछे पीछे चला। मैं एक अस्तबल में घुस गया। वहां मेरी नज़र एक लम्बी लकड़ी पर पड़ी जिसके एक तरफ़ लोहे की नोकदार एक कील थी। मैंने आव देखा न ताव, झट लकड़ी उठा ली और नोकदार छोर से कुत्ते के चुभो दिया। इतने में कुत्ते का मालिक भागता हुआ आया और कुत्ते को ज़ख़्मी देख झल्लाकर बोला—किस लिये तुमने कुत्ते को ज़ख़्मी किया?' मैंने कहा—'यह मेरे पीछे भागता हुआ आया था।' वह बोला—'क्यों तुमने लकड़ी के दूसरे सिरे से नहीं हटाया?' मैंने कहा—'क्यों नहीं यह मेरी तरफ़ दूसरे सिरे से (पीछा करके) आया?"

इस टोली का एक एक आदमी इसी तरह हंसी दिल्लगी की बात सुनाता और सब लोग खिलखिला कर हंसते। रेल का समय आ गया। मुसाफ़िर अपना अपना बेग लेकर तैयार हुए। मेरे साथी मार्कस भी आ पहुंचे।

ऊंचे स्वर से एक ध्वनि में जब सब लोगों ने "शिकागो—गो" कहा, तब मुझे बड़ा ही आनन्द आया। कहां यह जीवन और कहां हमारे देश के लोगों का! स्वतन्त्र और स्वच्छन्द; एक ही प्रकार के अधिकार; सब लड़के लड़कियों का इकट्ठे विद्याध्ययन; इकट्ठे ही खेल कूद।

मार्कस के पास उनके एक और साथी आ बैठे; इससे हम लोग तीन आदमी हो गये। कुछ देर तक हम लोग भिन्न भिन्न विषयों पर बात चीत करते रहे। फिर मैंने मार्कस से कहा कि मैं ज़रा गाड़ियों में घूम कर देख आऊं कि और सब लोग क्या कर रहे हैं।

रेल गाड़ियों के डिब्बे यहां हिन्दुस्तान की तरह कबूतर खानों जैसे नहीं होते। बहुत लम्बे चौड़े होते हैं, जिनमें पचास साठ आदमी आसानी से बैठ सकें। उनके बीच में आने जाने का रास्ता रहता है, और एक गाड़ी दूसरी से इस प्रकार जुड़ी रहती है कि एक आदमी सब गाड़ियों में आ जा सकता है।

अधिकांश विद्यार्थियों को मैंने ताश खेलते हुए पाया। चार चार आदमी बीच में मेज़ रख कर व्हिस्ट (Whist) खेल रहे थे। कोई कोई मासिक पुस्तकें पढ़ रहे थे। एक जगह तीन लड़कियां बैठी बातचीत कर रही थीं। उनमें से एक, जिसका नाम "मिस" (कुमारी) हवार्ड था, मुझ से परिचित थी। जिस समय उसने मुझे देखा, बड़े प्रेम से हाथ मिलाये और अपनी एक सहेली से कहा—

"मिस मैना, मिस्टर देव से परिचित हो लीजिये।"

मिस मैना ने मेरे साथ हाथ मिलाया। मैंने कहा—"आप का परिचय पाकर मैं बहुत प्रसन्न हुआ।" इस प्रकार दूसरी मिस पारकर के साथ भी इस प्रकार से मेरा परिचय करवाया।

फिर मिस हवार्ड ने अपनी सहेलियों से कहा—"मिस्टर देव हिन्दुस्तान से यहां विद्याभ्यास के लिये आये हैं। आप और मैं दोनों पिछली गरमियों में एक ही प्रोफेसर (अध्यापक) से वक्तृता का अभ्यास करते थे। मिस्टर देव ने बहुत अच्छे विषयों पर व्याख्यान देकर हम लोगों को अनुगृहीत किया। इनकी और मेरी पहचान तभी से है।"

मैना—"अच्छा, तो आप हिन्दुस्तान के रहने वाले हैं। समझा था आप इटली के निवासी हैं।"

मैं (मुसकराकर)—"बहुधा लोगों ने यहां मुझे इटली ही का निवासी समझा है।"

मिस हवार्ड—"मिस्टर देव, मैंने आपको अपनी सहेली मैना के विषय में कुछ नहीं कहा। आप जान कर प्रसन्न होंगे कि यह रूस की रहने वाली है और रूस में स्वतंत्रता के लिये जो कशमकश हो रही है उसमें ये भी शामिल थीं। अभी एक ही महीना इनको यहां आये हुआ है।"

भला ऐसा कौन मनुष्य होगा जिसे ऐसी देवी के दर्शन कर आह्लाद न हो। स्वतन्त्रता—रूस की स्वतन्त्रता—जैसे पुण्य के काम में जिसने अपने प्राण को बलिदान कर मातृभूमि की दुःख निवृत्ति के लिये जिन्होंने अपने आपको खतरे में डाला हो, हम ऐसे वीरों को नमस्कार करते हैं। मिस हवार्ड के इस कथन पर इस देवी में मेरी श्रद्धा और भी बढ़ गई। मैंने ध्यान पूर्वक उसकी ओर देखा। बीस वर्ष की सुन्दर लड़की हाथ पैर से मज़बूत, गोल चेहरा, बड़ी बड़ी आंखें, कुछ थोड़े लाल बाल कमर से कुछ अधिक, साधारण वस्त्र पहने हुए, मन्द मन्द देशभक्ति का उपदेश दे रही थी।

मैं—"आपने अंग्रेज़ी भाषा का अभ्यास कहां किया था?"

नैना (ज़रा लजाकर)—"मुझे अंगरेज़ी बोलने का अभ्यास बहुत कम है। स्कूल में थोड़ासा अभ्यास किया है।"

मिस एडम्स ने जो अभी तक चुप थी, मुझ से कहा—

"मिस्टर देव, हम लोग यहां हिन्दुस्तान के हालत जानने के बहुत उत्सुक हैं। प्रायः मिशनरियों (पादरियों) से ही समाचार मिलते रहते हैं। आज हमें बहुत अच्छा अवसर मिला है कि आप से ठीक ठीक हालत दरियाफ़ करें। आप बताइए कि क्या सचमुच आप लोग स्त्रियों को क़ैदियों की तरह रखते हैं।"

मैं—"आप अपने प्रश्न को ज़रा स्पष्ट कर दीजिए तो मैं उत्तर दूं।"

एडम्स—"मैंने लेक्चरों (व्याख्यानों) में सुना है और किताबों में पढ़ा है, कि हिन्दू लोग अपनी औरतों को घरों में क़ैदियों की तरह रखते हैं। यदि बाहर जाएं तो मुंह पर पर्दा डाल कर। यदि किसी के घर लड़की पैदा हो तो घर में मातम सा छा जाता है; पुरुष, स्त्री से बात चीत करना छोड़ देता है; और कहता है कि क्यों इसने लड़की पैदा की! बहुतेरे तो लड़कियों को मार भी डालते हैं।"

यह विषय रोचक था और मिस एडम्स ने ज़रा ऊंची आवाज़ से बातचीत की थी, इससे इधर उधर की लड़कियां लड़के पास आकर बैठ गये और उत्तर की आकांक्षा से मेरे मुंह की ओर देखने लगे।

मैं—"इसमें सन्देह नहीं कि हमारे देश में स्त्रियों को ऐसी स्वतन्त्रता नहीं जैसी इस देश में है। हम लोग उन अबलाओं के अधिकारों की तरफ़ बहुत कम ध्यान देते हैं। तिस पर भी हम स्त्रियों को क़ैदियों की तरह नहीं रखते हम उनकी इज़्ज़त

करते हैं और घरों में हमारी मातायें पूरे अधिकार रखती हैं। यह सच है कि बहुत से अनपढ़ मूर्ख लोग हैं और लड़की का पढ़ा होना बुरा समझते हैं, मगर ऐसा सभ्य और शिक्षित लोगों में नहीं है। परदे के कारण भी कई हैं। परदे का रिवाज हिन्दुस्तान में विदेशियों के आने के पहले प्रचलित न था, और अब भी कई प्रान्तों में नहीं है।"

एक लड़की—"हिन्दुओं का धर्म ही ऐसा है जिससे मर्दों की अपेक्षा स्त्रियां नीच समझी जाती हैं। स्त्रियां पति की दुलहिन बनकर रहती हैं; मातायें लड़कियों को गङ्गा में फेंक देती हैं; और यहां तक कि पतिके मर जाने पर स्त्री का सिर मुंड उसे सारी उम्र मातमी लिबास पहनाये रखते हैं।"

ऐसी बातें सुन कर एक लड़की ने धीरे से कहा—"परमात्मा का शुक्र है कि मैं ऐसे मुल्क में पैदा नहीं हुई।"

मैं—"असल में बात यह है कि हिन्दुओं के धर्मानुसार स्त्री पुरुष की अर्द्धांगिनी है। जो धर्म और शास्त्र अच्छी तरह समझते हैं वे स्त्रियों को वैसे ही अधिकार देते हैं, परन्तु हमारे देश में मूर्खता अधिक है। इसी लिये ऐसी ऐसी बातें आप लोगों के सुनने और पढ़ने में आती हैं। हम लोग ऐसी स्वतन्त्रता भी देना नहीं चाहते जैसी इस देश में। आप लोग एक सीमान्त पर हैं और अधिकांश लोग हिन्दुस्तान में दूसरे सीमान्त पर। हम उस रास्ते जाना चाहते हैं जिस पर हमारे पूर्वज चलते थे।"

एकजन—"वह कौन सा?"

मैं—"स्त्री और पुरुष के अधिकार बराबर हैं। स्त्री घर की स्वामिनी है; मनुष्य का अधिकार-स्वातन्त्र्य घर से बाहर

लगता था तब ठीक मालूम होता था। मैंने मार्कस का कोट ओढ़ लिया और अच्छी तरह आराम से बैठ गया। एक विद्यार्थी अपने साथ फ़ोटोग्राफ़ी का कैमरा लाया था। उसने उसी समय सब की तसवीर ले ली।

बारह बजे के बाद हम लोग झील के उस पार, [illegible] नामी गाँव में पहुंचे। अधिकांश लोग वहाँ होटल में खाना खाने चले गये। मैं, मार्कस और तीसरा साथी गाँव के बाहर एक वृक्ष के तले बैठ गये। हमारा तीसरा साथी सामान लाया था वह हम तीनों के लिये काफ़ी था। लोगों ने आनन्द से भोजन किया। लौटते समय रात को खाने के लिये फल और रोटी मोल ले ली।

हमारे देश के गांवों की तरह यहाँ के गांव नहीं हैं। यहाँ के गांवों के मकान बहुत फ़ासले पर सुन्दर और हवादार होते हैं। मकानों के बनाने में अधिकतर लकड़ी से काम लेते हैं। [illegible]नुमा छतें रहती हैं। एक, दो छतों के मकान बनाते हैं। यहाँ, चाहे गरमी हो, चाहे जाड़ा, अन्दर कमरों में लोग सोते हैं। प्रत्येक गांव में स्कूल होता है; टेलीफ़ोन होता है, बिजली की रोशनी का प्रबन्ध भी बहुत जगह है। परन्तु ग़रीब लोग प्रायः मिट्टी का तेल जलाते हैं। ज़मीन से पांच सात फ़ुट ऊँचे मकान होते हैं। मकान में मच्छर मक्खी न घुस सकें इसलिये हर एक खिड़की और दरवाज़े के आगे बारीक जालियाँ लगी रहती हैं। खिड़कियों के दरवाज़ों में शीशे लगे रहते हैं। [illegible] में [illegible] बजे। हम लोगों ने समझा कि वापस जाने का समय हो गया; क्योंकि रास्ते में झील के एक किनारे [illegible] विश्वविद्यालय सम्बन्धी [illegible] (([illegible] जो कर्नल [illegible] के नाम से मशहूर है, देखनी थी। अतएव

मतलब इस यात्रा का यही था। इसलिये सब लोग झटपट अग्निबोट में आगये।

ढाई बजे के क़रीब अग्निबोट यर्कस यन्त्रालय के सामने पहुंच गया। विश्वविद्यालय के अधिकारियों ने लाखों रुपये इमारत तथा दूसरे सामान के लिए इस लिये ख़र्च किये हैं, जिसमें ज्योतिष विद्या के प्रेमी छात्र और आचार्य्य अपनी रुचि के अनुसार इस विद्या से लाभ उठा सकें। एक ऊंची पहाड़ी के ऊपर इस शाला की बहुत विशाल इमारत बनाई गई है। उसके तीन ओर गुम्बज़ हैं। एक ओर के बड़े गुम्बज़ में संसार में शायद सब से बड़ी दूरबीन रक्खी है। दूसरे दो गुम्बज़ों पर छोटी छोटी दूरबीनें हैं।

अब और विद्यार्थियों के साथ मैं उस बड़े गुम्बज़ में पहुंचा, जहां वह दीर्घकाय दूरबीन रक्खी थी, तो मैं आश्चर्य से आंखें फाड़ फाड़ कर उसे देखने लगा। उसके बड़े बड़े चक्र और भाप के बल से उस गुम्बज़ का घूमना, और दूरबीन का भी तारों की गति के अनुसार साथ साथ घूमते जाना, देखने में आता था। जब सब विद्यार्थी गुम्बज़ में इकट्ठे हो गये तब एक आचार्य ने हम लोगों को सब पुर्जा फिरा कर दिखाया। हमें समझाया कि किस तरह तारों की गति तथा अन्यान्य ज्योतिष-सम्बन्धी बातें इस यन्त्र से जानी जाती हैं। सूर्य के ऊपर जो धब्बे दिखाई देते हैं उनके कई फ़ोटो हमें दिखाये। पाठक समझ सकते हैं कि ४० इञ्च के शीशे (Lens) से कैसी अच्छी तरह आचार्य्य लोग यहां अध्ययन का कार्य करते होंगे और जो फ़ोटो उस शीशे के द्वारा ली गई होंगी वे कैसी होंगी। फ़ोटोग्राफ़ी और ज्योतिष विद्या का क्या सम्बन्ध है

इसका महत्व आचार्य्य ने हम लोगों को बहुत ही अच्छी तरह बतलाया।

इसी प्रकार चारों गुम्बजों में विद्यार्थी गये और आचार्यों ने सब के यथायोग्य प्रयोगों का वृत्ता- [illegible] दिखा [illegible]

पाठक हम आप से क्या कहें [illegible] ऐसे ऐसे उपयोगी और लाभदायक [illegible] का अवसर आता है तब तब हम [illegible] निकलता है—"स्वतन्त्र देश [illegible] अमरीका के लोगों को अपनी मानसिक शक्तियों की उन्नति करने का कैसा अच्छा अवसर मिलता है। इस विद्यालय में करोड़ों रुपये लगा कर ज्योतिष का सामान केवल अमरीकन बच्चों के उपकारार्थ रक्खा गया है। जिस किसी को ज्योतिष में रुचि है वह यहां आकर सारी आयु व्यतीत कर सकता है। उसको वज़ीफ़े और हर तरह की सहायता मिलती है, जिसमें वह विज्ञान की वृद्धि करे। एक हमारा देश है जहां करोड़ों आदमी पशुओं की तरह पैदा होते हैं और जन्म भर अविद्या-अन्धकार में पड़े पड़े मर जाते हैं। उनको मनुष्य-जीवन मिलना और न मिलना बराबर है। जो चाहते हैं कि उन्नति कर विद्या पढ़ें, उनको कोई उत्साह देनेवाला नहीं; सामान नहीं; कोई स्थान ऐसा नहीं जहां अपनी शक्तियों का यथायोग्य उपयोग कर सकें।

आचार्य की इच्छा थी कि वह उस बड़ी दूरबीन से सूर्य के धब्बे दिखावे। मगर बदली के कारण हम लोग अपनी यात्रा से पूरा लाभ न उठा सके। इसलिये उसने केवल भिन्न भिन्न यन्त्रों के उपयोग बतलाये। जिन तारागणों को दूरबीन की सहायता से भी अच्छे प्रकार नहीं देख सकते, उनकी फ़ोटो

रोशनी के सामने फ़ोटोग्राफ़ के प्लेट बहुत देर रखने से जो लकीरें उस पर होती हैं उनसे उन तारागणों का बहुत कुछ हाल मालुम हो जाता है। ज्योतिष-विद्या सम्बन्धी जो जो प्रश्न विद्यार्थियों ने किये उन सबका आचार्य्य ने सन्तोषजनक उत्तर दिया। इस देखने भालने में हमारे तीन घण्टे खर्च हो गये।

भोजन का समय हो जाने के कारण सब लोगों ने ब्यालू की। हमने भी केले और रोटी से पेट भरा। इसके बाद वहां के ज्योतिष-पुस्तकालय को देखा। वहां तारागणों के कितने ही नक़्शे हैं। सूर्य्य-ग्रहण के बहुत बड़े बड़े फ़ोटोग्राफ़ हैं। अनेक प्रकार के फ़ोटोग्राफ़ वहां देखने में आये।

अग्निबोट ने सीटी दी और हम लोगों ने समझा कि वापस जाने का समय हो गया। सब लोग समय पर अग्निबोट में आ गये। ठीक सन्ध्या हो जाने पर हम लोग रेल के स्टेशन पर पहुंचे। शिकागो की गाड़ी खुली और दस बजे रात को हम लोग शिकागो पहुंच गये। स्टेशन पर विद्यार्थियों ने फिर "शिकागो-गो" की ध्वनि की। मार्कस और मैं विश्वविद्यालय की ओर चले।

मार्कस ने मेरा हाथ अपने हाथ में दबाकर कहा—"क्यों सैर का आनन्द आया?"

"आनन्द तो आया, मगर एक कसर रह गई।"

"वह क्या?"

"उस बड़ी दुरबीन से सूर्य्य के धब्बे न देख सके। बदली ने काम ख़राब कर दिया।"

"ख़ैर, फिर कभी सही। झील जनवा दूर तो है ही नहीं।"

"फिर, क्या रोज़ रोज़ आना थोड़े ही होगा।"

"यह क्यों ! दो ही डालर खर्च हुए हैं न। आधा डालर भोजन का समझ लो।"

"हर वक़ थोड़े ही प्रोफ़ेसर इस प्रकार बतलाने को तैयार होगा।"

"हाँ, गरमियों में एक दिन फिर बहुत से विद्यार्थी आवेंगे। हर तीसरे महीने एक बार प्रोफ़ेसर मोलटन विद्यार्थियों को वहाँ भेजते हैं।"

"अच्छा, देखो यदि मैं गरमियों में शिकागो में रहा तो अवश्य ही एक दफ़े फिर आऊँगा।"

"मैं तो इस बार गरमियों में बाहर स्टीरिवारकोप के लिये बेचने मनोसोटा जाऊंगा।"

"सचमुच ?"

"ज़रूर।"

"तीन महीने में कितना कमाने की आशा रखते हो ?"

"कह नहीं सकता। कम से कम सात आठ सौ रुपये से कम क्या कमाऊंगा।"

"आप अमरीकन लोग रुपया कमाने में बड़े चतुर हैं।"

"यह पहिली बात है जो हमारे मा बाप लड़के लड़कियों को सिखाते हैं। अमरीकन कहीं चला जाय, भूखा नहीं मरेगा। कोई न कोई काम कर ही लेगा।"

"हमारे देश में तेली का बेटा तेली और बाबू का बाबू बनने की कोशिश करता है।"

"सभी यहां के लोग भूखों मरते हैं। यहां शिकागो के एक करोड़पति का लड़का भी एक कारखाने में काम करता है और १५० रुपये महीना कमाता है। सिर्फ़ इसलिये कि बाप

के रुपये के ऊपर अवलम्ब करना ठीक नहीं। मुमकिन है बाप कंगाल हो जाय या कोई और आपत्ति आ जाय।"

"इसमें शक नहीं। मैं इन बातों का मूल्य अब अच्छी तरह समझा हूं। हमारे देश में दस दस बीस बीस बरस हज़ारों रुपये खर्च करके हम लोग स्कूल और कालेजों में पढ़ते और परीक्षा पास करते हैं, और बाद में जगह जगह जूतियां चटकानी पड़ती हैं।"

"यहां हमारे ही विश्वविद्यालय में आप लड़कों को देखें। उनके हाथ देखने से साफ़ मालूम हो जायगा कि इन लोगों ने मेहनत मज़दूरी की है। क्यों? इसलिए कि हर अमरीकन लड़के का सिद्धान्त है—"To lead an independent life"—(स्वतन्त्र जीवन व्यतीत करना)। यदि कोई और काम न मिले, तो मज़दूरी ही करके ६ रुपये रोज़ कमा लेना।"

"एक हमारा देश है जहां मज़दूरी करने वाले नीच जाति में गिने जाते हैं, और उनके साथ उठना बैठना, मिलना जुलना लोग बुरा समझते हैं।"

"आप लोगों की नस नस में "Aristocracy" (महापुरुषता) भरी है।"

मैं चुप हो गया। हमारी नस नस में Aristocracy (महापुरुषता) भरी है, क्या यह सच नहीं है? सच है। किस घृणा की दृष्टि से तेली, चमार, लोहार, धोबी, मोची, आदि लोग देखे जाते हैं। किसी के बाप-दादे ने कलाल का काम किया तो उसका सारा वंश निन्दित हो गया और उनकी लिए बिरादरी बन्द हो गई। इसी प्रकार सब के जुदा जुदा पेशे हो

"बस इसको पक्का समझिए। पांच को हम लोग सियेटल चलेंगे।"

बेचारे उदयराम काम-काज की भीड़ में पांच को भी तैयार न हो सके। मैंने पांच की सुबह को अपने मित्र बिहारी लाल को तार द्वारा सूचना दे दी कि मैं रात के स्टीमर सियेटल आता हूं।

उदयराम जी लुधियाना (पञ्जाब) के रहने वाले हैं। जाति के आप ब्राह्मण हैं। केनेडा आये हुये आपको चार वर्ष होगये। आपका कारोबार बहुत अच्छा चलता है। एक दुकान है, कुछ ठेका है, ज़मीन ख़रीदी हुई है। 'सर्वे गुणा काञ्चनमाश्रयन्ति' यह इनका परम सिद्धान्त है। यदि सोचें तो इस ... भी ठीक। ईश्वर की दया से आपने अच्छा रुपया पैदा किया है, और दिन प्रतिदिन कर रहे हैं। सब काम अकेले ही देखना पड़ता है, इसलिये फ़ुरसत कम रहती है।

अपने एक दूसरे मित्र मुंशीराम जी को साथ ले सियेटल की तैयारी की। मुंशीराम भी पञ्जाबी हैं और इधर वेंकोवर में ही मेरी इनसे भेंट हुई है। आदमी साधु और शान्तस्वभाव होने से सर्व-प्रिय हैं। आपसे मेरा घना सम्बन्ध हो गया है।

रात के साढ़े नौ बजे के करीब हम लोग केनेडियन पेसेफ़िक कम्पनी के Wharf पर पहुंचे। युनाइटेड स्टेटस अमरीका का परदेश-गमन सम्बन्धीय जो दफ़्तर वेंकोवर में है वहां से हमने ज़रूरी कागज़ ले लिये थे, इस लिये स्टीमर पर चढ़ने में कोई दिक्कत न हुई। पन्द्रह रुपये आने आने के फ़ी आदमी लगे। क्योंकि हम लोगों ने वापिसी टिकट लेने में किफ़ायत देखी।

मुंशीराम ने मुझ से कहा कि एक बात मैं भी पूछ... मैंने कहा, पूछिये। उस कैनेडियन से उन्होंने कहा—

"क्यों जनाब, आप लोग इतनी जल्दी इस... बसाने की फ़िक्र में क्यों हैं? इतनी जल्दी क्या... बाहर से लोगों को बुला बुला कर देश आबाद करने... फ़िक्र हो रही है?"

यह प्रश्न सुन कर कैनेडियन मुसकराया और बोला—

"आप लोग हिन्दुस्तान से आते हैं न, इसी लिए... सवाल है। वह भूखा मुल्क है। आबादी ज़ियादा है... छोटा है, तिस पर खेती के साइन्टिफ़िक तरीक़े लोग... जानते। इल्म हुनर की तरक्की उस देश में नहीं है; ...निक तरीकों से लोग वाक़िफ़ नहीं हैं। इसके... खाने को बहुत है। बहुत ही उपजाऊ भूमि है, आबादी... है। आप सोचें कि देश की सम्पत्ति बिना मेहनत के... बढ़ सकती। करोड़ों एकड़ ज़मीन जो खाली पड़ी... कुछ भी देश को फ़ायदा नहीं पहुंचाती। यदि लोग... उनके द्वारा आमदनी की सूरतें निकलेंगी। हमलोग बड़े... कारखाने खोल सकेंगे; हमारी चीज़ें सब दुनिया में... आयेंगी; रुपया आवेगा; देश मालदार होगा, वह बड़ी... हो जायेगी। आज यदि हमारा सम्बन्ध इंगिलस्तान से... जावे तो यूनाइटेड-स्टेटस कैनेडा को अपने साथ मिला ले। हमलोग अमरीकनों का मुक़ाबिला नहीं कर सकते। एक... हमारे पास धनाभाव से जहाज़ (जङ्गी) नहीं, दूसरे... आबादी थोड़ी है, इतने सिपाही कहां से आवेंगे।... हमलोगों को अपने देश की आबादी बढ़ाकर धनी

का समय तुमको मालूम नहीं था तो टेलीफोन करके और ठीक समय पर आते।"

मुंशी०—(हँस कर) "बिहारीलाल का प्रेम कैसे होता।"

बिहारी०—"हां बेशक, मेरा प्रेम कैसे ज़ाहिर होता।"

मैं—"अच्छा चलो प्रेमी अब प्रदर्शिनी दिखलाओ।"

हँसी ठट्ठा करते हम तीनों जने थर्ड ऐवन्यू पर आये, से प्रदर्शिनी की गाड़ी मिलती थी। रास्ते में जगह पर हमने ये इश्तिहार मोटे अक्षरों में लिखे देखे।
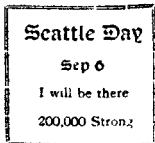
> Seattle Day
>
> Sep 6
>
> I will be there
>
> 200,000 Strong

मैंने बिहारीलाल से पूछा कि इससे क्या बिहारीलाल ने बतलाना शुरू किया—

"जब से प्रदर्शिनी खुली है तब से तरह तरह के दिन नियत किये जाते हैं। आप जानते हैं कि पहिली जून से अक्टूबर तक साढ़े चार महीने प्रदर्शिनी में रहना है। चार महीने कैसे गुज़रें? उनको गुज़ारने का ऐसा ढंग चाहिये कि सब प्रकार के लोग आकर्षित हों और न ऊबें। इसी लिये ऐसे ऐसे दिन नियत किये गये हैं

(Grocer's Day) बनियों का दिन । उस रोज़ सारे शहर के बनिये आवेंगे । (Japanese Day) जापानियों का दिन ; उस रोज़ पेसेफिक के किनारे जो रियासतें हैं, वहां बसने वाले सभी जापानी आवेंगे । (Farmer's Day) किसानों का दिन ; सारे किसान उस रोज़ इकट्ठे होंगे और प्रदर्शिनी का आनन्द लेंगे । आज सिएटलवालों का दिन है । यह विज्ञापन प्रत्येक सिएटल निवासी को कहता है कि मेले में आज दो लाख से कम आदमी किसी सूरत में भी न हों । सभी को जाना चाहिये ; इसी में सिएटल की नाक रहती है । इसलिये देखो, पाँच पाँच मिनट बाद बिजली की गाड़ियां खचाखच भरी हुई प्रदर्शिनी को भाग रही हैं ।"

मैं—(खिले चेहरे से) "शाबाश ! अब तो तुम होशियार होते जाते हो बिहारीलाल !"

बिहारी०—(हँसकर) "यूनीवर्सिटी में पढ़कर भी होशियार न हूंगा तो कैसे हूंगा ।"

मुंशी०—(बिहारीलाल की पीठ ठोक कर 'खूब' पर सावधान रहना, कभी बहुत से सवाल जवाब होने न प्रदर्शिनी का लेने दो ।"

बिहारी०—"मैं तैयार हूं ।"

इस प्रकार बातें करते हुए गाड़ी में चढ़ गये ।

'प्रदर्शिनी, प्रदर्शिनी' आख़िर हम प्रदर्शिनीके सामने पहुंच गये । दो बड़े बड़े स्तूपों के दरम्यान रंग-बिरंगी झंडियां सब से पहिले देखने में आईं । ये अमरीका, जापान, इंगलिस्तान आदि स्वतन्त्र देशों के कौमी झण्डे थे । उन झण्डे के नीचे मोटे अक्षरों में (Seattle Day) 'सिएटल का दिन' लहरा रहा था ।

सब से पहले हम लोग पे स्ट्रीट * की ओर गये क्योंकि खुब बड़े हुल्लड़ में इमारतों के देखने का मज़ा नहीं आता। यहां सब चीज़ें आराम से देखने वाली होती हैं। दर्शक लोग पहले पहल इमारतों पर ही टूटेंगे, इसलिए हम लोग पे स्ट्रीट की ओर चले।

कैसा मनोहर दृश्य था! छोटी छोटी क्यारियों में बिजली का (रोशनीवाले bulbs) बड़ी तरतीब से लगाये गये थे। यद्यपि इस समय दिन था, बिजली की रोशनी नहीं थी, पर उनकी सजावट शोभायमान थी। छोटे छोटे वृक्षों में फलों की भांति बिजली के दीपक लटक रहे थे। 'रात को यह दीप क्याही सुन्दर लगेंगे' यह मैंने मुंशीराम से कहा। मुन्शीराम बेचारे हैरान थे। उन्होंने कभी कोई प्रदर्शिनी नहीं देखी थी।

ख़ैर, हमलोग पेस्ट्रीट में पहुंचे। लोगों का धन हरने को यहां भांति भांति के तमाशे रचे हुए थे। एक बहुत बड़ा चक्र, जिसमें पंघूड़े लटकते थे, दर्शकों को बहुत ऊंचा ले जाता और प्रदर्शिनी का नज़ारा दिखलाता था। इसके दस आने देने पड़ते थे। जापानियों और चीनियों का बाज़ार देखने में आया। यहां चीन, जापान से भांति भांति की कारीगरी की चीज़ें बिक्री के लिये मौजूद थीं। अन्दर ही अपनी अपनी रंग-शालाएं भी बनाई हुई थीं, जहां खेल होते थे।

अमरीकन लोगों ने धन कमाने के हेतु तरह तरह के स्वांग रचे हुए थे। एक जगह (Scenic Alaska) अलास्काके दृश्य नामी इमारत के अन्दर पांच चार घेरेदार नहरें थीं, जिनका पानी एक चक्र के ज़ोर से बह रहा था [illegible] नौका

* The Street [illegible]

में पांच चार दर्शक बैठ जाते थे। किश्ती इन घेरों
रखी थी। शहर के इर्द गिर्द दीवारों पर
हिम-पर्वती दृश्य बनाये हुए थे। बस इसी के
सेते थे। एक जगह रूस, अलास्का, न्यूफ़ौंडलैंड
एस्कीमो इकट्ठे किये हुए थे; उनकी झोपड़ियां
सहन का ढंग दिखलाती थीं। दूसरी जगह
से इगोरो लाकर रक्खे हुए थे। इगोरो उन द्वीपों की
जाति का नाम है जो नंगे रहते हैं और कुत्ते
हैं। इस प्रकार यह सब तमाशे के तौर पर यहाँ
निस्सन्देह यहां के लोगों को यह बहुत अजीब मालूम
पर हमलोगों को इन सब जंगली जातियों का
अच्छा न लगा।

पेस्पौंट में यों तो बहुत सी जगह लोग अपना पैसा
कर ईश्वर लेखते थे, पर हमलोगों ने डेढ़ रुपया
जगह से ही सारा आनन्द लूट लिया। यह
मेरीमेक का जल युद्ध था। इस जल-युद्ध का
प्रकार है—

१८६० में जब यूनाइटेड स्टेट्स की उत्तरीय और
दक्षिण रियासतों में हब्शियों की गुलामी के झगड़े के
घोर संग्राम प्रारम्भ हुआ तब उत्तरीय रियासतों ने
रियासतों का जल-मार्ग बन्द कर दिया ताकि उनको
कोई सहायता न पहुँच सके। इस युद्ध में दक्षिणीय
की गवर्नमेंट की तरफ़ से मेरीमेक नाम का एक
जंगी जहाज़ बनाया गया था। इस जहाज़ ने एक ही
युद्ध में शत्रुओं के अनेक जहाज़ नष्ट कर दिये। [illegible]
थे, क्योंकि मेरीमेक अपने ढंग का लोहे का पहिला

था। अब तक लकड़ियों के ही जहाज़ों से युद्ध होता था। इस मेरीमेक के बनने की ख़बर उत्तरवालों को भी लग गई थी। उन्होंने मानीटर बनाना आरम्भ कर दिया था, पर वह ठीक समय पर न पहुँच सका। दूसरे दिन जब मेरीमेक फिर युद्ध करने आया तब अपने मुक़ाबिले में एक छोटे से जंगी जहाज़ को डटा देखा। यह मानीटर था। अब ख़ूब घमासान युद्ध हुआ जिसमें छोटे मानीटर ने अपने शत्रु के ख़ूब दांत खट्टे किये।

बस, इसी युद्ध की नक़ल दिखलाई गई थी। नक़ल क्यों थी, असल थी वैसा ही समुद्र, उसमें वैसे ही चलते हुए जहाज़ फिर वैसे वैसे ही तोपों का चलना, जहाज़ों में आग लगनी, उनका डूब जाना, मेरीमेक का पहले दिन के युद्ध से विजयी लौटना। रात को वैसे ही अन्धेरी, दिन चढ़ना, मानीटर का आना, उसकी मेरीमेक से मुठ-भेड़, दनादन तोपों का छूटना, मानीटर की विजय! यह सब इसी तरह दिखलाया गया। न जाने कैसे किया? यह मेरी समझ में नहीं आया। चलती फिरती तस्वीरों (Moving Pictures) के ढंग पर ही इसकी रचना थी।

हम तीनों जने इस जल-युद्ध को देख अवाक रह गये। यह दृश्य सारी उम्र नहीं भूलेगा। डेढ़ रुपया देकर दिल को तसल्ली हो गई और जाना कि हमने आशा से बहुत अधिक पाया।

सात सेप्टेम्बर को [illegible] के कार्यों [illegible] स हो [illegible] कर वग [illegible] में और [illegible] नी प्रद-र्शिनी [illegible] मानीटर [illegible] के सम्बन्ध

हमारे साथ न आ सके थे और हमलोगों को वैसी आवश्यकता भी न थी।

आज सब बड़ी बड़ी इमारतों के देखने निश्चय किया कि आरम्भ से एक एक इमारत और आज का सारा दिन तथा दस बजे मज़ा लूटें जब चित्त भर आये तब बाहर निकलें।

मुख्य द्वार पर घुसते ही दाहिनी ओर को जाता था वह तो 'पे स्ट्रीट' की गली। ज़रा और बायें दो विशाल भवन थे—एक फ़ाइन आर्टस बिल्डिंग। इन दो भवनों के बीच नाम का एक रम्य स्थान था जहां हरी हरी घास को आलिङ्गन करती थी। इसी के बीच में महात्मा इन का दीर्घकाय बुत खड़ा था। हम लोग पहले 'फ़ाइन भवन' के अन्दर गये।

यह भवन उन सात भवनों में से एक है जो बाद वाशिंगटन-स्टेट यूनिवर्सिटी को मिल जायेगा और यूनिवर्सिटी अथवा केमिस्टरी हाल सजायेगी इस पर स्टेट गवर्नमेंट का छः लाख रुपया ख़र्च हुआ है।

इस भवन के अन्दर फ़ांस, इटली जरमनी, देशों के निपुण चित्रकारों के तैल चित्र रक्खे हुए थे। स्थान था जहां महीनों ख़र्च करने से आनन्द मिल सकता हम लोग एक ही घण्टे में क्या देख सकते थे। एक से बढ़ कर चित्र—पर्वतों और वनों के नज़ारे, नदी और के किनारे, भेड़ों और गायों के बाड़े—सब ओर दर्शकों का मन हरते थे। कहीं सुन्दर रमणियां अपनी भिन्न प्राकृतिक छटा में चित्रकार के गुणों को [illegible]

थीं; कहीं शूर-वीर रण मत्त-वीरों को वीर-रस पान कराते थे, कहीं प्रीतम अपनी प्रियाइस प्रेम-रस चख रहे थे। सभी प्रकार के भाव, सभी प्रकार के जीवन वहां विद्यमान थे। जो जिसको अधिक प्यारा था, जिसको जो दृश्य अधिक भाता था वह उसी के सामने टकटकी लगाये बुत बना हुआ खड़ा था और दिल में कहता था—"काश कि यह चित्र मुझको मिल जाय।"

फाइन आर्टस भवन से निकल हम लोग 'आडिटोरियम' में गये। यह भवन भी पक्की ईंटों का बनाया गया है और इस पर नौ लाख रुपया लागत आई है। यह भी प्रदर्शिनी के बाद वाशिंगटन यूनिवर्सिटी की मिलकियत हो जावेगी। इसमें ढाई हज़ार मनुष्यों के बैठने का स्थान है। दूसरी पक्की इमारतों की तरह यह भी 'अग्नि-संरक्षक' बनाई गई है।

आडिटोरियम से निकल कर हमने मुख्य फाटक वाली सड़क को फिर पकड़ा। 'गुगेट-प्लाज़ा' के आगे उसी सड़क में 'ओलिम्पिक-प्लेस' की क्यारी थी जिसके दाहिनी ओर एलास्का भवन और बाईं ओर 'यूनाइटेड स्टेट्स गवर्नमेंट भवन' थे। गवर्नमेंट भवन की चर्चा दर्शकों में बहुत थी इस लिए हम पहले इसी के अन्दर घुसे।

यह भवन गुम्बद की शकल का था जिसमें गेलरी के ढंग की छतें थीं। पहली छत पर दो भाग थे। एक ओर अमरीकन लोगों की शिक्षा के लिए गवर्नमेंट ने 'लाइट हौस' का नमूना तथा जल-भाग में शत्रुओं से रक्षा के उपाय दिखाये थे। उधर ही अमरीका के बड़े बड़े विख्यात देशभक्तों के चित्र लटकते दिखाई दिये। दूसरी ओर सिक्के बनते और छपते थे। इधर [illegible]

वीरें थीं और गवर्नमेंट के अद्भुत
अच्छी तरह दिखलाई गई थी। एक तरफ़
जहाज़ बनाकर रक्खे हुए थे और उनका मुक़ाबिला
जहाज़ों से किया गया था।

दूसरी छत पर 'युद्ध-विभाग' का सामान था। १७
लेकर आज तक अमरीकन गवर्नमेंट के इस
कुछ देखने योग्य है वह सब सामग्री यहां मौजूद थी।
शताब्दी की तोपें, सिपाहियों की पोशाकें, लड़ाई
सब दर्शकों के शिक्षार्थ बनाकर रक्खे गये थे और
पास आधुनिक तरकों के नमूने पूर्ण रूप से
थे। 'मेयडुर ड्रेडनाट' भी यहां देखने में आया, जो
तैर रहा था। यह सब कुछ अमरीकन गवर्नमेंट ने
प्रजा की आंखें खोलने के लिये किया था। छोटे
अपनी माताओं से भांति भांति के प्रश्न इन दुर्दमनीय
यानों को देख कर करते थे, वे भी इनसे
को अपनी जाति का गौरव विदित कराती थीं। पर
से यही निकलता था—"इन रुद्ररूप मशीनों का
होगा?"

तीसरी छत पर अमरीकन गवर्नमेंट का पोस्ट-आफ़िस
विभाग, न्यायालय-सम्बन्धी सामान तथा शिक्षा-विभाग
सामग्री थी। इनके अतिरिक्त मन को लुभानेवाला एक औ
विभाग था उसको 'मत्स्य-विभाग' कहना अनुचित न है
यहां हर प्रकार की मछलियां देखने में आईं। दीवार से
हुए स्वच्छ शीशों के छोटे छोटे कुण्ड थे जिन पर मोटा शी
लगा हुआ था। मशीनों के द्वारा कुण्डों में पानी आता औ
था। इन्हीं कुण्डों में रंग-बिरंगी मछलियां तैर रही थीं। दे

पर हम तो 'ओरियण्टल' नाम देख कर चौंके थे, समझे थे कि शायद हम अपनी पुण्य भूमि की स्पर्श कर अपने आपको धन्य मानेंगे, पर निराशा विकट हास्य कर निरादर से हमको बाहर निकाल दिया।

अब मेन्युफेक्चरिंग भवन की बारी आई। स्टेट्स के अन्दर जो जो वस्तु कलों कारखानों द्वारा बनती उनकी कम्पनियों ने अपनी अपनी ओर से प्रतिनिधि हुए थे, जो जो अपनी अपनी मेशीनें चला कर दिखलाते थे कि इस प्रकार उनके यहां चीज़ें तैयार होती हैं। यह एक प्रकार से उन कोठीवालों का इश्तिहार था। आदमी, जो प्रदर्शिनी देखने आये, उनको उन पता मालूम होगया। एक जगह कलें रेशम बुन रही थीं, यदि दर्शक रेशमी रूमाल या और कुछ रेशमी कपड़ा ख़रीदना चाहता तो उस पर प्रदर्शिनी तथा ग्राहक का नाम बुन दिया जाता था। बड़े बड़े आरे तथा लकड़ी काटने के अस्त्र, लोहे काटने की मशीनें इत्यादि बहुत कुछ धरा था। एक ओर भांति भांति के मुरब्बे, अचार रक्खे थे, और कम्पनी अपने विज्ञापन बाँटती थी। न्यूयार्क, न्यू कपड़ा बेचनेवाली कम्पनियों की बड़ी बड़ी दूकानों के चित्र दर्शकों को दिखलाये जाते थे और उनसे यह आशा की जाती थी कि वे उक्त कम्पनियों का माल ख़रीदें।

संध्या हो गई। बिजली की रोशनी से प्रदर्शिनी के भवन जगमग जगमग करने लगे। गवर्नमेंट भवन का गुम्बज़ कैसा प्रकाशमान था। इधर उधर ऊपर नीचे सुन्दर कतारों में बिजली देदीप्यमान थी। इन वृक्षों को देखो, विद्युद्दीप कैसी शोभा दे रहे हैं। वह देखो, जलप्रपात के नीचे विद्युत-प्रकाश कैसी

हुआ दिखाता है। सचमुच, प्रदर्शिनी की महिमा रात को ही देखने योग्य है। सड़कों के किनारे छोटे वृक्षकुञ्जों में दिन को जो विद्युद्दीप मुक्ताफल सम बोध होते थे, अब तनिक उनकी छवि निहारो।

विद्युद्दीपों का अकथनीय प्रभाव देखते हुए हम लोग 'रेनीयर विस्टा' की ओर बढ़े चले गये। अभी बहुत सी इमारतें देखनी बाक़ी थीं। कैलेफोरनिया, वाशिंगटन, ओरेगन भवन सब पीछे छोड़ आये थे और बहुत छोटी मोटी इमारतें देखने को थीं, पर दिल में विचार किया कि इतना बहुत है, हमने भर पाया।

'रेनियर विस्टा' की ओर घूमते घामते हम लोग वहां पहुंचे जहां "Capture Balloon' कैदी बैलून' उड़ रहा था। बहुत लोग वहां पर खड़े थे, हम भी खड़े हो गये। एक एक डालर इस गुब्बारे पर चढ़ने का देना पड़ता था और दो पुरुष एक बार बैठ सकते थे। गुब्बारा पृथ्वी से सात सौ गज़ के क़रीब ऊंचा जाता था और बहुत थोड़ी देर ठहर कर नीचे उतर आता था। यह बतलाने की आवश्यकता नहीं है कि यह गुब्बारा मज़बूत तारों से बंधा हुआ था।

एक एक डालर देकर हम दोनों जने भी इसी गुब्बारे के पंजूरे में बैठ गये। झट से गुब्बारा ऊपर उठा। मैंने मज़बूती से पंजूरे का रस्सा पकड़ लिया। तुल्सीराम ने तो आंखें बन्द कर अपना मुंह पंजूरे में छिपाया और कहने लगे—"मैं मरा, मैं मरा।" मैंने कहा—"डरो मत तुल्सीराम ! गिरोगे नहीं।" देखते देखते हम लोग आसमान में बंध गये। मैं कभी आंखें बन्द करता, कभी खोलता था। नीचे देखने को साहस न होता था। फिर जो देखा, क्या देखा ? कुछ नहीं; मन का भ्रम

कारनेगी का शिल्प-विद्यालय ।

It is really astonishing how many of the world's foremost men have begun as manual labourers. The greatest of all, Shakespeare, was a woolcarder; Burns, a ploughman; Columbus, a sailor; Hannibal, a blacksmith; Lincoln, a railsplitter; Grant, a tanner. I know of no better foundation which to ascend than manual labour in youth

—*Andrew Carnegie.*

भारतवर्ष के शिक्षित समाज को शिल्प-विद्यालय की आवश्यकता और उसकी महिमा का अनुभव होने लगा है, यह बड़े सौभाग्य की बात है। देश के युवकों आत्मावलंबन का सबक सिखाने का एक मात्र यही उपाय है। हिन्दू-जाति में जो ऊंच नीच का भेद-भाव है—हाथ से काम करनेवालों पर जो घृणा है—उसको दूर करने का यही सहल तरीक़ा है। देश की भावी सन्तति को रोज़गार में लगाने उनको जाति के हितसाधन के योग्य बनाने का सबसे अच्छा ढङ्ग यही है कि उनको कलाकौशल और यंत्र-विद्या की शिक्षा दी जाय। भारत धनधान्य पूरित देश है। यहाँ किसी वस्तुकी कमी नहीं रही। आनन्द पूर्वक रह सकते [illegible] । हम अपनी सन्तान को आधुनिक [illegible]

हमें प्राकृतिक दुनिया से मुक़ाबिला करना है। सस्ती चीज़ें बनाकर उन्हें भारत में बेचने वाले योरप तथा अमरीका से हमारा सामना है। इसमें जीत उसी की होगी जो प्रतिद्वंद्वियों के समान बुद्धिमान् और कार्य्यपटु होगा। काहिल, अशिक्षित, साम, दाम, दण्ड और भेद को न जानने वाली जाति से यह काम न होगा। जिनका हमें मुक़ाबिला करना है उनके गुण-दोषों की पहचान करनी चाहिये; उनकी सी कार्य्यपटुता सीखनी चाहिये; उनके सदृश दलबद्ध होना चाहिये; उनकी भांति अपने यहां शिल्प-विद्यालय चाहिए और सब से बढ़ कर हाथ से काम करने वालों का आदर करना चाहिए—क्योंकि यही लोग देश की बढ़ाते हैं। इन्हीं के सिर पर स्वजाति का भार है। को टुकड़ा देते हैं। ऐसा करने से देश में आलसियों और बड़ी तोंदवालों की क़दर कम हो जायगी, और जो लोग की कमाई पर चैन उड़ाते हैं उनका ह्रास हो जायगा।

आइए, पाठक! हम आपको अमेरिका के प्रसिद्ध मेलो-शिल्प-विद्यालय का वृत्तान्त सुनायें। हमने उसे अपनी आँखों देखा है। इस वृत्तान्त से अमेरिका की उन्नति के अल्पांश में आपकी समझ में आजायंगे।

अमेरिका की संयुक्त रियासतों की पेंसलवेनिया रियासत में पिट्सबर्ग नामी एक बड़ा भारी शहर है। यहीं पर जगद्-विख्यात धनिक कारनेगी साहब का स्थापित किया हुआ विद्यालय देश के संख्यातीत युवकों को कलाकौशल और यंत्र-विद्या आदि की शिक्षा देता है। कारनेगी के विशाल पुतलीघर भी यहीं पर हैं। उनमें लोहे का काम होता है। यही हम 'लोहा-नरेश' (Steel King) की राजधानी। अपनी इस

है, जिसमें विद्यार्थी कल-पुर्ज़ों को खोल सकें यदि टूट जाय तो उसको फ़ौरन बना सकें; कलों की बाहिरी सब बातें समझ जायं; पुर्ज़ों को जोड़ देने में हो जायँ। यहाँ पर ऐसे लोग भी भरती किये वाणिज्य-विद्यालयों में अध्यापकों का काम करना।

तीसरे स्कूल में मकान बनाने और उनको सजाने का काम सिखाया जाता है। इस स्कूल के लिए एक भारी इमारत तैयार हो रही है। उसके बनजाने पर और बहुत बातों का सुभीता हो जायगा।

चौथे स्कूल में स्त्रियों की शिक्षा का प्रबन्ध है। गृहसम्बन्धी कार्यों की शिक्षा यहां दी जाती है। सीना-पिरोना, भोजन बनाना, गाना, मकान सजाना तथा विज्ञान आदि सभी आवश्यक बातें यहाँ सिखाई जाती हैं। यह चौथा स्कूल विद्या-प्रेमी कारनेगी ने अपनी माता की यादगार में खोला है। अपनी माता से किस को स्नेह नहीं होता? परन्तु बहुत थोड़े ऐसे हैं जो उस स्नेह को अमर करने लिए कोई चिरस्थाई यादगार बनाते हों।

हमने बहुत संक्षेप में इस शिल्प-विद्यालय का वर्णन किया है। हमने अपनी आंखों से इन स्कूलों में विद्यार्थियों को जाकर देखा है, उनको सब काम अपने हाथ करते देख चित्त बहुत प्रसन्न हुआ। जिन्हें इस विद्यालय के विषय में अधिक जानना होवे नीचे लिखे पते पर पत्र-व्यवहार करें—

> *The Registrar,*
> Carnegie Technical Institute,
> Pittsburg, Pa., U. S. A.

वे वहां से विद्यालय का विवरण-पत्र भी गा सकते हैं।

इस स्कूल में दाखिल होनेवाले की उम्र कम से कम सोलह वर्ष की होनी चाहिए। जो रात को आकर पढ़ना चाहें उनकी उम्र अठारह वर्ष से कम न हो। फ़ीस साठ रुपये सालाना दिन के विद्यार्थियों से और पन्द्रह रुपये सालाना रात के छात्रों से ली जाती है। यह फ़ीस पिट्सबर्ग में रहने वाले विद्यार्थियों के लिये है। दूसरे छात्रों से नब्बे रुपये सालाना दिन वाले और इक्कीस रुपये रात वाले विद्यार्थियों से ली जाती है।

भारतवर्ष के स्कूलों से एन्ट्रेंस पास विद्यार्थी सहज ही में यहां भरती हो सकते हैं। जो विद्यार्थी एक साल का खर्च एक हज़ार रुपया वहां लेकर पहुँचे वह सहज ही में बाक़ी साल काम करके पढ़ सकता है, पर विद्यार्थी चतुर, तीक्ष्ण-बुद्धि और मधुर-भाषी हो तो। पिट्सबर्ग में एक वेदान्त सोसाइटी भी है जो हिन्दू छात्रों की सहायता करने में हर प्रकार उद्यत रहती है।

ईश्वर करे भारतवर्ष में भी एक ऐसा ही विद्यालय खुले जिस में ऊंच नीच सभी वर्गों के बालक पढ़ें; हानिकारक बन्धनों की गांठें कटें और देश के बच्चे कला-कौशलों में कुशल होकर भारत की निर्धनता दूर करें।

नीचे ले जायें और वहाँ जाकर उलट दें। फिर खींच कर ऊपर चढ़ा लावें और मशीन के मुँह के दें। यही खच्चरों का काम करने के लिये हम वहाँ थे। विष्णुदास और मैं एक गाड़ी से चिपट गये, दूसरे दो साथी दूसरी से। मैं और विष्णुदास रोते धोते इस चढ़ाई उतराई में लगे रहे। परन्तु दूसरे साथियों ने एक ही बार गाड़ी खींच और अलग खड़े हो गये। मेक्सिकन ने चिल्ला कर काम छोड़ने को कहा। हमने भी छोड़ दिया।

मेक्सिकन (एजन्ट को गाली देकर)—"देखा उसकी यह खच्चरों का काम करने के लिए हमें यहाँ भेजा एक डालर फ़ीस भी ली। बदमाश!"

मैं (हँस कर—"अच्छा, तो अब क्या सलाह है? अपने चार डालर वापस लेंगे।"

मैंने विष्णुदास से कहा कि जाकर मिस्टर जेनिङ्ग्स इस कागज़ पर लिखा लाओ कि यहाँ जेनिङ्ग्स ने कागज़ पर लिख दिया—"ये लोग गाड़ियाँ खींचना चाहते।"

वहाँ से चक्कर लगाते, कबरिस्तान देखते, हम फिर उसी एजन्सी में पहुँचे जाकर कागज़ दिखाए अपनी फ़ीस वापस माँगी। अब फ़ीस भला वे लुटेरे वापिस देने लगे! उलटा हम लोगों को बेवकूफ़ बनाना किया कि तुमने जेनिङ्ग्स के काम का हर्ज किया। मैंने उस कहा कि तुम्हारा हमारा यह इक़रार था कि आसान पक्का काम मिले। इसी पर हमने एक डालर फ़ीस भी दी बड़े झगड़े के बाद यह तै हुआ कि उसने हमको दूसरी

नीचे ले आयें और वहां जाकर उलट दें। फिर खींच कर ऊपर चढ़ा लायें और मशीन के मुंह के आगे दें। यही मज़दूरों का काम करने के लिये हम यहां थे। विष्णुदास और मैं एक गाड़ी से चिपट गये, दूसरे दो साथी दूसरी से। मैं और विष्णुदास तो रोते धोते इस चढ़ाई उतराई में लगे रहे। परन्तु दूसरे साथियों ने एक ही बार गाड़ी खींच और अलग खड़े हो गये। मेक्सिकन ने चिल्ला कर काम छोड़ने को कहा। हमने भी छोड़ दिया।

मेक्सिकन (एजन्ट को गाली देकर)—"देखा यह मज़दूरों का काम करने के लिए हमें यहां भेजा एक डालर फ़ीस भी ली। बदमाश!"

मैं (हंस कर—"अच्छा, तो अब क्या सलाह है? चल अपने चार डालर वापस लेंगे।"

मैंने विष्णुदास से कहा कि जाकर मिस्टर जेनिङ्गस इस काग़ज़ पर लिखा लाओ कि यहां पक्का काम जेनिङ्गस ने काग़ज़ पर लिख दिया—"ये लोग गाड़ियां खींचना चाहते।"

वहां से चक्कर लगाते, क़बरिस्तान देखते, हम लोग फिर उसी एजन्सी में पहुंचे जाकर काग़ज़ दे अपनी फ़ीस वापस मांगी। अब फ़ीस भला ये लुटेरे वापिस देने लगे! उलटा हम लोगों को बेवकूफ़ बनाना किया कि तुमने जेनिङ्गस् के काम का हर्ज किया। मैंने उससे कहा कि तुम्हारा हमारा यह इक़रार था कि आसान और पक्का काम मिले। इसी पर हमने एक डालर फ़ीस भी दी। बड़े झगड़े के बाद यह तै हुआ कि उसने हमको दूसरी जगह

काम करने के लिये भेजा और एक दूसरा काग़ज़ हम लोगों को दिया।

यह काम विश्वविद्यालय के निकट ही मिट्टी काटने का था। फावड़े से मिट्टी काट काट कर गाड़ीमें भरने की नौकरी थी। ठेकेदारी वालों ने हम लोगों से कहा कि अभी तुम लोग यहां आओ और दोपहर को एक बजे काम शुरू करो।

चार डालर देकर हम फंस गये थे, अब पछताने से क्या हो सकता था। दिल में निश्चय हो गया कि ये डालर तो गये। यदि इनके द्वारा एक भी सप्ताह का काम मिल जाय तो हम समझ लें कि गंगा नहाये। जिस खुशी से पहले दिन हम दफ्तरों में फिरते थे वह आज न थी। मेरे साथियों के चेहरे पर उदासी छा रही थी। यही बात उनके मुंह से निकलती थी—"काम न मिलेगा तो क्या होगा?" विष्णुदत्त मुझ से बार बार पूछते—"क्यों, देव, काम न मिलेगा तो कैसे गुजारे लायक रहेंगे?" उनको मैंने समझाया कि धीरज धरो. काम मिल जायगा। मगर उनको यह पता न था कि देव के रहने सहने का भी ठिकाना नहीं है! मकान वाली यदि ज्यादा किराया मांगे तब परेशानी हो। लेकिन मुझे विष्णुदत्त के चार डालरों की बड़ी चिन्ता थी, क्योंकि इस बेचारे ने मेरी ही खातिर से चार डालर देकर यह फीस भरी थी।

और इसी उधेड़बुन में हम दफ्तर आये। ठीक एक बजे जहां जाना था वहां पहुंचे। वहां जाकर [illegible] को ठेकेदारी वालों का काग़ज़ दिखाया। उसने कहा कि आज हमारे पास काम नहीं है। कल सवेरे सात बजे तुम लोग यहां आओ, काम मिल जायगा। पर दिन में

क़ायदे के मुताबिक़ आज मज़दूरी मिलने का दिन था। क्योंकि यहां पर सप्ताह के सप्ताह मज़दूरी मिल जाती है। हम लोग भी मज़दूरों की कतार में खड़े होगये। हमारी बारी आई तो हम लोगों को कार्य्याध्यक्ष ने एक डालर पचपन सेन्ट फी आदमी दिये। अमरीका के क़ानून के मुताबिक़ तो हम लोग पूरे दो डालर के मुस्तहक़ थे. क्योंकि हम लोग साढ़े सात बजे वहां पहुंच गये थे। इससे क्या, टुकड़ा चाहे नौ बजे डाला चाहे दस बजे। हम तीन जने तो हिन्दू थे, इस लिये अपने भारतवर्षीय संस्कारों से पीड़ित होने के कारण एक डालर पचपन सेन्ट ही लेकर चुप रह गये। पर वह मेकिस-कन. जो सब के कतार में था, अपने चेक को देखकर बोला—

मेक्सिकन—"ऐ मिस्टर, क्यों तुम हम लोगों को दो डालर नहीं देते"?

कार्य्याध्यक्ष—"तुम लोगों ने साढ़े नौ बजे काम शुरू किया था"।

मेक्सिकन—"हम लोग साढ़े सात बजे यहां आ गये थे। हम को क्या, चाहे तुम्हारा टुकड़ा दस बजे आवे चाहे बारह बजे।"

कार्य्या॰—"तुमको लेना हो तो लो, नहीं तो न लो।"

मेक्सिकन ने अपना चेक उसको वापस दे दिया। बस अन्यायी ने हम लोगों से कह दिया कि सोमवार को काम पर मत आना और मज़दूरी वाले काग़ज़ की पीठ पर लिख दिया—"They are no good"—अर्थात् ये लोग ठीक काम नहीं करते। चार डालरों के वापस आने की जो थोड़ी बहुत आशा थी उस पर भी इसने पानी फेर दिया।

इस बेइन्साफ़ी का क्या इलाज! साल भर में तीन महीने

के लिये काम मांगते हैं, काम नहीं मिलता। फ़ीस देकर नौकरी ढूंढते हैं, ईमान्दारी से काम करते हैं, दिन काम करवा कर जवाब! मज़दूरी भी पूरी नहीं! डालर मुफ़्त में गये। यह क्यों? क्या इस भूमि पर हमारा कोई अधिकार नहीं है? क्या माता वसुन्धरा भोगों में हमारा हिस्सा नहीं? क्या यह न्याय है कि आदमी बारहों महीने लाखों रुपये पैदाकर आनन्द उड़ावे, दूसरे को विद्याध्ययन के लिये भी धन कमाने का दिया जाय? क्या यह इन्साफ़ है कि एक तो हवागाड़ी पर बैठ कर बेफ़िकरी से दिन काटे और दूसरा खाने के लिये मोहताज घूमे? हे मनुष्य-समाज! इस बेइन्साफ़ी का कुछ ठिकाना है!

इसी प्रकार के प्रश्न मेरे हृदय में उठ रहे थे और मैं धीरे धीरे अपने साथियों के साथ जा रहा था। चलते चलते एक चबूतरे के पास पहुंचे, जहां हम लोग कुछ देर के लिये बैठ गये। विष्णुदासजी को एक डालर दे दिया गया। कुछ देर सुस्ता कर विष्णुदास और तेजसिंह अपने २ रहने की जगह गये। मैं और मथाइयां अपने कमरों की ओर रवाना हुए।

यद्यपि मैं इतना थका हुआ था तथापि रात को बड़ी देर तक मुझे नींद न आई। मनुष्य-समाज के स्वार्थ का भयङ्कर चित्र मुझको कष्ट देता रहा। आदमी दूसरों की पीड़ा समझता है जब खुद उस पर बीतती है। आज की बेइन्साफ़ी के दृश्य ने मुझ पर भेदय असर किया। घण्टों में समाज के अन्याय पर विचार करता रहा। अन्त को मैंने निद्रादेवी के भवन में प्रवेश किया।

कुर्सियों पर बैठे थे; न्यायाधीश की आज्ञानुसार बिजली की बत्तियाँ हटा कर दो मोमबत्तियां जला दी गईं। उनसे धुंधली रोशनी होने लगी। इसी प्रकाश में जज ने कुछ मन्त्र पढ़े और सब लोगों ने घुटने टेक कर उनको दुहराया। इसके बाद जज ने एक प्रतिज्ञा पत्र पढ़ा, जिस पर सब थैन्डू विद्यार्थियों ने हस्ताक्षर किये और हम लोगों ने छड़ियों से पीट कर उनको कमरे से निकाल दिया। वे किसी दूसरे कमरे में बन्द कर दिये गये। यह बात उस संस्कार की भूमिकामात्र थी।

जब अंगरेज़ी विद्यार्थी चले गये तब जज ने तीन कर्मचारी और नियत किये—एक दरबान दूसरा चपरासी, तीसरा मुंशी। दरबान दरवाज़े पर नियत हुआ; चपरासी का काम एक थैन्डू को सभा में लाना निश्चित हुआ; मुंशी का काम जज की आज्ञाओं का पालन करना निश्चित हुआ। अब कारवाई आरम्भ हुई। सब से पहले जापानी का हाथ पकड़ कर चपरासी कमरे से लाया। जब वे दरवाज़े पर पहुंचे तब दरबान ने पूछा—"कौन है?" उत्तर मिला "एक दोस्त।" दरबान उसे जज के पास ले चला और साथ साथ हम लोग उस एक दोस्त की आमद की खुशी का भजन गाने लगे। दरबान ने उसको मुंशी के हवाले किया। मुंशी ने उसको जज के सामने पेश किया।

जज—"तुम कौन हो?"

जापानी—"दोस्त हूं।"

जज—"अच्छा, हाथ मिलाओ तो देखूं दोस्त हो या दुश्मन।"

ज्योंही जापानी ने हाथ मिलाया, जज बोल उठा—"दुश्मन दुश्मन, दूर करो, दूर करो।" हम सब लोग उसी दम छड़ियों

से उसकी पूजा करने लगे। तब उसके एक साथी
शिर पर उस बनैलू के साहस की परीक्षा होने लगी।
मुंशी ने कहा कि एक स्टूल पर खड़े हो। बनैलू
उसकी आँखें रूमाल से बन्द थीं। आज्ञा
से दूसरी कुरसी पर कूदो। वह कूदा तो एक
कुरसी हटा दी। इस प्रकार बनैलू बेवकूफ़ बनाया
दूसरे लोगों ने छड़ी से उसका आदर-सत्कार किया।
बाद उसकी बुद्धि की परीक्षा हुई। उसमें भी उस
की दुर्गति हुई। तब जज ने उसको आज्ञा
व्याख्यान दो। आपाजी ने व्याख्यान में कहा—

"मैं आज से स्नेलहाल का पक्का मेम्बर बनता हूँ।
बनैलू से सभ्य होता हूँ। मैं प्रण करता हूँ कि इस
दूसरे विद्यार्थियों का आज्ञाकारी रहूँगा; उनके दुःख
और सुख में सुख समझूँगा। सदा सभा के
करूँगा और स्नेलहाल के गुण गाऊँगा।"

पाठकों को यह बतलाने की आवश्यकता नहीं
चर देते वक्त भी आपाजी की पीठ पर तड़ातड़
रही थीं*। व्याख्यान के बाद उसको चालीस गज़ के
पर ले जाकर खड़ा किया, जहाँ से वह घुटनों के बल
हुआ जज के चबूतरे के पास पहुँचा। वहां पर एक
और पेन्सिल रक्खी थी; उसमें अपना नाम काग़ज़
लिखा। यह काम ज़रा मुश्किल था। आँखें बन्द, घुटनों
बल चल कर काग़ज़ तलाश करना, ऊपर से छड़ियों

* मैं अपने मित्रों के सूचनार्थ यह बतला देना ज़रूरी समझता हूँ
मैंने किसी को नहीं पीटा। मैं केवल दर्शक बना रहा, क्योंकि मुझे सिर्फ
कारवाई देखनी थी—लेखक

तिहाड़ ! अजीब नज़ारा था । ख़ैर, इसके बाद उसकी आँख खोल दी गईं ; उसका मुँह धोया गया और सब पुराने विद्यार्थियों ने प्रेम से उससे हाथ मिलाये, और उसको अपनाया । यही हाल दूसरे नवीन विद्यार्थियों का भी हुआ । जब सब के प्रवेश-संस्कार हो चुके तब ख़ूब मिठाई उड़ी ।

इसी प्रकार के संस्कार कोलम्बिया, हार्वर्ड आदि विश्वविद्यालयों में भी प्रचलित हैं ; कहीं कोई बात नरम है, कहीं कोई बात गरम । आरगन रियासत के विश्वविद्यालय में नवीन विद्यार्थियों के ज़िम्मे बहुत से काम लगाये जाते हैं । यदि कोई आज्ञा मानने में आगा पीछा करता है तो वह कपड़ों सहित नदी में ढकेल दिया जाता है या नहाने के 'टब' में पकड़ कर डाल दिया जाता है और ऊपर से ठण्डे पानी का नल छोड़ देते हैं । इस प्रकार हर तरह उसे सीधा करते हैं ।

२-विद्यार्थियों के साहित्य-समाज ।

ऊपर जो कुछ हमने लिखा है वह ख़ाली पाठकों की वाक़फ़ियत के लिये समझना चाहिए । आगे हम अधिकांश उन बातों को लिखेंगे जो हमें अमरीका के विद्यार्थियों से सीखनी हैं उनमें से पहिली बात साहित्य-सम्बन्धी है ।

यहां के विश्वविद्यालयों में सभी जगह साहित्य-समाज हैं, उनमें शामिल होकर विद्यार्थी व्याख्यान देना, वाद-विवाद करना, तथा राजनैतिक, धार्मिक आदि विषयों पर विवेचना करना सीखते हैं । हमारे देश में विद्यार्थी राजनैतिक विषयों की चर्चा करने से मना किये जाते हैं ; कालेजों में धार्मिक वाद प्रतिवाद बन्द है, जिसमें किसी का दिल न दुखे । उनको ख़ाली 'फ़ोनोग्राफ़' की तरह रटन्त-विद्या सिखाई जाती है

ति अने आज निरत किये गये। हमने युक्तियों और प्रमाणों से तय किया कि भारतवर्ष में ईसाई पादरी व्यर्थ का धार्मिक झगड़ा खड़ा कर रहे हैं। हिन्दू और मुसलमान दो दल अलग हैं, ईसाई अब एक और दल पैदा करना चाहते हैं। हमने तय किया कि ईसाइयों ही की कृपा से हिन्दू तमाम दुनियाँ में काफिरों 'Heathens' के नाम से मशहूर किये जाते हैं, और यही लोग जातियों में घृणा का बीज बो रहे हैं। आखिर में एक अमरीकन विद्यार्थी ने सिद्ध किया कि पादरियों को घर ही में रह कर यहीं ईसाई धर्म्म का प्रचार करना चाहिये; यहीं उनकी सख़्त ज़रूरत है। प्रतिपक्षियों ने इस बात पर अधिक ज़ोर दिया कि इञ्जील में आज्ञा है कि इस धर्म का प्रचार करो, इसलिये हमारा कर्तव्य है कि हम दूसरे देशों में जाकर ईसाई मत का उपदेश करें। जजों ने फैसला हमारे पक्ष में दिया।

इन साहित्य-समाजों में सभी प्रकार के विषयों पर विचार होता है। भारतवर्ष के विद्यार्थियों को तङ्ग-दिल न रह कर ऐसी ऐसी सभायें खोलनी चाहियें और राजनीतिक धार्मिक, सामाजिक सभी विषयों पर विचार करना चाहिये।

३—विद्यार्थियों के अखबार और पत्रिकायें

प्रत्येक विश्वविद्यालय में विद्यार्थियों द्वारा सम्पादित दैनिक, साप्ताहिक और मासिक पत्र और पत्रिकायें निकलती हैं। सभी विद्यार्थियों को लेख लिखने और कविता करने का अवसर दिया जाता है; उनके उत्साह वर्द्धन के लिए पदक दिये जाते हैं। अच्छी अच्छी कथायें और खोजपूर्ण लेखों के लिए पारितोषिक मिलते हैं। केवल प्रतिष्ठा और मान वृद्धि

के लिए भी विद्यार्थी लेख लिखते हैं।
बड़े बड़े धुरन्धर लिक्खाड़ हैं उन्होंने ऐसी ऐसी ज्ञारा ही पहले लिखना सीखा था। फिर धीरे धीरे करते करते वे प्रसिद्ध लेखक हो गये।

भारतवर्ष में हिन्दी के लेखक नहीं हैं। लेखक कैसे? ज़रा अपने यहां का हाल तो देखिये। हिन्दू कालेज अपने आपको हिन्दुओं का प्रतिनिधि कहता है और यह डींग मारता है कि हम हिन्दुओं तालीम दे रहे हैं। इनके यहां से एक पत्रिका "सेंट्रल कालेज मेगज़ीन" नाम की निकलती है। नाम ठि है; डींग कौमी तालीम की है; परन्तु पत्रिका यह तमाशा देखिए। जब ऐसे ऐसे कौमी कालेजों में की इस तरह चूक हो तो भला हिन्दी-लेखक कहां हो सकते हैं। चाहिए तो यह था कि हिन्दू कालेज की से हिन्दी में पत्रिका निकलती, जिसका सम्पादन विद्यार्थी ही करते। जो विद्यार्थी चार साल क कर हिन्दी-पत्रिका का सम्पादन करते, वे अपनी उम्र में हिन्दी के प्रसिद्ध लेखक बन सकते, पर यहां तो पूजा मंजूर है; हिन्दी बेचारी को कौन पूछे। हां, कालेज के मुखिया कभी कभी अपनी सम्मति हिन्दी के पक्ष में प्रकट कर दिया करते हैं जिससे यह सिद्ध हो कि वे हिन्दी पाती हैं। हिन्दी की जड़ में तेल डालते जाइए और साथ ही अपनी सहानुभूति भी प्रकट करते जाइए। क्या खूब!

४–विद्यार्थियों की कसरतें।

शारीरिक उन्नति का ध्यान अमरीकन विश्वविद्यालयों में

ख़ास तौर से रक्खा जाता है। प्रत्येक विश्वविद्यालय में कसरत के लिये ख़ास ख़ास इमारतें हैं; सिखाने वाले उस्ताद भी मौजूद हैं। विद्यार्थी लोग बड़े शौक़ से कसरत करते हैं। उनके हाथ पैर मज़बूत और बदन खूब चुस्त होते हैं। 'फ़ुटबाल' और 'बेसबाल' यहां के प्रधान खेल हैं। अमरीकन 'फ़ुटबाल' अंगरेज़ी 'फ़ुटबाल' की तरह नहीं खेला जाता। अमरीकन 'फ़ुटबाल' में चोट चपेट लगने का अधिक भय है; कई विद्यार्थियों की जानें हुई गई हैं। अंगरेज़ी 'फ़ुटबाल' में पैर से गेंद को गोल के पार ले जाने का नियम है; अमरीकन 'फ़ुटबाल' में गेंद को हाथ से पकड़ कर दौड़ते हुए जिस प्रकार हो सके उसे ले जाने का नियम है। दूसरी पार्टी का काम है कि उसको रोके और दूसरे गोल के पार पहुंचावे। बस पूरी लड़ाई है। अक्सर विद्यार्थी गुत्थम गुत्था हो जाते हैं। आप खुद ही देख सकते हैं कि इस खेल में कितना ख़तरा है।

'बेसबाल' अंगरेज़ी 'क्रिकेट' की तरह का खेल है। यह सब जगह खेला जाता है। अंगरेज़ी 'क्रिकेट' के ढंग में अदल बदल करके यह खेल अमरीकन बना दिया गया है। तात्पर्य यह कि अमरीका के लोगों ने इन दो खेलों को अपने राष्ट्रीय खेल बना लिया है।

५—विद्यार्थी का धार्मिक-जीवन।

भारतवर्ष के विद्यार्थी समझते होंगे कि अमरीकन विश्व-विद्यालयों में सभी लड़के ईसाई हैं। यह बात नहीं है। ईसाई मत का अमरीका में प्रतिदिन ह्रास हो रहा है। यद्यपि सभी विश्वविद्यालयों में 'यंगमेन-क्रिश्चियन-एसोसियेशन' हैं, और

अब्राहम लिंकन की शतवर्षी

१२ फरवरी, १९०९ शुक्रवार के दिन अमेरीका निवासियों ने अपने पूज्य पुरुष अब्राहम लिंकन का शताब्दिक जन्मोत्सव मनाया। यूनाइटेड स्टेट्स की सभी रियासतों में उस दिन [illegible] लिंकन का यश गाया गया। जहां जहां दलित समाज के भिन्न भिन्न भाग में [illegible] हुए हैं वहां वहां उन्होंने अपने इस देश भूषण के जन्म की वर्षगांठ मनाई और उनके जीवन को स्मरण करते हुए उनके ज्ञान ध्यान का यश किया। यहां पर यह प्रश्न होता है कि इस महात्मा में ऐसे कौन से गुण थे जिनके कारण उनके स्वदेशी उन्हें इतनी पूज्य दृष्टि से देखते हैं, कौन से कारण हैं जो इस महात्मा की ख्याति को प्रतिदिन बढ़ा रहे हैं। इस बात का संक्षिप्त वर्णन करना हम यहां पर उचित समझते हैं।

भगवान् श्रीकृष्ण जी ने गीता में कहा है कि जब मनुष्य-समाज में धर्म की ग्लानि होती है और जब मनुष्य अपनी शक्ति से अपने दुःखों को दूर नहीं कर सकता, तब तब परमात्मा की सज्जनों को शुभ मार्ग और उन्नति का मार्ग बताने के लिये महात्मा जन्म लेते हैं और मनुष्यों का दुःख दूर करते हैं। सभी जातियों पर ऐसी विपद् पड़ती रही है और पड़ती रहेगी। अमरीका वालों पर ऐसी विपद् १८५६ में पड़ी थी। यह विपद् क्या थी, इसको भी संक्षेप में कहे देते हैं।

लिए मैं आज एक ऐसे देश की ललनाओं की जीवनचर्या आपके सामने रखता हूं, जो देश अपनी उन्नति के लिए संसार में विख्यात है। आप कृपा करके उनके कामों का अपनी मां-बहनों के कामों से मुक़ाबला कीजिए। यदि आप को मेरी बातें अच्छी लगें और लाभदायक जान पड़ें, तो जहां जहां आपकी पहुँच हो वहां वहां उनका ज़िक्र कर दीजिएगा। इसी से मैं समझ लूंगा कि मेरा परिश्रम व्यर्थ नहीं गया।

सब से पहले मैं यह बता देना उचित समझता हूं। कि मैं पाश्चात्य सभ्यता का अन्धा भक्त नहीं हूं। जिन्होंने मेरे लेख ध्यानपूर्वक पढ़े हैं वे ज़रूर ही इस बात को जान गये होंगे। हाँ, मैं सत्यप्रिय हूँ। अपने मतलब की कोई बात कहीं हो, उसे ग्रहण करना अपना धर्म समझता हूं। निर्दोष कोई भी जाति नहीं। मैं आप से अमरीका की स्त्रियों के दोष बताऊंगा, कम से कम उन्हें जिनको मैं दोष समझता हूं।

जब मैं भारतवर्ष से अमरीका के लिए चला था तब इस बात के जानने की मुझे बड़ी उत्कण्ठा थी कि अमरीका की स्त्रियां अपने पतियों से कैसा बर्ताव करती हैं; घरों में वे किस प्रकार रहती हैं; इनका आपस का बर्ताव कैसा है; पर एक दिन की मुलाक़ात में आदमी इन सब बातों को किसी तरह नहीं जान सकता।

कारणवश मुझको कुछ महीने मनीला में ठहरना पड़ा। मनीला फिलिपाइन द्वीप का एक बड़ा भारी शहर है; और फिलीपाइन द्वीप अमरीका वालों के अधीन है। इसलिए अमरीकन लोग वहां बहुत हैं। वे भिन्न भिन्न पेशे करते हैं। सौभाग्य से वहां पर मुझे एक बहुत अच्छा मौक़ा एक अमरीकन के साथ रहने का मिल गया। मिस्टर स्काट मनीला-शिक्षा-

विभाग में हेड क्लर्क थे। वेदान्त पर आप की बड़ी श्रद्धा थी। मुझ से उन्हों ने कहा कि आप हमारे ही मकान पर रहें और हमें संस्कृत पढ़ायें। मैंने स्वीकार कर लिया। "एक पन्थ दो काज"। उनकी स्त्री अच्छी सुशिक्षिता थी और एक स्कूल में अध्यापिका थी। कैसा प्रेम मैंने इस पति-पत्नी में देखा। फुरसत के समय दोनों किसी अच्छे लेखक की पुस्तक उठा कर पढ़ा करते और जीवन का आनन्द लेते थे। मेरे लिए यह सब नई बात थी। हमारे देश में तो जिस लड़के का विवाह होने को होता है उसे इसका भी पता नहीं लगता कि जिसके साथ मुझे सारी उम्र काटनी है वह है कैसी? मूर्ख है या शिक्षिता। बाज़ों को तो यह भी पता नहीं लगता कि जिसके साथ विवाह होता है वह स्त्री है या पुरुष। रुपया देकर विवाह करनेवाले कई बेचारे इसी तरह धोखे में आकर रुपया खो बैठे हैं। वाह रे भारत, तेरी अद्भुत महिमा है!

मिस्टर स्काट से थोड़े ही दिनों में मेरा घना सम्बन्ध हो गया। जब उनकी स्त्री गरमियों की छुट्टियों में मनीला से अमरीका जाने लगी तब मुझ से हँसकर कहा—"देव! घर और मिस्टर स्काट की निगरानी आप के सुपुर्द है"। मैंने मुसकरा दिया। फिर उन्होंने पन्द्रह बीस बन्द लिफ़ाफ़े मुझे दिये। उन पर जुदा जुदा तारीखें पड़ी हुई थीं और मिस्टर स्काट का पता लिखा हुआ था। उन्हें देकर स्काट की पत्नी ने कहा—"कृपा करके इन चिट्ठियों को इन तारीखों के अनुसार मेरे पति को दे दीजियेगा। मैंने चिट्ठियां ले लीं और उनकी इच्छानुसार काम किया। चिट्ठियों के देने का कारण था। मनीला से अमरीका जाने में एक महीना लगता है, और एक ही महीना आने में भी। इसलिए चिट्ठी आने में कम से

काम दो महीने लगते। इन दो महीनों में पति को वियोग-दुःख अधिक न सहना पड़े, इसी लिए स्काट की पत्नी ने ये चिट्ठियां दी थीं।

यह केवल एक ही उदाहरण पति-प्रेम का नहीं है। मुझे अपने मित्र द्वारा यहां कई एक अमरीकन गृहस्थों से जान पहिचान हो गई थी। उन कुटुम्बों में भी पति-पत्नी में अपूर्व प्रेम देखकर मुझे बड़ा ही आनन्द हुआ। कारण यह कि स्त्रियां सुशिक्षिता और सुयोग्या हैं।

शिकागो पहुंच मुझे बहुत कुछ देखने भालने का मौका मिला। यहां स्त्रियों की दशा का ज्ञान प्राप्त करने के बहुत अवसर मेरे हाथ लगे। विद्यालय में जो लड़कियां मेरी सहाध्यायिनी थीं उनसे जब जब किसी विषय पर बात चीत करने का अवसर मिला, तबीयत खुश हो गई। गम्भीर से गम्भीर विषय को भी वे समझती हैं। लड़कों की तरह बहुत सी लड़कियां विद्यालय में देखी थीं जिनको अपनी शिक्षा के लिये आप रुपया कमाना पड़ता था। विद्या-प्राप्ति की धुनि में सब तरह के कष्ट सहकर वे डिग्रियां प्राप्त करती हैं।

एक दिन मैं एक लड़की के साथ मिशिगन झील पर सैर करने गया। रास्ते में अनेक विषयों पर बात चीत हुई। हम दोनों झील के किनारे आकर बैठ गये। लड़की का नाम कुमारि [illegible] था। उसने मुझ से पूछा—

"[illegible], आप बताइये कि आप को यह विद्यालय पसन्द आया या नहीं?"

मैं—"ईश्वर से यह चाहता हूं कि [illegible] ऐसे ही विद्यालय हो जायं।"

पड़ी हँसकर—

"आप लोग यत्न करें तो सब कुछ हो सकता है।"

मैं चुप हो रहा। पड़ी ने फिर पूछा—

"आप के यहां लड़कियों के लिये शिक्षा का क्या प्रबन्ध है?"

"अभी नाम मात्र के लिये कहीं स्कूल खुले हैं।"

पड़ी—ठण्डी सांस भर कर—

"जब मैं यह सोचती हूं कि ऐसे भी देश हैं जहां अबलायें बिलकुल ही अविद्यान्धकार में पड़ी हैं तब मुझे महा-शोक होता है। आप जैसे लोग जिस देश में हों वहां ऐसी दशा!"

मैं उत्तर नहीं दे सका मन ही मन मसोस कर रह गया।

कुमारी पड़ी ने यह देख कर कि मुझे अपने देश की दुर्दशा पर दुःख हो रहा है विषय बदल दिया और बोली—

"कल शनिवार है। आप मेरे साथ व्यायामशाला में चलियगा। आप वहां देखेंगे कि यहां की लड़कियां कैसी अच्छी कसरत करती हैं।"

मैंने बड़ी खुशी से कहा—"बहुत बेहतर।"

दूसरे दिन हम दोनों व्यायामशाला देखने गये। समय दोपहर का था। यह व्यायामशाला विद्यालय से कोई पन्द्रह मील दक्षिण है। इस शाला में जो अध्यापिका थी उससे मेरी बहुत अच्छी पहिचान थी, इस लिये मेरे आने से वह बहुत प्रसन्न हुई। उसने मुझे व्यायामशाला अच्छी तरह दिखला दी। जैसा सामान लड़कों के लिये होता है, अधिकांश उसी तरह का लड़कियों के लिये भी था। यद्यपि लड़कियों की कसरत के समय मर्दों के वहां जाने का निषेध है, परन्तु मुझे अध्यापिका ने कुछ फ़ासले पर खड़े होकर देख लेने की

आज्ञा दे दी। एक लड़की, जिसकी उम्र कोई तेरह चौदह वर्ष की होगी, ठीक मेरे सामने खड़ी थी छड़ पर कसरत कर रही थी। उसे कसरत करते देखकर क्या क्या भाव मेरे हृदय में उठे मैं नहीं लिख सकता। जिस देश में कन्याओं के आरोग्य और शारीरिक सुधार का ऐसा अच्छा प्रबन्ध हो उस देश को उन्नति के शिखर पर आरूढ़ होना ही चाहिये।

लड़कियों की बातें जाने दीजिये। अब अमरीका की स्त्रियों का कुछ हाल सुनिए।

अमरीका की स्त्रियों के फुरसत का समय बहुत करके क्लबों में जाता है। यह ज़रूरी नहीं कि इन सभाओं में आने वाली स्त्रियाँ विवाहिता ही हों, क्वाँरी भी होती हैं। प्रत्येक शहर में स्त्रियों के क्लब हैं। क्लबों से मतलब सभाओं अथवा समाजों से है। ये क्लब भिन्न भिन्न उद्देश्यों की सिद्धि के लिये खोली जाती हैं। जैसे शेक्सपीयर-क्लब में केवल शेक्सपीयर के ग्रन्थ पढ़े जाते हैं और उनका मतलब अच्छी तरह समझा जाता है। ब्रौनिङ्ग-क्लब में महाकवि ब्रौनिङ्ग के ग्रंथों का अध्ययन किया जाता है। याद रखिये, यह सब मैं स्त्रियों की क्लबों का ज़िक्र कर रहा हूं। व्यायाम-क्लब में स्त्रियां आकर व्यायाम करती हैं। मातृ-क्लब (Mothers Club) में मातायें अपने लाभ के लिये, समय समय पर, अमरीका के प्रसिद्ध प्रसिद्ध डाक्टरों को बुलाकर उनके व्याख्यान सुनती हैं। व्याख्यानों में बीमारियों के इलाज, बच्चों के पालन पोषण का ढंग, खाने पीने की विधि आदि उपयोगी विषयों की चर्चा रहती है।

एक बार मुझे एक स्त्री समाज में व्याख्यान देने जाना पड़ा। यह समाज विशेष करके [illegible] स्त्रियों का था। [illegible] के दिन दो सौ [illegible] स्त्रियां उपस्थित थीं।

बाद में कुछ काम के लिये थोड़ा देर ठहर गया। जिस दीवान खाने में मैंने व्याख्यान दिया था उसके पास ही बाहर के कमरे में होटेल की तरह का सामान मैंने देखा। मैंने यहां की प्रधान स्त्री से पूछा कि क्या यहां होटेल भी है? उत्तर में वह देवी बोली—"हां, इस स्त्री-समाज की ओर से यहां होटेल भी है, जिसमें निर्धन स्त्रियां थोड़े खर्च से भोजन पाती हैं।" हमारे कोई कोई साधु पाठक शायद कहेंगे कि सदावर्त ही क्यों न खोल दिया जिसमें स्वर्ग जाने का रास्ता और भी सुगम हो जाता। उत्तर में हम निवेदन करेंगे कि अमरीकावासी हमारी तरह मूर्ख नहीं हैं। आप यदि सम्पत्ति शास्त्र पढ़ें तो आपको पता लगे कि जो लाखों करोड़ों रुपये हर साल आप अपने पुण्य-दोषों में सदाव्रत द्वारा खर्च करते हैं वह व्यर्थ जाता है। देश में आलसी हट्टे कट्टे मूर्खों की संख्या बढ़ती है। उसी रुपये से यदि कारखाने खुल ले। हज़ारों आदमियों का पालन हो, और पुण्य के साथ देश-सेवा भी हो। अमरीका के निवासी सम्पत्तिशास्त्र के ज्ञाता हैं। वे आलसी भिखमंगों की वृद्धि करना महापाप समझते हैं।

इलीनाय (Illinois) रियासत में जितने स्त्री-समाज हैं सब की एक प्रधान सभा है। उस सभा में प्रत्येक समाज के प्रतिनिधि रहते हैं। १६०६ के नवम्बर में उसका वार्षिक अधिवेशन शिकागो विश्वविद्यालय में हुआ था। इस सभा के उद्देश्य आदि का संक्षिप्त वर्णन सुन लीजिये—

१—पहला उद्देश्य इस सभा का शिक्षा-सम्बन्धी है। गांव गांव में जो स्कूल रियासत की तरफ से खुले हुए हैं उनकी सहायता यह सभा करती है। वहां की पठन-पाठन-विधि की उन्नति का ध्यान रखती है। जो लोग निर्धनता के कारण थोड़ा

भी ख़र्च अपनी सन्तान की शिक्षा के लिए नहीं कर सकते, सभा उनकी सहायता करती है। जिस गांव में स्कूल तो है, पर अच्छा पुस्तकालय नहीं है, वहां यह सभा पुस्तकालय खोलने का यत्न करती है। १९०५ नवम्बर से १९०६ नवम्बर तक, एक साल में, इस सभा ने ५८ पुस्तकालय खोले थे। क़स्बों में यह सभा ऐसे ऐसे समाज स्थापित करती है जिनके द्वारा बच्चों के माता पिता अपनी सन्तान के हित-साधन का विचार करते हैं।

२—दूसरा उद्देश्य दान सम्बन्धी है। दान का पात्र कौन है? इसका विचार सभा करती है। जिसे दान देना है वह सभा को भेज देता है; सभा उसको उचित और उपयोगी काम में ख़र्च करती है। भारतवर्ष की तरह नहीं, कि लाखों रुपये मन्दिर मसजिदों में फूंक दिये, या किसी पंडे पुजारी की भेंट कर दिये। पाठक आपही कहिये—काशी, प्रयाग और गया के पंडों को जो धन दिया जाता है क्या वह देशोपकार में ख़र्च होता है?

सभा के प्रतिनिधि, समय समय पर रियासत के जेलख़ानों अनाथालयों और दवाख़ानों में जाते हैं। वहां की हालत देखते हैं। क़ैदियों की अवस्था कैसे सुधर सकती है? इसका विचार करते हैं। स्कूलों की ज़रूरत होती है तो क़ैदियों के लिए स्कूल खोलने का प्रबन्ध करते हैं। क़ैदियों के रिश्तेदार यदि दानपात्र हों तो सभा उनकी सहायता करती है।

यदि किसी को नौकरी या रोज़गार की ज़रूरत है तो सभा उसके लिए काम तलाश कर देती है; और जब तक रोज़गार न मिले उसके रहने और खाने पीने का प्रबन्ध करती है।

३—सभा का तीसरा उद्देश पागल, अन्धे, बहरे, मोहताज लोगों के लिए स्कूल स्थापित करना है। उनके रहने के लिए अच्छे इमारतदार मकान शहर शहर में बने हुए हैं। ऐसे मकानों में रहने वालों के आराम का बहुत ख़याल रक्खा जाता है। मान लीजिए कि कोई लङ्गड़ा है, चल फिर नहीं सकता। उस के लिए छोटी छोटी गाड़ियां रक्खी जाती हैं।*

४—चौथा उद्देश इस सभा का अच्छे साहित्य का प्रचार करना है। सभा की ओर से बांटने के लिए छोटी २ सचित्र पुस्तकें छपती हैं। ये मुफ़्त बांटी जाती हैं। सभा के आधीन जितने समाज हैं वे उनको प्रत्येक बालक के हाथ तक पहुंचाने का उपाय करते हैं। ऐसी पुस्तकों में प्रायः रोचक, परन्तु शिक्षाप्रद कथायें रहती हैं।

५—पांचवां उद्देश इस सभा का कला-कौशल की उन्नति करना है। रियासत में जहां कहीं शिल्पकला की वस्तुओं की दुकान होती है, सभा वहां उनके लगवाने का यत्न करती है। जिस बालक या बालिका की प्रवृत्ति कला कौशल की ओर होती है, धन से उसकी सहायता करके सभा उसके उत्साह को बढ़ाती है।

अमरीका की स्त्रियां ऐसे ही काम करती हैं। मैंने केवल उदाहरण के तौर पर इतनी बातें लिखीं। यदि आप वहां की स्त्रियों के सब काम देखें तो आपको भारत की स्त्री जाति की अधोगति का अच्छी तरह अनुभव हो।

---

* शिकागो विश्वविद्यालय के पास एक [illegible] बहुत बड़ा मकान है। वहां लंगड़े लूले रहते हैं। उनके लिए गाड़ियां ऐसी हैं [illegible] हैं कि उन में बैठ कर पुर्ज़े से चलती हैं। इस तरह [illegible] को भी [illegible] जाती है—लेखक।

अब ज़रा ग्रामीण- स्त्रियों का भी हाल सुनिये। शहरों की स्त्रियां तो अपने समय को देश और जाति के उपकार के लिये ख़र्च करती हैं, पर गांवों की स्त्रियां क्या करती हैं? आप को यह जानने की अवश्य ही इच्छा होगी। मुझे ख़ुद इस बात के जानने का बड़ा शौक़ था। कई साल गरमियों में मुझे शिकागो से बाहर दूसरी रियासतों में घूमने का अवसर हाथ लगा। वहां मुझे यह देख कर बड़ा ही आश्चर्य हुआ कि चार पांच सौ की आबादी तक के गांवों में स्त्रियों की सभायें हैं। ये सभायें अपने अपने गांव की ज़रूरतों को दूर करने के इरादे से खोली गई हैं। गाने बजाने के सामान सभी जगह हैं। यहां तक कि गांव में ग़रीब ग़रीब सब के घर में पियानो (Piano) बाजा है। पुस्तकालयों का तो कहना ही क्या है! ग़रीब से ग़रीब के यहां भी पचास साठ उमदा उमदा ग्रन्थ होंगे। शेक्सपियर, जार्ज इलियट, इमरसन आदि साहित्याचार्यों के नाम आप झोपड़ियों तक में सुनेंगे।

अन्त में मैं यहां की स्त्रियों के कुछ दोष भी बतला देना ज़रूरी समझता हूं। सब से बड़ा दोष अमरीका में यह है कि स्त्रियां हद से ज़ियादा स्वतन्त्र हैं। इस का परिणाम यह हो रहा है कि बड़े बड़े शहरों में व्यभिचार बढ़ता जाता है। एक बड़ा भारी सामाजिक दोष अमरीका में नाचना (Dancing-Ball) है। जहां जहां स्त्री और पुरुष मिलकर नाचते हैं कोई न कोई तार दोनों में हो ही जाती है। इस प्रकार आपस में नाचना प्रकृति के नियम विरुद्ध काम करना है। भारतवर्ष में तो अंग-रेज़ हम लोगों को अपने नाच में आने ही नहीं देते, इसलिये हम लोग इसके दोष कम समझते हैं, पर शिकागो में मुझे दो चार बार ऐसे नाचों में जाना पड़ा था। वहां नाचा तो

क्या, आकर बैठे बैठे तमाशा देखा किया। एक बार एक लड़की ने मुझे अपने साथ नाचने के लिये बहुत ज़ोर दिया। कहा—

"नाचना औरतों का काम है। मर्द नहीं नाचा करते।" लड़की खिलखिला कर—

"तो यह सब लड़के आप की समझ में औरतें हैं!"

मैं मुसकरा कर—

"ख़ैर, यह दूसरी बात है।"

जब दो बार नाच हो चुका तब उस लड़की ने फिर मुझ से कहा कि मेरे साथ नाचिए।

मैं—"भला अनजान आदमी कैसे नाच सकता है!"

लड़की—"मैं आप को सिखलाऊंगी।"

मैं हंसकर—"मैं बड़ा ही कुन्दज़हन हूं। कोई चीज़ जल्दी नहीं सीख सकता। आपको व्यर्थ कष्ट होगा।"

बस, पाठक, आप से जो कहना था उसे संक्षेप में मैं कह चुका। अब आप अमरीका की स्त्रियों के कामों का अपने यहां की स्त्रियों के कामों से मुक़ाबला कीजिए। अपने घरों की अमरीका के घरों से तुलना कीजिए। हमारे घर, घर नहीं हैं। हमारी स्त्रियां हमारे हृदय के भावों को नहीं समझ सकतीं। जिन विषयों को हमने स्कूलों और कालिजों में पढ़ा है उनका नाम तक ये नहीं जानतीं। पति बी० ए० है, पत्नी निरक्षर! आप ख़ुद ही सोचें कि अज्ञान में पड़ी हुई हमारी मां-बहनें क्या हमारी उच्चाभिलाषाओं में सहायक हो सकती हैं? हमारा आधा अङ्ग बिलकुल ही लकवा है। यदि आप अपना, अपनी सन्तान का, अपने देश का कुछ भी उपकार करना चाहते हो तो स्त्रियों की शिक्षा आदि का प्रबन्ध कीजिए।

अमरीका की प्रसिद्ध

राजधानी

वाशिङ्गटन शहर

आइये, नई दुनियां के नक्शे में यूनाइटेडस्टेटस-अमरीका को ढूंढ़ें। मिला आप को? बस, यही मैदान का टुकड़ा नई दुनियां का शिरोमणि—संसार का सबसे धनाढ्य सम्पत्तिवान् देश-यूनाइटेड-स्टेटस आफ् अमरिका नाम से प्रख्यात है। आज हमको केवल इसकी राजधानी की सैर करना है। कहां है इसकी राजधानी? न्यूयार्क शहर से २२८ मील दक्षिण-पश्चिम की ओर। न्यूयार्क शहर तो आपको आसानी से मिल जायेगा। इसी के दक्षिण-पश्चिम की ओर देखिये। पहिले फिलेडलफिया फिर बाल्टीमोर, फिर वाशिंगटन दिखाई पड़ेगा। यही यूनाइटेड स्टेटस आफ् अमरीका की प्रसिद्ध राजधानी है। यहीं पर इनका प्रेसीडेन्ट रहता है; अमरीकन जाति के प्रतिनिधि सभा और उस का गढ़ यहीं पर है। आओ, पहिले इसके नाम तथा इतिहास की कथा जानें, फिर सैर करने में अधिक आनन्द आवेगा।

१७७६ में नई दुनियां की तेरह बस्तियों का इंगलिस्तान के साथ झगड़ा आरम्भ हुआ। इस झगड़े का मुख्य कारण इंगलैंड निवासी थे। इन तेरह बस्तियों के निवासी, पहिले

झगड़े रहे, तथा कांग्रेसों द्वारा इङ्गलिस्तान वालों से अपने अधिकार लेने की बहुत कोशिश की. आखिर 'तंग आमद बजंग आमद' वाली कहावत चरितार्थ हुई। इन तेरह बस्तियों का अङ्गरेज़ों से घमासान युद्ध आरम्भ हुआ। यह युद्ध पांच वर्ष तक रहा और अन्त में—

"All goveroments derive their just powers from the consent of the governed."

"राज्य-शासकों को शासन के अधिकार प्रजा की स्वीकृति से मिलते हैं" इस सत्य सिद्धान्त की अक्षरशः जय हुई। तेरह बस्तियां आज़ाद हो गईं। तब से यूनाइटेड-स्टेट्स आफ् अमरीका का नाम संसार की जातियों की लिस्ट में लिखा गया।

इस नये स्वतन्त्र देश की राजधानी कहां होनी चाहिये? यह प्रश्न जाति के लिये बड़े महत्व का था। सभी कोई अपनी अपनी रियासत में राजधानी चुनने की सलाह देते थे। आखिर इस झगड़े का फैसला देशभक्त श्रीमान् जार्ज वाशिङ्गटन पर छोड़ा गया। इस वीर ने अपनी मातृभूमि की निष्काम सेवा की थी; अपना तन, मन, धन अपने प्यारे देश की आज़ादी के लिये कुरबान किया था. अपने रण कौशल से शत्रुओं के दांत खट्टे किये थे, और सब से बढ़कर अपने निष्कलङ्क चरित्र तथा.........देश-प्रेम के कारण अपने देशवासियों से (Father of his country) (अपने देश का पिता) की पूज्य उपाधि प्राप्त की थी। ऐसे सर्वप्रिय पुरुष का फैसला सब को मान्य था। और होता भी क्यों न।

अपने देश बन्धुओं की आज्ञा पाकर देशभक्त जार्ज वाशि-ङ्गटन ने पोटोमक नदी के उत्तर-पूर्वीय भूमि को इस कार्य के

बताये तो मैंने दिल में सोचा कि क्यों समय खोते हो। अपने पास रुपया नहीं है और अगर हो भी तो इससे काम न पटेगा। बेहतर है किसी जानकार के साथ आवेंगे। यह मन में सोच मैंने बाहर जाने का रुख किया। मगर वह बांका जवान कहां जाने देता था। वह बोला—

"आइए साहिब, आपको यह पसन्द नहीं तो दूसरा सूट दिखलाता हूं। यहां हर तरह के सूट हैं।"

उसने यह सब ऐसे ढंग से कहा कि मैं उसके साथ और सूट देखने में लग गया। जब वे सूट मेरे पसन्द न आये और मैंने उससे कहा कि मुझको जाने दो, फिर कभी आकर देखूंगा, तब वह एक अजीब तरीक़े से मुझको अपने साथ ले चला और मीठी २ बातों में उसने लगा लिया। उस समय मैंने सोचा कि आज अमरीका के फेरीवालों तथा दुकानदारों के हथकंडे देखते चलो। पैसा तो बन्दे के पास है ही नहीं। यह सोचता और बातें करता मैं उसके साथ चला ही तो गया।

उस दुकान के दूसरी तरफ़ बहुत सा माल रक्खा था, और वहां भी चालाक गुमाश्ते ग्राहकों का सिर मूड़ने में दक्ष थे उस बांके वीर ने मुझे एक बहुत ही निपुण बेचने वाले के सिपुर्द किया और मेरा परिचय करवा कर कहा कि इनको सूट दिखला दो। मैंने भी चित्त में कहा—"अच्छा धूर्तो! तुम मेरा भी समय खोवोगे और अपना भी।" और वह लगा सूट दिखलाने।

उसने तरह तरह के सूट दिखलाने शुरू किये और लगा बातों में मुझे रिझाने, पर यहां तो जेब ही खाली थी; रीझते तो कैसे रीझते। खाली जेब कोई न कोई उज्र हर में निकाल

ही देते। जब वह सूट दिखाता दिखाता परेशान हो गया तब झुंझला कर बोला—

गुमाश्ता—"आपको कैसा सूट चाहिए। कुछ मुंह से भी तो कहिए।"

मैं (मुसकुराकर)—"खफ़ा न हूजिये हज़रत; मुझे अब जाने दीजिए। मेरी मरज़ी के लायक चीज़ मिलेगी तो दाम देकर ले लूंगा।"

गुमाश्ता—"आप मेरी नौकरी छुटाने तो यहां नहीं आये?"

मैं (ज़रा हैरानी से)—"यह कैसे ?"

गुमाश्ता—"क्यों नहीं ! यदि मैं आपको सूट न बेच सका तो मेरा मालिक समझेगा कि मैं इस काम के लायक नहीं हूं और मुझे निकाल देगा। (नम्रता से) आइए, आप दूसरा सूट देखिये।" फिर वह लगा सूट दिखलाने।

मैंने उससे कहा—"जिस किस्म का मैं सूट चाहता था वैसा सूट दस डालर के दाम का बाहर खिड़कियों में है, पर वैसे सूट के यहां तुम लोग पंद्रह और बीस डालर मांगते हो।" उसने जवाब दिया—

"इस कपड़े और इस कपड़े में फ़रक है।"

अब फ़रक का झगड़ा कौन करे। जब उसने देखा कि वह मुझे कोई सूट बेच नहीं सकता, और कोई भी सूट मेरे पसन्द नहीं आता तब दूसरे दरवाज़े के पास लेजाकर मुझ से गुस्से से बोला—

"अच्छा आइए। अगर आप जैसे दो चार ग्राहक आ जायें तो हमारी दुकानदारी ख़ाक ही में मिल जाय।"

"मैं तो पहले ही जाता था। आप लोगों ने मेरा सर किया और अपना भी।"

बन्द कर नीचे चली गई और मैं फिर अपने काम में लग गया।

* * * * * *

संध्या हो गई थी। गाड़ी के जाने में घण्टा रह गया था। अपने कपड़े बेग में डाल, अपनी सब चीज़ें सम्हाल मैंने चलने की तैयारी की। हाथ में बेग और छाता ले मैं नीचे उतरा। घर की मालकिन नीचे ड्योढ़ी में खड़ी थी। जब उसने मुझे देखा तो हैरान हो बोली--

"आप कहां जा रहे हो? Where are you going?" मैंने अपनी टोपी उतार बड़े अदब से उत्तर दिया--"मैं सियेटल जा रहा हूं--I am going to seattle." गुस्से भरे शब्दों में वह रमणी झुंझलाकर बोली--"आपने आज शाम को फ़ैसला करने को कहा था। You said you were going to seattle this evening"

अब मेरी बारी हैरान होने की थी। मैंने ज़रा ज़ोर से उत्तर दिया--

"नहीं, मैंने कहा था कि मैं आज शाम को सियेटल जाऊंगा--No. I said, I was going to Seattle this evening."

मेरा रास्ता घेर वह रमणी खड़ी होगई और बोली--"आप अपने आपको बड़ा होशियार समझते हैं, परन्तु आप मुझे बेवक़ूफ़ नहीं बना सके--You think you are very smart, but you cant' fool me" मैंने नम्रता से उत्तर दिया--

"क्षमा कीजिये, देवी! मेरा हरगिज़ इरादा आपको धोखा देने का नहीं था। यह भूल केवल मेरे विदेशी उच्चारण के होने के कारण हुई बोध होती है--Pardon me, Lady! I did

not mean to deceive you. I think it is my foreign accent which gave you wrong impression." उस रमणी का क्रोध कुछ शान्त हुआ और वह पीछे हटकर बोली–

"आप से मुझे डेढ़ रुपया वसूल करना था। मगर अब मैं जाने देती हूँ। क्योंकि आप एक अजनबी पुरुष हैं, आप 'सि-पेटल' को 'सेटल' कह सकते हैं।"

इस स्त्री से जान छुड़ा मैं बाहर आया, और सारा रास्ता 'सिपेटल' और 'सेटल' की दिल्लगी पर हंसता रहा।

जो उन्होंने अमेरिका में व्यतीत किया था। पाठक स्वदेश-प्रेम की महिमा कैसी अद्भुत होती है।

अमरीका के प्रधान नगर न्यूयार्क

सेंड (Clifton Staten Island) नामी एक मुहल्ले की एक गली में एक घर है। उसमें इस समय कोई नहीं रहता। दरवाज़े पर संगमरमर की पटिया पर ये शब्द खुदे हैं—

Qui Visse Esule Dal 1851 Al 1853
Ginseppe Garivaldi
L' Eroe Due Mondi
8 Marzo 1884 Alcuni Amici Posero.

यह मकान बनावट में बहुत साधारण है परन्तु एक अद्भुत आकर्षण-शक्ति है। कोई पचास साठ इटली और योरप के भिन्न भिन्न भागों से यात्री लोग मकान देखने आते हैं। यहां महात्मा गैरीबाल्डी ने जीवन के कुछ दिन काटे थे। अतएव उस पवित्रात्मा से यह घर देवालय बन गया है। न्यूयार्क की अट्टालिकायें, भव्य भवन, आश्चर्यजनक बिजली के यात्रियों का ध्यान नहीं खींचते, पर यह बेढंगासा घर मन को मोह लेता है।

गैरीबाल्डी की प्रतिष्ठा और सम्मान केवल योरपवासी नहीं करते, किन्तु अमरीका निवासी भी उनको हैं। उनको "Hero of the Two Worlds" अर्थात् पुरानी दोनों दुनियाओं का वीर कहते हैं। २३ अगस्त को अमरीका की राजधानी वाशिंगटन में जो जलसा, बाल्डी की मूर्त्ति सर्वसाधारण को समर्पण करने के में, हुआ था उसमें यहां के संयुक्त राज्यों की सेनेट के प्रेसीडेंट, ने कहा था—

रक्षा के लिए जो युद्ध उन्होंने किया था, उसमें ये न हुए। बारह वर्ष तक दक्षिणी अमरीका के युद्ध में यशो लाभ करने के बाद अपने देश के शत्रुओं पराहत होना इनके लिए बहुत ही असह्य था। इस वीर ने हिम्मत नहीं हारी। आस्ट्रिया की विजयी का छोटे छोटे युद्ध करके इन्होंने नाकों दम कर दिया। धर्म-पत्नी अनीता (Anita) प्रत्येक युद्ध में पति के रही और अन्त को रेवेना की दलदल में उस वीरांगना प्राणान्त हुआ।

गैरीबाल्डी इटली से भाग कर, १८५० के जून में पहुँचे। न्यूयार्क में उस समय आस्ट्रिया, नेपल्स, रोम, देशोंके बहुत से सज्जन भागकर आये थे, स्वतन्त्रता की उन देशों में प्रज्वलित हो चुकी थी। स्वार्थी राजा बुझाने में अपना सारा बल लगा रहे थे, पर आज़ादी के सेवक अपना तन, मन, धन अर्पण करके उसकी रक्षा में थे। सो न्यूयार्क में गैरीबाल्डी को बहुत से मित्र मिले उनमें से एक का नाम मिकल पेसकाल्डी था। उसी के यहां ठहरे।

उसी के यहां इनकी थियोडोर ड्वाइट से भेंट को गैरीबाल्डी ने अपने जीवन की घटनाओं का सारा बतलाया और तत्सम्बन्धी कागज़ पत्र भी दिये। की अवस्था इस समय ४३ वर्ष की थी। शरीर इनका

आस्ट्रिया के अधीन होकर न ठहिराने गई। १८७१ में फ्रांस की 'डिपुटीचेम्बर' के पद पर चुने गये। १८७४ में इटली की पार्लमेंट में शामिल हुए बहुत से सुधार के कार्य किये। १८८२ के जून की दूसरी तारीख को कपरेरी में इनका देहान्त हुआ। लेखक
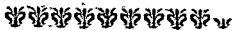
मिस पारकर का स्कूल।

आज बादल घिरे हुए थे। शीत की न थी। मिस पारकर से मैंने उनका 'किण्डरगारटन' स्कूल वादा किया था। मगर अन्य बातों फंसे रहने के कारण मैं अपना वादा गया। कमरे में बैठा एक पुस्तक and Her People' पढ़ रहा था स्वामी बोधानन्दजी ने आकर मुझ से कहा—

"क्यों, 'किण्डरगारटन' स्कूल देखने नहीं आओगे?"

"सचमुच! मैं तो यहां आना भूल ही गया था। क्या वक्त है?"

"दस से ऊपर हो चुके हैं।"

क्योंकि वादा नौ बजे जाने का था इसलिये मैं कपड़े पहिन मिस पारकर का स्कूल देखने चला।

मिस पारकर एक बहुत ही सुशिक्षिता देवी हैं आप की कोई छत्तीस वर्ष की होगी—अच्छा लम्बा चेहरा देखने से फौरन ही मालूम हो जाता है कि देवी विद्यारसिक है। अधिक विद्याभ्यास से शरीर में दुबला गई है, मगर बुद्धि के जौहर वार्तालाप से ही खुलते हैं। के प्राचीन धर्म पर आपकी बड़ी श्रद्धा है, और जब जब भारतीय सज्जन नगर में पधारते हैं आप अवश्य ही परिचय कर धार्मिक विषयों की बातें पूछती हैं।

इसी धार्मिक संलग्न के कारण आपका परिचय मुझ से हुआ और मुझसे आपने अपना स्कूल मुलाहज़ा करने की इच्छा प्रकट की, जिसको मैंने सहर्ष स्वीकार किया। आज उसी स्कूल को देखने गया था।

स्कूल-द्वार पर पहुंच मैंने बटन दबाया और अन्दरवालों को आगन्तुक की खबर लग गई। एक युवा रमणी ने द्वार खोला। मैंने अपना परिचय दिया और देवी ने सप्रेम मुझे अन्दर ले जा कुरसी दी और आप मिस पारकर को बुलाने गईं।

"अच्छा, आप आ गये!" मिस पारकर ने मुस्करा कर अभ्यर्थना की।

"देर से आने की क्षमा मांगता हूं।" मैंने कुछ लज्जित हो कर उत्तर दिया।

"इसकी कोई बात नहीं, पर आप अधिक देख न सकेंगे। क्योंकि दिलचस्प विषयों के घण्टे पूरे हो चुके हैं। अच्छा आइये कुछ तो देखिये।"

मैं अधिष्ठात्री मिस पारकर के साथ साथ हो लिया।

साथ के कमरे में जाकर हम और मिस पारकर एक ओर कुर्सियों पर बैठ गये। एक अध्यापिका छोटे स्टूल पर बैठी हुई थी और बीस के करीब बालक बालिकायें उसके सामने ज़मीन पर घेरा बांधे बैठी हुई थीं। कमरे का फर्श लकड़ी का था जिस पर गद्दे, मट्टी का नाम नहीं था। अध्यापिका इन नन्हे नन्हे बालक बालिकाओं को क्या पढ़ा रही थी? धैर्य कीजिये पाठक, मैं आप को बताये देता हूं।

इन किन्डरगारटन के विद्यार्थियों के सामने की दीवार पर एक बड़ा रंगीला सा चित्र टंगा था। यह चित्र एक

[illegible]—"स्कूल में [illegible] सीखते हैं।"

[illegible]—"वे क्या करते हैं?"

[illegible]—"रूमाल हिला रहे हैं।"

अध्यापिका (एक बालक से) "क्यों रूमाल हिलाते हैं?"

बालक चुप रहा। अध्यापिका ने फिर सब बालकों से पूछा—

"कोई बतलावे, क्यों ये सब नारी रूमाल हिला रही हैं?"

इस प्रश्नोत्तर के बाद अपने सारे विद्यार्थियों को चुप देख कर उनको एक ऐतिहासिक सा उपदेश दिया—

"प्यारे बच्चो! यह सिपाही देशहितैषी नवयुवक है जो अपनी मातृभूमि को रक्त से बढ़ कर समझता है। उसके लिये यह भारत भूमि देवी की प्रतिमा है। मातृभूमि की रक्षा के हेतु अपने देश के शत्रुओं से युद्ध करने के लिये रणभूमि में जाने को तैयार है। इसके हाथ में अपने देश का परमपूज्य झंडा है—यह झंडा सारी अमरीकन जाति का कीर्ति स्तम्भ है। जब तक यह झंडा लहराता है, अमरीकन जाति आज़ाद है। इसके गिरने से देश का पतन है। इस लिये इस झंडे की रक्षा देश के प्रत्येक नवयुवक पर लाज़मी है। इस नवयुवक सिपाही ने प्राण-पर्यन्त इस झंडे की रक्षा करने की शपथ खाई है। देश की देवियां माताएं, भगिनियां, इसको आशीर्वाद देती हैं, और रूमाल हिला हिला उसका उत्साह बढ़ा रही हैं।"

सब बालक बालिकाओं ने अपनी अध्यापिका के उपदेश को बड़े ध्यान से सुना। कुछ देर सभी चुप रहे। तब अध्यापिका ने विद्यार्थियों को सम्बोधित कर कहा—

"आओ, सब लोग युद्ध-नाटक रचें।"

यह एक देखने योग्य दृश्य था। टाड राजस्थान में दृश्यों के वर्णन यह स्वप्न देखा करता था, आज दिखाई दिया।

सब बालक बालिकायें एक घेरे में खड़े थे। एक उनका अफसर अफ़सर चुना गया। वह घेरे के मध्य में खड़ा था। उसके हाथ में बहुत सी झंडियाँ थीं। अपनी इच्छानुसार वह घेरे में से एक बालक, बालिका को बुलाता था। पहिले बालक अफ़सर को प्रणाम करता और बाद में उसको एक झण्डी दे अपनी रजमेण्ट का सिपाही चुनता था। इस प्रकार रजमेण्ट बनी, जिसमें दस सिपाही थे अफ़सर। बाक़ी सब विद्यार्थी दर्शकों के तौर पर उनको घेर कर खड़े हो गये। अब रजमेंट युद्ध हेतु चली।

दर्शक लोग अध्यापिका के साथ रूमाल हिलाते हुये यह गीत गाने लगे—

प्रश्न।

Soldier boy! Soldier boy!
Where are you going?
Bearing so proudly,
The red, white and blue

हिन्दी (कविता)।

कहाँ चले, ओ? सुभट बालगण वीर हृदय गर्वीले।
झण्डे लिये हाथ में अपने, श्वेत लाल औ नीले॥*

---

*यूनाईटेड-स्टेटज़-अमरीका के राष्ट्रीय झण्डे का रङ्ग लाल श्वेत और बैंगनी है—लेखक।

उत्तर।

I go where my country,
My duty is calling,
If you would be a soldier boy,
You may come too.

हिन्दी (कविता)।

हम जाते हैं युद्धस्थल को देश काज हित भाई।
चल सकते हो तुम सब भी यदि बनना चहो सिपाही॥

आहा! क्या ही सुन्दर दृश्य था।

....

थोड़ी देर बाद खेल पूरा हो गया। मिस पारकर से छुट्टी ले मैं अपने स्थान पर गया।

अब्राहम लिंकन की शतवर्षी

१२ फ़रवरी, १९०९, शुक्रवार के दिन
रीका-निवासियों ने अपने पूज्य पुरुष अब्रा
हम लिङ्कन
यूनाइटेड स्टेटस़ की सभी
दिन धर्मात्मा लिङ्कन का यश गाया
यही नहीं, बल्कि संसार के जिस
भाग में अमरीकन लोग कार्य्यवशात्
हुये हैं, वहां ...
के जन्म की ख़ुशियां मनाईं और उसके जीवन को अपना आदर्श मान उससे लाभ उठाने का प्रण किया। यहां पर यह प्रश्न होता है कि इस महात्मा में ऐसे कौन से गुण थे जिनके कारण उसके देशवासी उसे इतनी पूज्य दृष्टि से देखते हैं। कौन से कारण हैं, जो इस धर्मात्मा की ख्याति को ... बढ़ा रहे हैं। इस बात का संक्षिप्त वर्णन करना हम यहां पर उचित समझते हैं।

भगवान् श्रीकृष्ण जी ने गीता में कहा है कि जब मनुष्य-समाज में धर्म की ग्लानि होती है और जन समुदाय अपनी शक्ति से अपने दुःखों को दूर नहीं कर सकता, तब तब समाज की उलझनों को सुलझाने और उन्नति का मार्ग साफ़ करने के लिये महात्मा जन्म लेते हैं और मनुष्यों का दुःख दूर करते हैं। सभी जातियों पर ऐसी विपद् पड़ती रही है और पड़ती रहेगी। अमरीका वालों पर ऐसी विपद् १८५६ में पड़ी थी। वह विपद् क्या थी, इसको भी संक्षेप में कहे देते हैं।

सत्रहवीं सदी के आरम्भ में यूरोपियन लोग अपने अपने देशों से आकर उत्तरी अमरीका में बस्तियां बसाने लगे। अमरीका जंगली देश था, इसलिए उन लोगों को, जंगल साफ़ करने और दूसरे कामों के लिए, मज़दूरों की बड़ी ज़रूरत पड़ी। मज़दूर कहां से आवें? वहां तो सभी ज़मींदार थे, अतएव अमरीकावालों की इस ज़रूरत को पूरा करने और धन कमाने के लिए पुर्तगालवालों ने अफ़्रीका से हब्शी लाकर बेचने का ठेका लिया। धीरे धीरे यह व्यापार अङ्गरेज़ लोगों के हाथ में आया। हज़ारों निरपराध हब्शी हर साल भेड़ बकरियों की तरह बिकने लगे। नई दुनियां के मनुष्य-समाज की भावी विपद के बीज इसी समय बोये गये।

१७७६ में जब उत्तरी अमरीका की तेरह बस्तियों ने स्वतन्त्रता का झण्डा बुलन्द किया और—"मनुष्य मात्र ईश्वर की दृष्टि में सम हैं"—इस सिद्धान्त की सारे संसार में घोषणा की, तब योरप की सभ्यता में एक नया परिवर्तन हुआ। यद्यपि फ़्रांस के रूस रूसों ने इसका प्रचार पहले से ही किया था, तथापि वे केवल ज़बानी बातें थीं। अमरीका वालों ने अपना रक्त बहाकर इसका प्रमाण दिया। परन्तु एक बात में वे भी कसर कर गये। उस सत्य सिद्धान्त के महत्व को उन्होंने गोरे वर्ण वालों तक ही परमित रक्खा, बेचारे हब्शी "मनुष्य" शब्द की व्यवस्था में न लाये गये। ख़ैर, अमरीका वाले इङ्गलिस्तान से स्वतंत्र हो गये। यद्यपि अमरीका वालों ने अपने यहां के हब्शी गुलामों को आज़ादी तो न दी, मगर गुलामों की तिजारत बन्द करने की चेष्टा ज़रूर की। इङ्गलिस्तान वालों ने अपनी उदारता का प्रमाण देकर और अपने पापों का पश्चाताप करके यह क्रूर कर्म बिलकुल ही बन्द कर दिया; और

दूसरी जातियों पर भी गुलामों की तिजारत छोड़ देने के ज़ोर दिया।

अच्छा, अमरीका वालों ने गुलामी की प्रथा को ही क्यों न बन्द कर दिया? इसका
इन तेरह बस्तियों में से जो दक्षिण को ओर थीं उनका अधिकांश काम गुलामों ही के सहारे चलता था। उनके खेतों गुलाम लोग कड़ी धूप में काम
थे। मगर १७७६ की घोषणा—"मनुष्य मात्र ईश्वर की में सम हैं"—अपना काम कर गई। उत्तरी रियासतों में गुलामों को आज़ाद करने का बीड़ा लोगों ने उठाया। धीरे देश में इस बात पर दो दल बन गये। एक दल गुलामों को स्वतन्त्र करना चाहता था और दूसरा उन्हें परतन्त्र रखना चाहता था। दोनों में बड़े बड़े झगड़े हुए। १८५६ में देश की दशा बड़ी नाज़ुक हो गई। देश-हितैषी कहने लगे कि यूनाइटेड स्टेटज़ को ईश्वर ही बचावे तो बच सकता है।

भँवर में पड़ी हुई यूनाइटेड स्टेटस की किश्ती को पार लगाना साधारण व्यक्ति का काम न था। इसके लिए एक असाधारण मल्लाह की आवश्यकता थी—अथवा यों कहिए कि उस समय एक ऐसे महात्मा की ज़रूरत थी जिसमें दैवी शक्ति हो, ईर्षा-द्वेष जिसे छू न गया हो, प्रसिद्धि की जिसको लालसा न हो; गोरे काले में जिसे सम प्रेम हो, जो नीति में कुशल हो; और जिसकी बुद्धि तीक्ष्ण हो। मतलब यह कि दूसरों के दुःख में दुःख और सुख में सुख समझने वाले तथा अपने देश की रक्षा के लिए सब कुछ स्वाहा करने वाले पुरुष की आवश्यकता थी। ऐसा पुरुष, अनाथ हब्शी गुलामों का दुःख दूर करने और अपने देश को दो टूक होने से बचाने के

मगनियों और स्त्रियों के दुःख दूर करने के लिए पत्र लिखना जिनके बन्धु युद्ध में मारे गये थे, वह वही कर सकता है जिसके प्रेम का दायरा बहुत बड़ा हो; जो दूसरों के दुःख को अपना समझता हो।

इस महात्मा के चरित्र का दूसरा पहलू देखिये। ये रियासतें जिन्होंने १८६० में प्रेसीडेंट लिङ्कन के विरुद्ध युद्ध किया था आज उसका जन्मोत्सव मनाती हैं। क्यों? कारण यह है कि प्रेसीडेंट लिङ्कन को बागियों से द्वेष नहीं था। ज्योंही लड़ाई समाप्त हुई और युद्ध में प्रेसीडेंट लिङ्कन का दल जीत गया त्योंही इस महापुरुष ने परास्त दल को अपनाया, बहुत नरम शर्तें करके उससे सन्धि कर ली और युद्ध का खातमा कर दिया।

यही गुण हैं जिनके कारण लिङ्कनका शताब्दिक जन्मोत्सव इस धूमधाम से मनाया गया। केनटकी और इलीनाय रियासतों में उत्सव की तैयारियाँ कई महीने पहलेसे की गईं और लाखों रुपये खर्च किये गये। लकड़ी के जिस घर में लिङ्कन पैदा हुए थे उसको सुरक्षित रखने और उस स्थान पर यादगार बनाने के लिए सभायें बनाई गईं। मतलब यह कि अमरीका वालों ने अपनी जाति के भूषण का हर तरह से सत्कार किया है। अन्त में हम उस गीत की नकल देते हैं जो अमरीका का क़ौमी गीत है और जो लिङ्कन के जन्मोत्सव के दिन सभी जगह गाया गया था। वह गीत यह है—

अमरीका की स्त्रियां ।

यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः ।
यत्रैतास्तु न पूज्यन्ते सर्वास्तत्राफलाः क्रियाः ॥ मनु

ठक ! अपने यहां की स्त्रियों का हाल तो आप जानते ही हैं । कहां तक आप उन बेचारियों को लिखाते पढ़ाते हैं ? कहां तक आप उनकी शारीरिक अवस्था पर ध्यान देते हैं ? कहां तक आप उनके अधिकारों की रक्षा करते हैं ? आप से और मुझ से ये बातें छिपी नहीं । बाहर के लोगों से यह कह कर कि हम भी किसी समय सभ्य थे—नहीं नहीं सभ्यता के स्वरूप थे—हम भले ही अपना पीछा छुड़ा लें; परन्तु क्या इस तरह भी हमारा सुधार हो सकता है ? कदापि नहीं । हम बड़ी ही हीनावस्था में हैं । हमारा यह अभिमान, कि हम किसी काल में यह थे, वह थे, वृथा है । हम अब क्या हैं सो देखो । ज़रा आंखें खोलो । दुनिया हमारी वर्तमान दशा से हमें पहचानती है, बाप दादे को देख कर नहीं ।

एक विद्वान का कथन है कि, यदि तुम किसी देश की उन्नति का कारण जानना चाहो तो वहां की स्त्रियों की दशा की जांच करो । जिस देश में स्त्रियां मूर्ख हैं, जिस देश में स्त्रियों की प्रतिष्ठा नहीं है; जिस देश में स्त्रियों के अधिकारों की रक्षा नहीं है; वहां के लोग चाहे लाख टक्करें जाति के सुधार के लिये मारें, कभी उनको सफलता प्राप्त नहीं हो सकती । यह कथन कहां तक ठीक है, इसी का प्रमाण देने के

लिए मैं आज एक ऐसे देश की ललनाओं की जीवनचर्या आपके सामने रखता हूं, जो देश अपनी उन्नति के लिए संसार में विख्यात है। आप कृपा करके उनके चालों का अपनी दां-बहनों के चालों से मुकाबला कीजिए। यदि आप को मेरी बातें अच्छी लगें और लाभदायक जान पड़ें, तो जहां जहां आपकी पहुँच हो वहां वहां उनका ज़िक्र कर दीजियेगा। इसी से मैं समझ लूंगा कि मेरा परिश्रम व्यर्थ नहीं गया।

सब से पहले मैं यह बता देना उचित समझता हूं कि मैं पाश्चात्य सभ्यता का अन्धा भक्त नहीं हूं। जिन्होंने मेरे लेख ध्यानपूर्वक पढ़े हैं वे ज़रूर ही इस बात को जान गये होंगे। हां, मैं सत्यप्रिय हूं। अपने मतलब की कोई बात कहीं हो, उसे ग्रहण करना अपना धर्म समझता हूं। निर्दोष कोई भी जाति नहीं। मैं आप से अमरीका की स्त्रियों के दोष बतलाऊंगा, पर मन से मन उन्हें जिनको मैं दोष समझता हूं।

जब मैं भारतवर्ष से अमरीका के लिए चला था तब इस बात के जानने की मुझे बड़ी उत्कण्ठा थी कि अमरीका की स्त्रियां अपने पतियों से कैसा बर्ताव करती हैं; घरों में वे किस प्रकार रहती हैं; इनका आपस का बर्ताव कैसा है; पर एक दिन की मुलाकात में आदमी इन सब बातों को किसी तरह नहीं जान सकता।

भाग्यवश मुझको कुछ महीने मनीला में ठहरना पड़ा। मनीला फ़िलिपाइन द्वीप का एक बड़ा भारी शहर है और फ़िलिपाइन द्वीप अमरीका वालों के अधीन है। इसलिए अम-रीकन लोग यहां बहुत हैं। वे भिन्न भिन्न पेशे करते हैं। सौ-भाग्य से यहां पर मुझे एक बहुत अच्छा मौका एक अमरीकन के साथ रहने का मिल गया। जिसका वृत्तान्त मनीला-निवा-

लिए मैं आज एक ऐसे देश की ललनाओं की जीवनचर्या आपके सामने रखता हूं, जो देश अपनी उन्नति के लिए संसार में विख्यात है। आप कृपा करके उनके कामों का अपनी मां-बहनों के कामों से मुक़ाबला कीजिए। यदि आप को मेरी बातें अच्छी लगें और लाभदायक जान पड़ें, तो जहां जहां आपकी पहुँच हो वहां वहां उनका ज़िक्र कर दीजिएगा। इसी से मैं समझ लूंगा कि मेरा परिश्रम व्यर्थ नहीं गया।

सब से पहले मैं यह बता देना उचित समझता हूं। कि मैं पाश्चात्य सभ्यता का अन्धा भक्त नहीं हूं। जिन्होंने मेरे लेख ध्यानपूर्वक पढ़े हैं वे ज़रूर ही इस बात को जान गये होंगे। हाँ, मैं सत्यप्रिय हूँ। अपने मतलब की कोई बात कहीं हो, उसे ग्रहण करना अपना धर्म समझता हूं। निर्दोष कोई भी जाति नहीं। मैं आप से अमरीका की स्त्रियों के दोष बताऊंगा, कम से कम उन्हें जिनको मैं दोष समझता हूं।

जब मैं भारतवर्ष से अमरीका के लिए चला था तब इस बात के जानने की मुझे बड़ी उत्कण्ठा थी कि अमरीका की स्त्रियां अपने पतियों से कैसा बर्ताव करती हैं; घरों में वे किस प्रकार रहती हैं; इनका आपस का बर्ताव कैसा है; पर एक दिन की मुलाक़ात में आदमी इन सब बातों को किसी तरह नहीं जान सकता।

कारणवश मुझको कुछ महीने मनीला में ठहरना पड़ा। मनीला फ़िलिपाइन द्वीप का एक बड़ा भारी शहर है; और फ़िलीपाइन द्वीप अमरीका वालों के अधीन है। इसलिए अमरीकन लोग वहां बहुत हैं। वे भिन्न भिन्न पेशे करते हैं। सौभाग्य से वहां पर मुझे एक बहुत अच्छा मौक़ा एक अमरीकन के साथ रहने का मिल गया। मिस्टर स्वाट मनीला-शिक्षा-

विभाग में हेड क्लर्क थे। वेदान्त पर आप की बड़ी श्रद्धा थी। मुझ से उन्होंने कहा कि आप हमारे ही मकान पर रहें और हमें संस्कृत पढ़ावें। मैंने स्वीकार कर लिया। "एक पन्थ दो काज"। उनकी स्त्री अच्छी सुशिक्षिता थी और एक स्कूल में अध्यापिका थी। वैसा प्रेम मैंने इस पति-पत्नी में देखा। फुरसत के समय दोनों किसी अच्छे लेखक की पुस्तक उठा कर पढ़ा करते और जीवन का आनन्द लेते थे। मेरे लिए यह सब नई बात थी। हमारे देश में तो जिस लड़के का विवाह होने को होता है उसे इसका तो पता नहीं लगता कि जिसके साथ मुझे सारी उम्र काटनी है वह है कैसी ? मूर्ख है या शिक्षिता। बाजों को तो यह भी पता नहीं लगता कि जिसके साथ विवाह होता है वह स्त्री है या पुरुष। रुपया देकर विवाह करनेवाले कई बेचारे इसी तरह धोखे में आकर रुपया खो बैठे हैं। वाह रे भारत, तेरी अद्भुत महिमा है !

मिस्टर स्काट से थोड़े ही दिनों में मेरा गहरा सम्बन्ध हो गया। जब उनकी स्त्री गरमियों की छुट्टियों में मनीला से अमरीका आने लगीं तब मुझ से हँसकर कहा—"देव ! घर और मिस्टर स्काट की निगरानी आप के सुपुर्द है"। मैंने मुस्करा दिया। फिर उन्होंने पन्द्रह बीस बन्द लिफ़ाफ़े मुझे दिये। उन पर जुदा जुदा तारीखें पड़ी हुई थीं और मिस्टर स्काट का पता लिखा हुआ था। उन्हें देकर स्काट की पत्नी ने कहा—"कृपा करके इन चिट्ठियों को इन तारीखों के अनुसार मेरे पति को दे दीजियेगा। मैंने चिट्ठियां ले लीं और उनकी इच्छानुसार काम किया। चिट्ठियों के देने का कारण था। मनीला से अमरीका आने में एक महीना लगता है, और वापसी महीना आने में भी। इसलिए चिट्ठी आने में एक में

कम दो महीने लगते । इन दो महीनों में पति को वियोग-दुःख अधिक न सहना पड़े, इसी लिए स्काट की पत्नी ने ये चिट्ठियां दी थीं ।

यह केवल एक ही उदाहरण पति-प्रेम का नहीं है। मुझे अपने मित्र द्वारा वहां कई एक अमरीकन गृहस्थों से जान पहिचान हो गई थी । उन कुटुम्बों में भी पति-पत्नी में अपूर्व प्रेम देखकर मुझे बड़ा ही आनन्द हुआ । कारण यह कि स्त्रियां सुशिक्षिता और सुयोग्य हैं ।

शिकागो पहुंच मुझे बहुत कुछ देखने भालने का मौक़ा मिला। वहां स्त्रियों की दशा का ज्ञान प्राप्त करने के बहुत अवसर मेरे हाथ लगे। विद्यालय में जो लड़कियां मेरी सहाध्यायिनी थीं उनसे जब जब किसी विषय पर बात चीत करने का अवसर मिला, तबीयत खुश हो गई। गम्भीर से गम्भीर विषय को भी वे समझती हैं। लड़कों की तरह बहुत सी लड़कियां विद्यालय में देखी थीं जिनको अपनी शिक्षा के लिये आप रुपया कमाना पड़ता था। विद्या-प्राप्ति की धुनि में सब तरह के कष्ट सहकर वे पदवियां प्राप्त करती हैं।

एक दिन मैं एक लड़की के साथ मिशेगन झील पर सैर करने गया। रास्ते में अनेक विषयों पर बात चीत हुई। हम दोनों झील के किनारे आकर बैठ गये। लड़की का नाम कुमारी एड्डी था। उसने मुझ से पूछा—

"अच्छा, आप बताइये कि आप को यह विद्यालय पसन्द आया या नहीं ?"

मैं—"ईश्वर से यह चाहता हूं कि मेरे देश में भी ऐसे ही विद्यालय हो जावें।"

आता है। एक लड़की, जिसकी उम्र कोई सोलह सत्रह वर्ष की होगी, ठीक मेरे सामने बैठी थी। कुछ पर कसरत कर रही थी। उसे अचरज करते देखा, तब तब मेरे हृदय में उसे ही गहरी चिन्ह लगा। जिस देश में कन्याओं के आरोग्य और शारीरिक सुधार का इतना अच्छा प्रबन्ध हो उस देश को उन्नति के शिखर पर आरूढ़ होना ही चाहिये।

लड़कियों की बातें जाने दीजिये। अब अमेरिका की स्त्रियों का कुछ हाल सुनिए।

अमेरिका की स्त्रियों के जुलूस का समय बहुत अच्छे सूतों में आता है। यह जरूरी नहीं कि इन समाजों में जाने वाली स्त्रियाँ विद्या विदुषी ही हों, शादी भी होती है। प्रत्येक नगर में स्त्रियों के क्लब हैं। क्लबों के अनेक समाज अथवा सभायें भी हैं। ये क्लब भिन्न भिन्न उद्देश्यों की सिद्धि के लिये खोले जाते हैं। जैसे शेक्सपीयर-क्लब में केवल शेक्सपीयर के ग्रन्थ पढ़े जाते हैं और उनका मतलब अच्छी तरह समझा जाता है। ब्राउनिंग-क्लब में महाकवि ब्राउनिंग के ग्रन्थों का अध्ययन किया जाता है। याद रखिये, यह सब मैं स्त्रियों की क्लबों का जिक्र कर रहा हूँ। व्यायाम-क्लब में स्त्रियाँ जाकर व्यायाम करती हैं। मातृ-क्लब (Mothers Club) में माताएँ बच्चे पालन के लिये, समय समय पर, अमेरिका के प्रसिद्ध प्रसिद्ध डाक्टरों को बुलाकर उनके व्याख्यान सुनती हैं। व्याख्यानों में बीमारियों के इलाज, बच्चे के पालन पोषण का ढङ्ग, खाने पीने की विधि आदि उपयोगी विषयों की चर्चा रहती है।

एक बार मुझे एक स्त्री-समाज में व्याख्यान देने जाना पड़ा। यह समाज विशेष करके धनी स्त्रियों का था। व्याख्यान के दिन दो सौ से अधिक स्त्रियाँ उपस्थित थीं। व्याख्यान के

बाद में कुछ काम के लिये थोड़ा देर ठहर गया। जिस दीवान खाने में मैंने व्याख्यान दिया था उसके पास ही बाहर के कमरे में होटेल की तरह का सामान मैंने देखा। मैंने वहां की प्रधान स्त्री से पूछा कि क्या यहां होटेल भी है? उत्तर में वह देवी बोली—"हां, इस स्त्री-समाज की ओर से यहां होटेल भी है, जिसमें निर्धन स्त्रियां थोड़े खर्च से भोजन पाती हैं।" हमारे कोई कोई साधु पाठक शायद कहेंगे कि सदावर्त ही क्यों न खोल दिया जिसमें स्वर्ग जाने का रास्ता और भी सुगम हो जाता। उत्तर में हम निवेदन करेंगे कि अमरीकावासी हमारी तरह मूर्ख नहीं हैं। आप यदि सम्पत्ति शास्त्र पढ़ें तो आपको पता लगे कि जो लाखों करोड़ों रुपये हर साल आप अपने पुण्य-क्षेत्रों में सदावर्त द्वारा खर्च करते हैं वह व्यर्थ जाता है। देश में आलसी हट्टे कट्टे मूर्खों की संख्या बढ़ती है। उसी रुपये से यदि कारखाने खुल जाय तो हजारों आदमियों का पालन हो, और पुण्य के साथ देश-सेवा भी हो। अमरीका के निवासी सम्पत्तिशास्त्र के ज्ञाता हैं। वे आलसी भिखमंगों की वृद्धि करना महापाप समझते हैं।

इलीनाय (Illinois) रियासत में जितने स्त्री-समाज हैं सब की एक प्रधान सभा है। उस सभा में प्रत्येक समाज के प्रतिनिधि रहते हैं। १६०६ के नवम्बर में उसका वार्षिक अधिवेशन शिकागो विश्वविद्यालय में हुआ था। इस सभा के उद्देश आदि का संक्षिप्त वर्णन सुन लीजिए—

१—पहला उद्देश इस सभा का शिक्षा सम्बन्धी है। गांव गांव में जो स्कूल रियासत की तरफ से खुले हुए हैं उनकी सहायता यह सभा करती है। वहां की पठन-पाठन विधि की उन्नति का ध्यान रखती है। जो लोग निर्धनता के कारण थोड़ा

जो स्वयं अपनी सन्तान की शिक्षा के लिए नहीं कर सकते, सभा उनकी सहायता करती है। जिस गांव में स्कूल तो है, पर अच्छा पुस्तकालय नहीं है, वहां यह सभा पुस्तकालय खोलने का यत्न करती है। १९०५ नवम्बर से १९०६ नवम्बर तक एक साल में, इस सभा ने ५८ पुस्तकालय खोले थे। स्कूलों में यह सभा ऐसे ऐसे समाज स्थापित करती है जिनके द्वारा वहाँ के माता पिता अपनी सन्तान के हित-साधन का विचार करते हैं।

२—दूसरा उद्देश्य दान सम्बन्धी है। दान का पात्र कौन है? इसका विचार सभा करती है। जिसे दान देना है वह सभा को भेज देता है; सभा उसको उचित और उपयोगी काम में खर्च करती है। भारतवर्ष की तरह नहीं, कि लाखों रुपये मन्दिर मसजिदों में फूंक दिये, या किसी पंडे पुजारी को भेंट कर दिये। पाठक आपही कहिये—काशी, प्रयाग और गया के पंडों को जो धन दिया जाता है क्या वह देशोपकार में खर्च होता है?

सभा के प्रतिनिधि, समय समय पर रियासत के जेलखानों अनाथालयों और हवालातों में जाते हैं। वहां की हालत देखते हैं। कैदियों की अवस्था कैसे सुधर सकती है? इसका विचार करते हैं। स्कूलों की ज़रूरत होती है तो कैदियों के लिए स्कूल खोलने का प्रबन्ध करते हैं। कैदियों के रिश्तेदार यदि दरिद्र हों तो सभा उनकी सहायता करती है।

यदि किसी को नौकरी या रोज़गार की ज़रूरत है तो सभा उसके लिए काम तलाश कर देती है; और जब तक रोज़गार न मिले उसके रहने और खाने पीने का प्रबन्ध करती है।

३—सभा का तीसरा उद्देश पागल, अन्धे, बहरे, मोहताज लोगों के लिए स्कूल स्थापित करना है। उनके रहने के लिए अच्छे हवादार मकान शहर शहर में बने हुए हैं। ऐसे मकानों में रहने वालों के आराम का बहुत ख़याल रक्खा जाता है। मान लीजिए कि कोई लङ्गड़ा है, चल फिर नहीं सकता। उस के लिए छोटी छोटी गाड़ियां रक्खी जाती हैं।*

४—चौथा उद्देश इस सभा का अच्छे साहित्य का प्रचार करना है। सभा की ओर से बांटने के लिए छोटी २ सचित्र पुस्तकें छपती हैं। ये मुफ़्त बांटी जाती हैं। सभा के आधीन जितने समाज हैं वे उनको प्रत्येक बालक के हाथ तक पहुंचाने का उपाय करते हैं। ऐसी पुस्तकों में प्रायः रोचक, परन्तु शिक्षाप्रद कथायें रहती हैं।

५—पांचवां उद्देश इस सभा का कला-कौशल की उन्नति करना है। रियासत में जहां कहीं शिल्पकला के स्कूलों की ज़रूरत होती है, सभा वहां उनके खुलवाने का यत्न करती है। जिस बालक या बालिका की प्रवृत्ति कला कौशल की ओर होती है, धन से उसकी सहायता करके सभा उसके उत्साह को बढ़ाती है।

अमरीका की स्त्रियां ऐसे ही काम करती हैं। मैंने केवल उदाहरण के तौर पर इतनी बात लिखी। यदि आप यहां की स्त्रियों के सब काम देखें तो आपको भारत की स्त्री जाति की अधोगति का अच्छी तरह अन्दाज़ हो।

---

* शिकागो विश्वविद्यालय के पास [illegible] का बहुत बड़ा मकान है, जहां लंगड़े बच्चे रहते हैं। उनके लिए गाड़ियां मौजूद हैं [illegible] हैं कि हाथ से चला घुमाने से चलती हैं। इस तरह अमरीका के बच्चों की ओर कितनी अच्छी तरह करती है—लेखक।
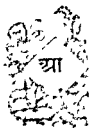
है। जहां जितना अन्धकार है वहां उतना अधिक अन्याय है। अन्याय को दूर करने का सीधा सादा उपाय प्रकाश का फैलाना है। भला, क्या इन विद्युत-प्रकाशित गलियों में चोर निर्भय घूम सकते हैं ?

हमारे शहरों और इस शहर में ऐसा भेद क्यों ?

क्या इस का उत्तर भी हमीं दें। कुछ तो बुद्धि आप लोग भी खर्च करिये। आइये हम लोगों को यहां उतरना है।

यह फ़र्श asphalt* का है, और यह सीमेण्ट का–उस पर गाड़ी, घोड़े चलते हैं और यहां पर आदमी। यह प्रबन्ध सभी शहरों में है। यह आयोवा सेन्ट है। यहां पर येङ्गव सोसाइटी की अधिष्ठात्री येङ्गमाता मार्ग्री अमरीकन लेडी रहती है। रात को इसी बिल्डिङ्ग में कमरा ले कर रहते हैं, भोर होते ही राजधानी की सैर को चलेंगे। ढाई रुपये के करीब एक रात का किराया फ़ी आदमी लगेगा, और भोजन पका पकाया अपने पास है ही; बस छुट्टी हुई।

उठिये महाशय, शीघ्रता कीजिये। सन्ध्यावन्दन से निपटिये। आज हम लोगों को बहुत कुछ देखना है सुस्ती से काम नहीं चलेगा। घड़ी में पौने सात बजे हैं और हम लोगों को साढ़े आठ बजे यहां से ज़रूर चलना चाहिये। सबसे पहले (Washington Monument) वाशिङ्गटन कीर्ति स्तम्भ देखने चलेंगे। उसका द्वार नौ बजे से खुलता है।

तो क्या यह वाशिङ्गटन कीर्ति स्तम्भ है ? जी हां, यही सब से ऊंचा मीनार उस महान् पुरुष की कीर्ति का परिचय संसार को दे रहा है। यह कह रहा है—

*एक प्रकार का पत्थर।

"संसार में उसका जीवन धन्य है जिसने अपनी आयु को अपने देश, अपनी जाति की सेवा में लगाया हो। वह कौन है, जो नहीं मरेगा। मृत्यु सब के लिये है, पर वह जन्म सार्थक है जो जाति के दुःख दूर करने में व्यतीत हो। दुनियां के विषयों से ऊपर उठो; लोभ लालच को लात मारो; सम अधिकारों की दुन्दुभी बजाओ और मनुष्य जाति को न्याय की शिक्षा दो। स्मरण रक्खो, अन्त को सत्य की जय होगी—यदि इसके पालन में कष्ट आवे तो मत घबराओ। परमात्मा पर दृढ़ विश्वास रक्खो। वह उनकी सहायता करता है जो न्याय के पथ पर चलते हैं। अमरीका जाति ने १७७६ में न्याय हेतु युद्ध किया था, परमात्मा ने उनकी सहायता की। यदि अमरीकन लोग न्याय से विमुख हो जावेंगे तो परमात्मा उनको वैसा दण्ड भी देगा।"

बेशक, आप का कथन ठीक है। यह कीर्ति स्तम्भ उसी सत्य सिद्धान्त की शिक्षा देता है।

अब तो हम लोग बहुत निकट आगये। देखिये, दरवाज़े के बाहर और भी दर्शक लोग खड़े हैं, जो स्तम्भ के ऊपर जाना चाहते हैं।

आहा! यहां भी खटोला है। यह बहुत अच्छा हुआ, नहीं तो लम्बी चढ़ाई चढ़नी पड़ती। यह अमरीका है, श्रीमान्! यहां लोग व्यर्थ दुःख नहीं उठाते। कोई न कोई तरकीब सोच ही लेते हैं। अपने देश के लोगों की भाँति क़िस्मत के भरोसे नहीं बैठे रहते।

चलिये खटोले के अन्दर।

सर्-र-र-र-र-र-र-र करता हुआ खटोला ऊपर को उठा और थोड़ी देर में हम लोग झट ऊपर पहुंच गये।

देखिये। इधर नज़र डालिये, पोटोमेक नदी क्या चक्कर काटती हुई जाती है। मीलों इसकी धारा की शोभा देखिये।

ज़रा इस पश्चिम का रङ्ग भी लूटिये। यह दूर वरजिनियां के नीले पर्वतों की श्रेणियां क्या सौन्दर्य दिखा रही हैं। प्रकृति की शोभा क्या कहिये। आहा! प्रभु की लीला अपरम्पार है।

सत्य है संसार के विषयों से ऊपर उठ कर, उनको नीचे छोड़—बन्धन काट देने से ही—सच्चा आनन्द मिल सकता है। ऊपर उठने से हमारी दृष्टि का (scope) फैलाव बढ़ता है, तङ्गदिली दूर होती है। 'कूप मंडूक' के क्षुद्र विचार नष्ट हो जाते हैं।

महात्माओं के कीर्ति स्तम्भ इसीलिये बनाये जाते हैं। जार्ज वाशिङ्गटन की महान आत्मा यही शिक्षा देती है। उसके कीर्ति स्तम्भ पर चढ़ने से उस महान् पुरुष के कारनामों का अनुभव होता है।

देखिये, दस तो यहीं बज गये। चलिये जल्दी, अभी बहुत कुछ देखना है।

+ + + + +

अच्छा, आइये अमेरिका के प्रेसीडेंट का घर (White House) श्वेत-भवन देखने चलें। रास्ते में स्मिथ सोनियन शाला (Institution) है उसकी भी झांकी लगाते चलेंगे, जातीय अजायबघर भी पास ही है उसका दर्शन भी हो जावेगा।

शायद आप स्मिथसोनियन-शाला का ब्यौरा जानने के उत्सुक होंगे; लीजिये हम पहिले यही बताते हैं।

यही सफ़ेद रङ्गों वाला भवन (White House) कहलाता है। अमेरिकन जाति के प्रेसीडेंट श्रीमान् डाक्टर यहीं रहते हैं। यह प्रेसीडेन्टों के रहने की जगह है। प्रत्येक चार वर्ष उपरान्त अमेरिकन लोग अपने प्रधान का चुनाव करते हैं। यही प्रधान इनके प्रेसीडेंट, राजा, महाराजा, सभी कुछ हैं। चार साल बाद फिर चुनाव होता है और सर्वप्रिय पुरुष प्रेसीडेन्ट बनाया जाता है।

इस 'श्वेत भवन' की नींव अक्टूबर १७९२ में पूज्यवर जार्ज वाशिंगटन ने रखी थी। १७९९ में यह भवन बनकर तय्यार हो गया था। यह इमारत विरजिनिया पत्थर की है। इसकी लम्बाई १७० फ़ीट है और चौड़ाई ८५ फ़ीट।

अच्छा चलिये ज़रा अन्दर चल कर देखें।

दरबान से आज्ञा लेनी आवश्यक है। यह पौधे क्या सुन्दर दीख पड़ते हैं। गरमियों में यहाँ कैसी बहार होती होगी। इस दूसरे दरबान से पूछ कर अन्दर चलते हैं।

यहाँ प्रेसीडेंट भवन के चाँदी के बर्तन हैं। यह बहुत क़ीमती हैं। समय समय पर इनको इस्तेमाल करते होंगे। दीवारों पर इन देवियों के कैसे जानदार चित्र देखिये। यह तैल चित्र हैं। कारीगरों के हस्त कौशल का नमूना है। यह चित्र देवी डालकर का है और यह श्रीमती रूज़वेल्ट का।

जब कभी कोई रस्म-रिवाजें होती हैं तो इस भवन के ऊपर के हाल में प्रेसीडेन्ट अपने मित्रों का स्वागत किया करते हैं।

इस हाल की सजावट अपूर्व है। इन मेज़ों पर सुनहला काम देखिये। ये सामने की दीवारों पर जो शीशे लगे हैं उनकी क़ीमत बहुत अधिक जान पड़ती है। खिड़कियों के पर्दों की शोभा निराली है। छत में सोने का काम भी सराहनीय है।

कुछ ही हो, हमारे राजे महाराजाओं को ये नहीं पहुँचते। उनके भवनों का सौन्दर्य इनसे कई गुना बढ़कर होता है।

\+ + + + +

घड़ी में इस समय एक बज गया है। नाश्ता करके फिर राजधानी का वृहत् भवन देखने चलेंगे।

\+ + + + +

राजधानी के इस वृहद्भवन की शोभा सचमुच दर्शनीय है। इस इमारत की बनावट में महानता है। इसका बड़ा गुम्बद क्या कहता है? उस गुम्बद की लालटेन—और उस लालटेन के ऊपर! आहा! साक्षात् स्वतन्त्रता देवी की मूर्ति! यही देवी सर्वसिद्धियां दायिनी है। यही मोक्ष मातृ भगवती है। देवी के दाहिने हाथ में तलवार है और बायें हाथ में फूलों की माला। इस मूर्ति को देखने से मन में क्या पवित्र और उच्च भाव उठते हैं। लेखनी में वर्णन करने की शक्ति कहां!

देवी के सिर पर अमेरिकन झण्डे की चद्दर है। खैर, यह तो अपनी अपनी श्रद्धा है। सूर्य वंशियों ने सूर्य चित्रित, चद्दर भेंट की; चन्द्रवंशियों ने चन्द्र चित्रित, और जिनके पास भेंट धरने को कुछ नहीं है उन्होंने अपनी आंखों से ही देवी के पैर चूमे।

देवी को नमस्कार करके अन्दर चलते हैं।

इस दरबान के साथ चल कर देखना ठीक होगा, क्योंकि इसके साथ चलने से कई नई बातों का पता लग जायेगा। मध्य के चक्कर से आरम्भ करते हैं।

गुम्बदनुमा इस बड़े चक्कर को राजधानी के वृहद्भवन का केन्द्र समझिये; बाकी सब कमरे इसके इर्द गिर्द हैं। इस गोलघर के गुम्बद पर 'अमेरिका देवी' की मूर्ति है। यह क्या

नना (हार मानने) का है। इस युद्ध में अंग्रेज़ी अफसर ने परास्त हो अपने हथियार अमेरिकनों को सौंपे थे। सातवां चित्र कार्नवालिस की पराजय का है। जनरल कार्नवालिस अङ्गरेज़ी फौजों के मुखिया थे। इनकी हार पर अमेरिकन युद्ध का अन्त हुआ था। आठवां चित्र उस समय का है जब जनरल वाशिङ्गटन ने मातृभूमि की सेवा कर, उसके बन्धन काट, उसे स्वतन्त्र कर बाद में अपने आप को माता का एक साधारण पुत्र बनाया था। यह चित्र बड़े महत्व का है। "आत्म-समर्पण" का सच्चा उदाहरण है। फौजों की सारी शक्ति जनरल वाशिङ्गटन के हाथ में थी। वे चाहते तो नेपोलियन की भांति देश को अपने काबू में कर लेते। मगर नहीं, उस वीर को माता का सच्चा प्रेम था।

\+ + + + +

आज कांग्रेस का इजलास हो रहा है। चलिये ज़रा उसकी ओर भी निगाह डालते चलें। यहां तो इतनी भीड़ है। बारी, बारी अन्दर गेलरियों में जाने देते हैं। अपनी बारी पर हम लोग भी घुस चलेंगे।

हैं! यह क्या! नीचे हाल में तो थोड़े ही मेम्बर हैं। कुर-सियां खाली हैं। एक सेनेटर व्याख्यान भी दे रहा है सुनने वाले, चार दस ही हैं। हां गेलरियों में स्त्री पुरुष भरे हैं। यह क्यों? इसका रहस्य बाद में मालूम होगा। यहां का वृत्तान्त किसी से पूछेंगे।

सेनेट का यह 'हाल' खासा बड़ा है। इसकी दीवारों की सजावट में सोने का काम बहुत है और चित्र विचित्रता का तो कहना क्या। छत, दीवार शीशा आदि सभी कलाकौशल के नमूना हैं। देश के महान पुरुषों को सभी जगह स्थान

दिया गया है; उनकी प्रतिष्ठा की गई है। हाल में कुरसियां अर्द्ध चन्द्राकार चुनी हुई हैं। प्रत्येक कुरसी के आगे एक एक डेस्क है। प्रेसीडेण्ट का डेस्क बीच में प्लेटफार्म पर है।

अब अधिक क्या देखना है। चलते हैं। सारा दिन घूमने फिरते थक गये। बाकी फिर कभी सही। आज इतनी ही सैर समझिये। यदि फिर किसी दिन छुट्टी हुई, तो बाकी भाग की भी सैर करवाएंगे। इससे अधिक यदि देखें भी तो मज़ा नहीं आवेगा, क्योंकि दिमाग़ थक गया है; अधिक ग्रहण नहीं करता।

शिकागो-विद्यावियालय।
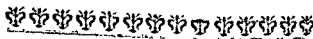
स लेख में मेरा आशय केवल शिकागो-विश्वविद्यालय की बड़ी बड़ी इमारतों का वर्णन करना नहीं किन्तु भारतवर्ष के विद्या प्रचार सम्बन्धी महत्त्व पूर्ण प्रश्न पर विचार करने का भी है। मुझे अमेरिका के शिकागो-विश्वविद्यालय के उदाहरण द्वारा यह दिखलाना है कि किस प्रकार भारत वर्ष के कालेज और पाठशालायें विश्वविद्यालय के रूप में होकर देश के लिए लाभकारी हो सकती हैं? किस प्रकार अमेरिका में नवयुवकों को आत्मसहाय की शिक्षा दी जाती है? किस प्रकार अमेरिका के धनाढ्य पुरुष अपनी सम्पत्ति को देश के उपकारार्थ अनेक प्रकार के विज्ञान सम्बन्धी कालेज और स्कूल खोल कर खर्च करते हैं? इस लेख के पढ़ने से यह भी ज्ञात होगा कि अमेरिका के बच्चों की शिक्षा का सारा सम्बन्ध उन्हीं के माँ-बाप के हाथों में है। क्या ईसाई, क्या मुसलमान, क्या यहूदी क्या मारमन क्या थियासाफिस्ट, सभी विद्यार्थियों के पठन पाठन का एक सा प्रबन्ध है।

यह नहीं कि लोग अपनी ढाई चावल की खिचड़ी अलग ही पकाते हों। सब कहीं प्रेम और एकता का अखंड राज्य है। एक दूसरे के अधिकारों के लिए एक सा ध्यान है। यही कारण है कि प्रशान्त महासागर से लेकर एटलांटिक महासागर तक सब अमेरिका निवासी अपनी जाति की उन्नति में

दत्त चित्त हैं और संसार की सम्पद् उनके सामने हाथ बांधे खड़ी है।

सबसे पहिले मैं उस धर्मात्मा,सदाचारी, विद्वान-शिरोमणि पुरुष का परिचय आप से कराता हूं, जिस के पुरुषार्थ से शिकागो-विश्वविद्यालय इस प्रसिद्धि को पहुंचा है। उस महा-पुरुष का नाम विलियम रेने हारपर है। आपने शहर निउ कनकार्ड (New Concord Ohio) के हाईस्कूल में विद्या-ध्ययन प्रारम्भ किया और मस्किङ्गम नामी कालेज से १४ वर्ष की उम्र में बी० ए० की पदवी प्राप्त की। इसके बाद आप तीन वर्ष तक भाषाओं का अध्ययन करते रहे। १८७३ में उन्होंने अमेरिका की प्रसिद्ध यूनीवर्सिटी येल (Yale) में पढ़कर Ph. D. (दर्शनशास्त्र के आचार्य) की पदवी पाई।

इसके उपरान्त कई विश्वविद्यालयों में आप अध्यापक तथा अधिष्ठाता रहे। १८९१ में शिकागो के पुराने विश्वविद्यालय के प्रेज़ीडेण्ट नियत हुये; और १८९१ से लेकर १९०६ के जन-वरी मास तक तन मन से उसकी सेवा करते हुए परलोक-गामी हुये।

यह इन्हीं महाशय के परिश्रम, निःस्वार्थभाव और विशाल बुद्धि का प्रभाव था, जिससे शिकागो विश्वविद्यालय का नाम एक साधारण कालेज से १४ वर्ष के अन्दर संसार के बड़े बड़े विश्वविद्यालयों की गणना में आने लगा। इन्हीं के प्रभाव से अमेरिका के प्रसिद्ध धनी जान डी० राकफेलर ने इनके विद्या-लय के लिये ३ करोड़ २० लक्ष रुपया दिया। इनके वाक्य को कोई नहीं टालता था। जिससे जाकर कहते कि विश्वविद्या-लय के लिये अमुक वस्तु की आवश्यकता है वह इनका वचन ज़रूर पूरा करता था।

एक बार इनको अपने विद्यालय के लिये एक दूरबीन दरकार हुई। आपने शिकागो के धनाढ्य पुरुष मरकस साहब से कहा। उन्होंने तत्काल इनकी बात मान ली और बड़ी दूरबीन मंगा दी जो दुनियां भर में सब से बड़ी थी।

यद्यपि हमारे देश में भी ऐसे ऐसे महापुरुष हैं जिनकी इच्छा मात्र से विद्यालय खुल सकते हैं; परन्तु उन्होंने दान का उचित प्रयोग अभी तक करना ही नहीं सीखा। जिस दिन हमारे देश के सत्पुरुष जाति के उन्नति के मर्म को समझेंगे, उसी दिन कला-कौशल और विज्ञान शिक्षा का प्रबन्ध होने में देर न लगेगी।

१८८६ ई० में शिकागो नगरी के बेपटिस्ट सम्प्रदाय के धनाढ्य पुरुषों ने एक साधारण कालेज की स्थापना की। १८९१ ई० में, प्रेज़ीडेण्ट हारपर, कालेज के प्रधान नियत हुये। तब उन्होंने उसे विद्यालय का रूप देना चाहा, जिसका सम्बन्ध किसी ख़ास सम्प्रदाय या जन-समुदाय के साथ न हो; जिसमें सब तरह के स्वतन्त्र विचारवाले प्रोफ़ेसर शिक्षा दे सकें। मतलब यह कि किसी की विचार-स्वतन्त्रता में बाधा न आवे। प्रेज़िडेण्ट हारपर स्वयं बड़े स्वतन्त्र प्रकृति के मनुष्य थे। वह जानते थे कि जिस स्कूल या कालेज में विचार स्वतन्त्रता नहीं; जहां के प्रबन्धकर्ताओं के विचार संकीर्ण हैं, वहां के विद्यार्थी कभी उदाराशय नहीं हो सकते। वे जानते थे कि साम्प्रदायिक कालेजों के विद्यार्थियों के विचार अवश्य ही संकीर्ण होते हैं, इससे वे अपने भविष्य जीवन में जनसमाज को पूर्ण लाभ नहीं पहुँचा सकते। उनके इस विचार की यथार्थता हम अपने देश में देखते हैं। भारतवर्ष में पृथक् पृथक् मतों और सम्प्रदायों के कई कालेज और पाठशालाएँ हैं।

हैं—Freshmen (नवीन) और Associates (सहचर या पुराने)। नवीन विद्यार्थी वे कहलाते हैं जो हाई-स्कूल में परीक्षोत्तीर्ण होकर कालेज में भरती होते हैं। उनको कालेज में भरती होने के लिए १५ "यूनिट" (एक "यूनिट" १५० घण्टे का होता है) का काम दिखलाना पड़ता है। उसमें से तीन "यूनिट" अंगरेज़ी, २½ "यूनिट" गणित (जिसमें रेखागणित और बीजगणित भी शामिल हैं), तीन "यूनिट" यूनानी, लाटिनी या जरमन भाषाएँ, दो "यूनिट" अमरीका और योरप का इतिहास। बाकी ४½ "यूनिट भिन्न भिन्न विषय। यथा—Botany (वनस्पति विद्या), Zoology (प्राणिधर्म-विद्या) Physiology (दैहिकधर्म विद्या) Chemistry (रसायन विद्या) Physics (भौतिकविद्या) Astronomy (ज्योतिःशास्त्र), Mechanics यन्त्रविद्या) Political Economy (सम्पत्ति-शास्त्र) Drawing (नकशा-नवीसी) आदि।

जिस विद्यार्थी ने किसी अच्छे हाई स्कूल में १५ यूनिट" का काम न किया हो वह कालेज में भरती नहीं हो सकता। कालेज में दाखिल होने के उपरान्त भी यूनिट' का काम पूरा करने पर उसे सर्टीफिकट की पदवी मिलती है। फिर वह Senior ([illegible] ऊँचे दरजे का कालेज) में प्रवेश पाने का अधिकारी होता है।

विश्वविद्यालय में [illegible] (ए० बी०) [illegible] (पी एच० डी०) (D. Lit.) डी० लिट्०), (B. S.) (बी० एस०, [illegible] (ईंजी० बी०), तथा [illegible] (ए० एम०) [illegible] (पी-एच० डी०), D. D. (डी० डी०) और [illegible] (एल-एल० डी०) आदि की पदवियाँ दी जाती हैं।

विश्वविद्यालय का वर्ष जाड़ा, गरमी, वसन्त और पतझड़ के नाम से तीन तीन महीने के चार भागों या क्वारटरों में बँटा हुआ है। प्रत्येक भाग या क्वारटर १२ हफ़्ते का होता है। प्रत्येक हफ़्ते में ४ या ५ दिन पढ़ाई होती है। प्रत्येक विद्यार्थी तीन या चार विषयों से अधिक नहीं ले सकता। उदाहरण के तौर पर मैंने एक जोड़े के क्वारटर में अंगरेज़ी, सोसियालोजी (समाजशास्त्र) और पोलिटिकल सायँस (राजनीति विज्ञान) लिये थे। तीन घंटे रोज़ की पढ़ाई है, जिसके लिये ४० रुपये महीना फ़ीस है। यदि एक विषय और अधिक लिया जाय तो २० रुपये और देना पड़ता है। अर्थात् ४ विषय लेने वाला विद्यार्थी ६० रुपये महीना फ़ीस देता है।

एक क्वारटर की पढ़ाई का नाम एक मेजर है। जिस विद्यार्थी को बी० ए० की पदवी लेनी है उसको ऐसे ऐसे ३६ मेजर पूरे करने पड़ते हैं। दूसरी पदवियों के लिये अन्तर केवल विषयों में है। सायन्स (विज्ञान) की पदवी के लिये कुछ विषय जुदा हैं; और साहित्य के लिये भी। बाक़ी ३६ मेजर सब के लिये एक से हैं। विद्यार्थियों को व्यायाम और वक्तृता का भी अभ्यास करना पड़ता है, जिसके लिये जुदा प्रोफ़ेसर हैं।

यह आवश्यक नहीं की विद्यार्थी लगातार ही पढ़ने पर पदवी पा सकता है। कई वर्षों का अन्तर देकर विद्यार्थी अपनी पढ़ाई को पूरा करते हैं, और पदवियां पाते हैं। क्योंकि धन का अभाव होने से कोई कोई विद्यार्थी एक साल रुपया कमाते हैं, दूसरे साल पढ़ते हैं। वहां की परीक्षाएं हमारे देश की भांति नहीं हैं। आवश्यकता केवल नियमानुकूल

हैं—Freshmen (नवीन) और Associates (सहचर वा पुराने)। नवीन विद्यार्थी वे कहलाते हैं जो हाई-स्कूल में परीक्षोत्तीर्ण होकर कालेज में भरती होते हैं। उनको कालेज में भरती होने के लिए १५ "यूनिट" (एक "यूनिट" १५० घण्टे का होता है) का काम दिखलाना पड़ता है। उसमें से तीन "यूनिट" अंगरेज़ी, २½ "यूनिट" गणित (जिसमें रेखागणित और बीजगणित भी शामिल हैं), तीन "यूनिट" यूनानी, लैटिन, फ्रांसीसी या जर्मन भाषायें, दो "यूनिट" अमरीका और योरप का इतिहास। बाकी ४½ "यूनिट भिन्न भिन्न विषय। यथा—Botany (वनस्पति-विद्या), Zoology (प्राणिधर्म-विद्या) Physiology (दैहिकधर्म-विद्या) Chemistry (रसायन विद्या) Physics (भौतिकविद्या) Astronomy (ज्योतिःशास्त्र), Mechanics (यन्त्रविद्या), Political Economy (अर्थशास्त्र) Drawing (नकशा-नियामी) आदि।

जिस विद्यार्थी ने किसी अच्छे हाई स्कूल में १५ "यूनिट" का काम न किया हो वह कालेज में भरती नहीं हो सकता। कालेज में दाखिल होने के उपरान्त भी "यूनिट" का काम पूरा करने पर उस सर्टीफिकट की पदवी मिलती है। फिर वह Senior College (ऊँचे दर्जे के कालेज) में प्रवेश पाने का अधिकारी होता है।

विश्वविद्यालय में A. B. (ए० बी०) Ph. B. (पी० एच० बी०) (B. Lt.) (बी० एलटी०), (B. S.) (बी० एस०) Ed. B. (ईडी० बी०), तथा A. M. (ए० एम०), Ph. D. (पी० एच० डी०), D. D. (डी० डी०) और LL. D. (एलएल० डी०) आदि की पदवियाँ दी जाती हैं।

विश्वविद्यालय का वर्ष जाड़ा, गरमी, वसन्त और पतझड़ के नाम से तीन तीन महीने के चार भागों या क्वारटरों में बँटा हुआ है। प्रत्येक भाग या क्वाटर १२ हफ़्ते का होता है। प्रत्येक हफ़्ते में ४ या ५ दिन पढ़ाई होती है। प्रत्येक विद्यार्थी तीन या चार विषयों से अधिक नहीं ले सकता। उदाहरण के तौर पर मैंने एक जाड़े के क्वारटर में अंगरेज़ी, सोसियालोजी (समाजशास्त्र) और पोलिटिकल सायंस (राजनीति विज्ञान) लिये थे। तीन घंटे रोज़ की पढ़ाई है, जिसके लिये ४० रुपये महीना फ़ीस है। यदि एक विषय और अधिक लिया जाय तो २० रुपये और देना पड़ता है। अर्थात् ४ विषय लेने वाला विद्यार्थी ६० रुपये महीना फ़ीस देता है।

एक क्वारटर की पढ़ाई का नाम एक मेजर है। जिस विद्यार्थी को बी० ए० की पदवी लेनी है उसको देखे देखे ३६ मेजर पूरे करने पड़ते हैं। दूसरी पदवियों के लिये अन्तर केवल विषयों में है। सायन्स (विज्ञान) की पदवी के लिये कुछ विषय जुदा हैं; और साहित्य के लिये भी। बाक़ी ३६ मेजर सब के लिये एक से हैं। विद्यार्थियों को व्यायाम और वक्तृता का भी अभ्यास करना पड़ता है, जिसके लिये जुदा प्रोफ़ेसर हैं।

यह आवश्यक नहीं की विद्यार्थी लगातार ही पढ़ने पर पदवी पा सकता है। कई वर्षों का अन्तर देकर विद्यार्थी अपनी पढ़ाई को पूरा करते हैं, और पदवियां पाते हैं। क्योंकि धन का अभाव होने से कोई कोई विद्यार्थी एक साल रुपया कमाते हैं, दूसरे साल पढ़ते हैं। यहां की पदवीदान हमारे देश की भांति नहीं हैं। आवश्यकता केवल नियमानुकूल

विद्यार्थी होने की है। जो विद्यार्थी कालेज में प्रोफ़ेसर के बतलाये कार्य्य को लगातार करता है उसको अवश्य ही डिग्री मिल जाती है। यहां विद्या का अभिप्राय किताबी कीड़े बनाना नहीं, किन्तु उसका उद्देश्य व्यवहारिक ज्ञान प्राप्त करना है।

यूनिवर्सिटी में विद्यार्थियों के रहने के लिये बड़े बड़े तीन हाल हैं। उनमें से हिचकाक हाल सब से अच्छा है। दूसरा स्नेल हाल। तीसरा डिविनिटी हाल। हिचकाक हाल में ४०, ५० रुपये मासिक तक के कमरे हैं, जहां प्राय धनाढ्य विद्यार्थी रहते हैं। स्नेल हाल में २० रुपये महीने के कमरे हैं। डिविनिटी हाल उन विद्यार्थियों के लिये है जो इञ्जील और अन्य धर्म सम्बन्धी ग्रन्थ पढ़ते हैं, अर्थात् जिनका उद्देश अपने जीवन में धर्मसम्बन्धी कार्य्य करना है। यहां १५ रुपये मासिक तक के कमरे हैं। यह नहीं समझना चाहिये कि कमरों की बनावट या सफाई आदि में न्यूनता होने से किराये में भेद है। नहीं। भेद है आराम और लम्बाई चौड़ाई के कारण।

[illegible] हाल में (I … Bureau) है। वहां सब बातों का पता मिलता है। विद्यार्थी अध्यापक या विश्वविद्यालय सम्बन्धी जो पूछना चाहता वहां से पूछ सकते हैं। यहीं पर डाकखाना और आवश्यक दफ्तर हैं। यहीं पर (Corresp …) पत्र व्यवहार सम्बन्धी का दफ्तर है, जहां से दूर देशों में बैठे हुए विद्यार्थी शिकागो विश्वविद्यालय से पत्र व्यवहार द्वारा डिग्रियाँ प्राप्त करते हैं। जिनको इस विषय में अधिक जानना हो वे इस दफ्तर से सब बातें पूछ सकते हैं।

विद्यार्थी होने की है। जो विद्यार्थी कालेज में प्रोफ़ेसर के बतलाये कार्य्य को लगातार करता है उसको अवश्य ही पदवी मिल जाती है। यहां विद्या का अभिप्राय किताबी कीड़े बनाना नहीं, किन्तु उसका उद्देश्य व्यवहारिक ज्ञान प्राप्त करना है।

यूनिवर्सिटी में विद्यार्थियों के रहने के लिये बड़े बड़े तीन हाल हैं। उनमें से हिचकाक हाल सब से अच्छा है। दूसरा स्नेल हाल। तीसरा डिविनिटी हाल। हिचकाक हाल में ४०, ५० रुपये मासिक तक के कमरे हैं, जहां प्रायः धनाढ्य विद्यार्थी रहते हैं। स्नेल हाल में २० रुपये महीने के कमरे हैं। डिविनिटी हाल उन विद्यार्थियों के लिये है जो इञ्जील और अन्य धर्म सम्बन्धी ग्रन्थ पढ़ते हैं, अर्थात् जिनका उद्देश अपने जीवन में धर्मसम्बन्धी कार्य्य करना है। यहां १५ रुपये मासिक तक के कमरे हैं। यह नहीं समझना चाहिये कि कमरों की बनावट या सफ़ाई आदि में न्यूनता होने से किराये में भेद है। नहीं। भेद है सामान और सजाई जोड़ाई के कारण।

खास खबर हाल में (Information Bureau) है। यहां सब बातों का पता मिलता है। विद्यार्थी अध्यापक या विश्वविद्यालय सम्बन्धी जो पूछना चाहे यहां से पूछ सकते हैं। यहीं पर डाकखाना और व्यायाम दफ़्तर है। यहीं पर (Correspondence ...) पत्र व्यवहार सम्बन्धी का दफ़्तर है, जहां से दूर देशों में बैठे हुए विद्यार्थी शिकागो विश्वविद्यालय से पत्र व्यवहार द्वारा पदवियां प्राप्त करते हैं। जिनको इस विषय में अधिक जानना हो वे इस दफ़्तर से सब बातें पूछ सकते हैं।

कार्ब-हाल में भाषा शास्त्र सम्बन्धी अंगरेज़ी पुस्तकालय भी है। शिकागो विश्वविद्यालय के सभी विभागों के साथ अपना अपना पुस्तकालय है। इतिहास विभाग का पुस्तकालय पृथक् है। विज्ञान संबन्धी पुस्तकालय भी जुदा जुदा हैं। यहां विद्यार्थियों के लिए एक बैङ्क भी है। यदि कहीं से कोई चेक रसीद या हुण्डी किसी विद्यार्थी के नाम आवे तो उसको उसका रुपया विश्वविद्यालय में ही मिल जाता है। किसी और बैङ्क में जाने की आवश्यकता नहीं पड़ती।

एजुकेशन स्कूल में वे विद्यार्थी शिक्षा पाते हैं जिनको अपने भविष्यजीवन में अध्यापक बनना है। सब प्रकार की सामग्री उनके लिए यहां एकत्र है। किण्डरगारटन से लेकर पी एच० डी० (Ph. D.) तक की शिक्षा यहां पर दी जाती है। इसके साथ एक हाईस्कूल है। यहां वे विद्यार्थी पढ़ते हैं जिनको किसी ख़ास विषय की पूर्ति करके पदवी प्राप्त करनी है। जैसे कोई विद्यार्थी भारतवर्ष से यहां पढ़ने जावे। उसको ए० बी० (A. B.) की पदवी प्राप्त करनी है। परन्तु हाईस्कूल में उसने, यूनानी, लातिनी या जरमन, किसी भाषा की शिक्षा १५ "यूनिट" तक नहीं पाई, तो वह एक मुस्तसना विद्यार्थी (Unclassified Student) के तौर पर विश्वविद्यालय में दाख़िल होकर ए० बी० (A. B.) की पाठ्य पुस्तकादि पढ़ता रहेगा; वह अपनी कमी को उस हाईस्कूल में पूरा करेगा। जब उसके तीन "यूनिट" किसी भाषा में पूरे हो जावेंगे तब ए० बी० (A. B.) का कोर्स पूरा करने पर उसे वह पदवी मिल जायगी।

हैस्कल ओरयण्टल म्यूज़ियम (अजायब घर) में प्रेज़िडेण्ट, हेनरी प्रेट जड़सन, का दफ्तर है। यहां आज कल

विश्वविद्यालय के अधिष्ठाता हैं। इनका दफ़र पहिली मंज़िल पर है। दूसरी मंज़िल पर बाईं तरफ़ पुस्तकालय है, जहां धर्मसम्बन्धी पुस्तकें रहती हैं। दाहिनी तरफ़ देश देशान्तर के विचित्र पदार्थ हैं। तीसरी मंज़िल पर बाईं तरफ़ भारत के देवी देवता विराजमान हैं। जैनियों और बौद्धों की तसवीरें तथा पीतल की मूरतें भी हैं। इनके सिवा अन्य मतावलम्बियों के देवता भी यहां हैं। दाहिनी तरफ़ एशिया के अन्यान्य देशों के चित्र आदि हैं। यहां धर्मोपदेशक पादरी (Missionaries) तैयार किये जाते हैं जो संसार में खीष्ट धर्म का प्रचार करते हैं।

यहां पर ऊंचे दरजे की वनस्पति विद्या की शिक्षा दी जाती है। इसके लिये एक आलीशान इमारत अलग है। इसकी सब से ऊँची छत पर एक २१०० वर्ग फ़ीट का एक सब्ज़-घर (Green house) है। उसके साथ "एलिवेटर" (खटोला) है जो ऊपर नीचे आने जाने का साधन है। प्रत्येक श्रेणी के विद्यार्थियों को इस सब्ज़ घर में, भाँति भाँति के पौधों और वनस्पतियों की प्रत्यक्ष पहिचान कराई जाती है और उनकी बनावट तथा वृद्धि आदि के नियम समझाये जाते हैं। इस इमारत में एक सब से बड़ी प्रयोगशाला नये विद्यार्थियों के अर्थ है। दूसरे विद्यार्थियों के लिये कई एक छोटी छोटी प्रयोगशालायें हैं। उनमें भिन्न भिन्न प्रकार के खोज और परीक्षा के काम होते हैं।

यहां की रासायनिक प्रयोगशाला व्याख्यानदाताओं और रसायन विद्या के छात्रों के लिए है। यह इमारत १८९२ में हड्सी एच कंपट महाशय ने यूनिवर्सिटी को दान दी थी। उन्हीं के नाम से यह मशहूर है। १८६४ की १ जनवरी को, सात

लाख ११ हज़ार रुपया इसको इस अवस्था में लाने के लिये खर्च हो जाने पर, यह भवन छात्रों के उपयोग के लिये खोला गया था। इसमें तीन छतें हैं जिसमें रसायन सम्बन्धी सब काम करने के लिये जुदा जुदा कमरे हैं। जो विद्यार्थी अपनी सारी उम्र रसायन विद्या ही में लगाना चाहते हैं उनके लिये सब तरह की सामग्री इसमें है। इस केण्ट-भवन में एक नाट्यशाला (थियेटर) भी है जहां पर व्याख्यान, नाटक तथा रङ्गभूमि पर आने वाले को पूरी तरह से शिक्षा दी जाती है। व्याख्यानदाता प्रायः इसी भवन की नाट्यशाला में व्याख्यान, देते हैं। समर क्वार्टर (Summer Quarter)में जो व्याख्यान, बिना टिकट के, कालेज के छात्रों के लाभ के लिये दिलवाये जाते हैं वे यहीं पर होते हैं। अमरीका के प्रधान प्रधान विश्व-विद्यालयों के योग्य अध्यापक, शिकागो में आकर, यहां के विश्वविद्यालय की ओर से व्याख्यान देते हैं।

यहां पर जो "क्लब" है उसका नाम रेनल्ड क्लब है। यह "क्लब" विश्वविद्यालय के छात्रों के उठने, बैठने, मिलने और वार्त्तालाप आदि के लिये है। यहां दो तीन बड़े बड़े कमरों में "पियानो" बाजे रक्खे हैं जहां छात्र लोग, फुरसत के वक्त हंसते खेलते और गाते बजाते हैं। यहां सब प्रकार की सामयिक पुस्तकें और दैनिक, साप्ताहिक आदि पत्र आते हैं। खेलने के लिये जुदा जुदा कमरे हैं। यह क्लब विद्यार्थियों में प्रेमभाव और मित्रता उत्पन्न करने का अच्छा साधन है इस "क्लब" की दाहिनी तरफ़ विश्वविद्यालय का सब से बड़ा "हाल" है इसको मैंडल हाल कहते हैं। यहां रविवार को, तथा और और अवसरों पर भी, व्याख्यान और धार्मिक शिक्षा होती है। यह "हाल" अति विशाल और दर्शनीय है।

विश्वविद्यालय के अधिष्ठाता हैं। इनका दफ़्तर पहिली मंज़िल पर है। दूसरी मंज़िल पर बाईं तरफ़ पुस्तकालय है, जहां धर्मसम्बन्धी पुस्तकें रहती हैं। दाहिनी तरफ़ देश देशान्तरों के विचित्र पदार्थ हैं। तीसरी मंज़िल पर बाईं तरफ़ भारत के देवी देवता विराजमान हैं। जैनियों और बौद्धों की तसवीरें तथा पीतल की मूरतें भी हैं। इनके सिवा अन्य मतावलम्बियों के देवता भी यहां हैं। दाहिनी तरफ़ एशिया के अन्यान्य देशों के चित्र आदि हैं। यहां धर्मप्रचारक पादरी (Missionaries) तैयार किये जाते हैं जो संसार में खीष्ट धर्म का प्रचार करते हैं।

यहां पर ऊंचे दरजे की वनस्पति विद्या की शिक्षा दी जाती है। इसके लिये एक आलीशान इमारत अलग है। इसकी सब से ऊँची छत पर एक २१०० वर्ग फ़ीट का एक सब्ज़-घर (Green house) है। उसके साथ "एलिवेटर" (बरोत्ता) है जो ऊपर नीचे जाने आने का साधन है। प्रत्येक श्रेणी के विद्यार्थियों को इस सब्ज़ घर में, भाँति भाँति के पौधों और वनस्पतियों की प्रत्यक्ष पहिचान कराई जाती है और उनकी बनावट तथा वृद्धि आदि के नियम समझाये जाते हैं। इस इमारत में एक सब से बड़ी प्रयोगशाला नये विद्यार्थियों के लिये है। दूसरे विद्यार्थियों के लिये कई एक छोटी छोटी प्रयोगशालायें हैं। उनमें भिन्न भिन्न प्रकार के खोज और परीक्षा के काम होते हैं।

यहां की रासायनिक प्रयोगशाला व्याख्यानदाताओं और रसायन विद्या के छात्रों के लिए है। यह इमारत १८९२ में सिडनी एम० केंट महाशय ने यूनिवर्सिटी को दान दी थी। उन्हीं के नाम से यह मशहूर है। १८९४ की १ जनवरी को, मान

लाख ११ हज़ार रुपया इसको इस अवस्था में लाने के लिये खर्च हो जाने पर, यह भवन छात्रों के उपयोग के लिये खोला गया था। इसमें तीन छतें हैं जिसमें रसायन सम्बन्धी सब काम करने के लिये जुदा जुदा कमरे हैं। जो विद्यार्थी अपनी सारी उम्र रसायन विद्या ही में लगाना चाहते हैं उनके लिये सब तरह की सामग्री इसमें है। इस केण्ट-भवन में एक नाट्यशाला (थियेटेर) भी है जहां पर व्याख्यान, नाटक तथा रङ्गभूमि पर आने वाले को पूरी तरह से शिक्षा दी जाती है। व्याख्यानदाता प्रायः इसी भवन की नाट्यशाला में व्याख्यान, देते हैं। समर क्वार्टर (Summer Quarter) में जो व्याख्यान, बिना टिकट के, कालेज के छात्रों के लाभ के लिये दिलवाये जाते हैं वे यहीं पर होते हैं। अमरीका के प्रधान प्रधान विश्व-विद्यालयों के योग्य अध्यापक, शिकागो में आकर, यहां के विश्वविद्यालय की ओर से व्याख्यान देते हैं।

यहां पर जो "क्लब" है उसका नाम रेनल्ड क्लब है। यह "क्लब" विश्वविद्यालय के छात्रों के उठने, बैठने, मिलने और वार्त्तालाप आदि के लिये है। यहां दो तीन बड़े बड़े कमरों में "पियानो" बाजे रक्खे हैं जहां छात्र लोग, फ़ुरसत के वक्त हंसते खेलते और गाते बजाते हैं। यहां सब प्रकार की सामयिक पुस्तकें और दैनिक, साप्ताहिक आदि पत्र आते हैं। खेलने के लिये जुदा जुदा कमरे हैं। यह क्लब विद्यार्थियों में प्रेमभाव और मित्रता उत्पन्न करने का अच्छा साधन है इस "क्लब" की दाहिनी तरफ़ विश्वविद्यालय का सब से बड़ा "हाल" है इसको मेंडल हाल कहते हैं। यहां रविवार को, तथा और और अवसरों पर भी, व्याख्यान और धार्मिक शिक्षा होती है। यह "हाल" अति विशाल और दर्शनीय है।

धाई और भोजनशाला और रसोईघर हैं। सबेरे दोपहर और रात को विद्यार्थी यहां भोजन करते हैं। विद्यार्थी ही परोसने और पकाने वाले हैं। भोजन के समय यहां बड़ा आनन्द आता है। सब लोग प्रेम से एक दूसरे से वार्तालाप करते हुए भोजन करते हैं; किसी से घृणा नहीं। जो विद्यार्थी परोसते या पानी देते हैं उनके विषय में किसी के मन में ऊंच नीच का भाव नहीं। जो छात्र निर्धन होने के कारण, अपने श्रम से धन कमाकर विद्याभ्यास करते हैं उनको यहां कोई दुर्दृष्टि से नहीं देखता। जनसमाज में सर्वदा उनकी अधिक प्रतिष्ठा होती है। यही कारण है कि अमरीका में निर्धन माता पिता का पुत्र संयुक्त राज्यों का प्रेसीडेंट हो सकता है। विपरीत इसके भारतवर्ष के धन सम्पन्न लोग अपने निर्धन देशभाइयों से घृणा करते हैं। उनके उपकार के लिये वे बहुत कम दत्तचित्त होते हैं। भला जब अपने ही देशवासियों से लोग प्रेम नहीं रखते, तब उन्हीं के विषय में ऊंच नीच भाव रखते हैं, तब कैसे उन्नति हो सकती है?

रीयरसन साहब का बनाया हुआ भौतिक परीक्षागृह (Physical Laboratory) भी यहां देखने योग्य है। इसे देख कर मालूम होता है कि विद्या के प्रेमी किस प्रकार वैज्ञानिक उन्नति के लिये धन व्यय करते हैं। इसकी बनावट ऐसी है जिससे सूक्ष्म से सूक्ष्म प्रयोग करने में कोई विघ्न न हो। दीवारों और छतों में आवश्यकतानुसार नलियों के ले जाने के लिये सूराख हैं। दूसरी छत पर परीक्षा और प्रयोग करने वालों के लिये सब तरह का सामान है। यहां पर विद्यार्थियों का एक कारखाना भी है जिस यन्त्र की आवश्यकता होती है वह यहां तत्काल बना लिया जाता है। सब से नीचे के

तहखाने में तीन Dynamos (डाइनामोज़ — यन्त्रविशेष) और एक इंजिन गर्मी पहुँचाने के लिए है।

कानूनी शिक्षा के स्कूल की बनावट कैम्ब्रिज (इंगलैंड) के प्रसिद्ध किंग्ज़ कालेज (King's College) की ऐसी है। जिसने इस कालिज को देखा है वही समझ सकता है कि यह स्कूल कितना रमणीक और विशाल होगा। इसके साथ एक बहुत बड़ा पुस्तकालय है। एक बड़ा "हाल" विद्यार्थियों के अध्ययन के लिए भी है। जुदा जुदा मेज़ों पर प्रायः चुपचाप बैठे हुए छात्र अपने अपने पाठ में मग्न देख पड़ते हैं। पुस्तकें कमरे की भीतों से लगी हुई अलमारियों में रक्खी रहती हैं। जिस पुस्तक की आवश्यकता हो, फ़ौरन वहाँ से मिल सकती है; यहाँ ऐसा सुप्रबन्ध है कि पठन पाठन में ज़रा भी विघ्न नहीं होता।

अमरीका और योरप में स्त्रियों का बड़ा आदर है। उनके विद्याभ्यास और शारीरिक तथा मानसिक उन्नति का वैसा ही अच्छा प्रबन्ध है जैसा कि पुरुषों के लिए। स्त्री पुरुष का आधा अङ्ग है — यह बात विशेष करके इन्हीं देशों में देख पड़ती है। शिकागो विश्वविद्यालय में क्या स्त्री, क्या पुरुष, सभी विद्याभ्यास करते हैं। कालेज में स्त्री अध्यापिकायें भी हैं। पुरुषों के रहने के लिए कई बड़े बड़े घर तो हैं ही, स्त्रियों के लिए भी एक विशाल भवन है। स्त्रियों के क्लब भी जुदा हैं; भोजन-शालायें जुदा हैं; व्यायाम-शालायें जुदा हैं। व्यायाम-शालाओं में उन्हें सब प्रकार के खेल सिखलाये जाते हैं। उनके तैरने के लिए सुन्दर स्वच्छ जल का एक तालाब है। समाज की शारीरिक, मानसिक,

बाईं ओर भोजनशाला और रसोईघर हैं। सबेरे दोपहर और रात को विद्यार्थी यहां भोजन करते हैं। विद्यार्थी ही परोसने और पकाने वाले हैं। भोजन के समय यहां बड़ा आनन्द आता है। सब लोग प्रेम से एक दूसरे से वार्तालाप करते हुए भोजन करते हैं; किसी से घृणा नहीं। जो विद्यार्थी परोसते या पानी देते हैं उनके विषय में किसी के मन में ऊंच नीच का भाव नहीं। जो छात्र निर्धन होने के कारण, अपने श्रम से धन कमाकर विद्याभ्यास करते हैं उनको कोई घृणा दृष्टि से नहीं देखता। जनसमाज में उनकी अधिक प्रतिष्ठा होती है। यही कारण है कि अमरीका में निर्धन माता पिता का पुत्र संयुक्त राज्यों का प्रेसीडेंट हो सकता है। विपरीत इसके भारतवर्ष के धन सम्पन्न लोग अपने निर्धन देशभाइयों से घृणा करते हैं। उनके उपकार के लिये वे बहुत कम दत्तचित्त होते हैं। भला जब अपने ही देशवासियों से प्रेम नहीं रखते, जब उन्हीं के विषय में ऊंच नीच भाव रखते हैं, तब कैसे उन्नति हो सकती है?

रौलैण्ड साहब का बनाया हुआ भौतिक परीक्षालय (Physical Laboratory) भी यहां देखने योग्य है। इसे देख कर मालूम होता है कि विद्या के प्रेमी किस प्रकार वैज्ञानिक उन्नति के लिये धन व्यय करते हैं। इसकी बनावट ऐसी है जिससे सूक्ष्म से सूक्ष्म प्रयोग करने में कोई विघ्न न हो। दीवारों और खम्भों में आवश्यकतानुसार मशीनों के ले जाने के लिये सूराख हैं। दूसरी छत पर परीक्षा और प्रयोग करने वालों के लिये सब तरह का सामान है। यहां पर विद्यार्थियों का एक कारखाना भी है जिस वस्तु की आवश्यकता होती है वह वहां तत्काल बना लिया जाता है। अब मैं शीघ्र के

तहखाने में तीन Dynamos (डाइनामोज़ = यन्त्रविशेष) और एक इंजिन गरमी पहुँचाने के लिए है।

क़ानूनी शिक्षा के स्कूल की बनावट केम्ब्रिज (इंगलैंड) के प्रसिद्ध किंग्ज़ कालेज (King's College) की ऐसी है। जिसने उस कालिज को देखा है वही समझ सकता है कि यह स्कूल कितना रमणीक और विशाल होगा। इसके साथ एक बहुत बड़ा पुस्तकालय है। एक बड़ा "हाल" विद्यार्थियों के अभ्यास के लिए भी है। जुदा जुदा मेज़ों पर प्रायः चुपचाप बैठे हुए छात्र अपने अपने पाठ में मग्न देख पड़ते हैं। पुस्तकें सामने की भीतों से सटी हुई अलमारियों में रखी रहती हैं। जिस पुस्तक की आवश्यकता हो, फ़ौरन वहाँ से मिल सकती है; यहाँ ऐसा सुप्रबन्ध है कि पठन पाठन में ज़रा भी विघ्न नहीं होता।

अमरीका और योरप में स्त्रियों का बड़ा आदर है। उनके विद्याभ्यास और शारीरिक तथा मानसिक उन्नति का वैसा ही अच्छा प्रबन्ध है जैसा कि पुरुषों के लिए। स्त्री पुरुष का आधा अङ्ग है — यह बात विशेष करके इन्हीं देशों में देख पड़ती है। शिकागो विश्वविद्यालय में क्या स्त्री, क्या पुरुष, सभी विद्याभ्यास करते हैं। कालेज में स्त्री अध्यापिकायें भी हैं। पुरुषों के रहने के लिए कई बड़े बड़े घर तो हैं ही, स्त्रियों के लिए भी एक विशाल भवन है। स्त्रियों के क्लब भी जुदा हैं; भोजन-शालायें जुदा हैं; व्यायाम-शालायें जुदा हैं। व्यायाम-शालाओं में उन्हें सब प्रकार के खेल सिखलाये जाते हैं। उनके तैरने के लिए सुन्दर स्वच्छ जल का एक तालाब है। समाज की शारीरिक, मानसिक,

और आत्मिक उन्नति तभी हो सकती है जब हमारी माताएँ, हमारी बहनें, हमारी कन्याएं भी सब कामों में उन्नति करें। भारतवर्ष में स्त्री शिक्षा के अभाव को देखकर दुःख होता है। क्या वह जाति कभी उन्नति के शिखर पर पहुँच सकती है जहां स्त्रियों की अधोगति हो! अकेले पुरुषों के किये बेड़ापार नहीं हो सकता। इसे सत्य मानिये।

इसके सिवा यहां के विश्वविद्यालय की बहुत सी और भी इमारतें हैं। खेल कूद कसरत के लिए एक बहुत बड़ा "जिम नैज़ियम" (Gymnasium) है। फुटबाल खेलने के लिए एक चौड़ा मैदान है जहां प्रत्येक शनिवार को सैकड़ों स्त्री पुरुषों की भीड़ खेल देखने के लिए एकत्र होती है। एक सर्वसाधारण पुस्तकालय है जो सवेरे ८½ बजे से शाम के ५½ बजे तक खुला रहता है। गत साल इतना खर्च करके विश्वविद्यालय के अधिकारियों ने एक बहुत बड़ा पुस्तकालय बनवाया है, पुस्तकालय के पास एक शक्तिशाली गृह (Power House) है जहां से भाप बड़े बड़े नलों में होती हुई विश्वविद्यालय की सब इमारतों के कमरों में पहुंचती है। बिजली का एक कारखाना (Electric House) है, जिससे सब कमरों में बिजली का प्रकाश पहुंचता है। शीत के महीने में नलियों और सड़कों पर कई फुट बरफ जमी रहती है। कमरे में बैठे हुए लोगों को जाड़ा नहीं लगता। इसी भाप के द्वारा कमरे को गरम रखते हैं। बाहर १० या १५ दर्जे शून्य से नीचे तापमान (Temperature) हो, परन्तु कमरे में ७० दर्जे की गरमी रहती है। विश्वविद्यालय की लड़कियों के शीत काल में यह बड़े सब काम हैं और लड़कों को वर्ष का दिनचर्या इस है समय विद्यार्थियों का सम्मान रहता है।

अब, अन्त में, मुझे इस बात का विचार करना है कि शिकागो-विश्वविद्यालय विद्यार्थियों के लिये क्यों अधिक लाभकारी है ? शिकागो व्यापार की बहुत बड़ी मण्डी है। हज़ारों कारख़ाने, गोदाम और बड़े बड़े व्यापारियों के कारोबार यहां हैं। यहां ऐसे ऐसे कारख़ाने हैं जहां आदमियों की सदैव आवश्यकता रहती है। इसलिए बहुत से विद्यार्थी, जो धन के अभाव से और कहीं कालेज में नहीं पढ़ सकते, यहां चले आते हैं। विश्वविद्यालय में नौकरी दिलाने का भी एक महकमा है उसका सम्बन्ध सभी बड़े बड़े कारख़ानों से है। विद्यार्थी जैसा काम कर सकता हो वही काम तीन चार घंटे करके वह अपने ख़र्च के लिए रुपया पैदा कर सकता है। सैकड़ों विद्यार्थी इसी तरह यहां पढ़ते हैं। विश्वविद्यालय ने एक कम्पनी भी ऐसी बना रक्खी है जो होनहार निर्धन विद्यार्थियों को १००० रुपये वार्षिक तक क़र्ज़ देती है, पर उन्हीं को जो तीन चार वर्ष के अन्दर बिना सूद के रुपया अदा करने का प्रण करते हैं। यहां एक और भी महकमा है जहां कोई १७५ विद्यार्थी विश्वविद्यालय के प्रबन्ध सम्बन्धी काम करके अपनी फ़ीस का रुपया कमा लेते हैं। ४० या ५० छात्र भोजन-शाला में दो घण्टे रोज़ काम करके अपने भोजन का ख़र्च निकाल लेते हैं। इस विश्वविद्यालय के अध्यापक बहुत योग्य, उदार और सुशील हैं। इसलिए अमरीका के प्रत्येक प्रान्त के विद्यार्थी यहां पढ़ने आते हैं।

यहां के विश्वविद्यालय की इमारतें शहर के बाहर, मिशीगन नामकी झील के दूसरी तरफ़ हैं। उनके इर्द गिर्द सुन्दर सुन्दर बाग़ और पुष्पवाटिकायें हैं। इससे इमारतों की शोभा दूनी

और आत्मिक उन्नति तभी हो सकती है जब हमारी मातायें, हमारी बहनें, हमारी कन्यायें भी सब कामों में उन्नति करें। भारतवर्ष में स्त्री शिक्षा के अभाव को देखकर दुःख होता है। क्या वह जाति कभी उन्नति के शिखर पर पहुंच सकती है जहां स्त्रियों की अधोगति हो? अकेले पुरुषों के किये बेड़ा पार नहीं हो सकता। इसे सच मानिये।

इनके सिवा यहां के विश्वविद्यालय की बहुत सी और भी इमारतें हैं। खेल कूद कसरत के लिए एक बहुत बड़ा "जिमनैशियम" (Gymnasium) है। फुटबाल खेलने के लिए एक चौड़ा मैदान है, जहां प्रत्येक शनिवार को सैकड़ों स्त्री पुरुषों की भीड़ खेल देखने के लिये एकत्र होती है। एक सर्वसाधारण पुस्तकालय है जो सबेरे ८½ बजे से शाम के ५½ बजे तक खुला रहता है। लाख रुपया खर्च करके विश्वविद्यालय के अधिकारियों ने एक बहुत बड़ा पुस्तकालय बनवाया है, पुस्तकालय के पास एक यौगिकशक्ति गृह (Power House) है जहां से भाफ बड़े बड़े नलों में होती हुई विश्वविद्यालय की सब इमारतों के कमरों में पहुंचती है। बिजली का एक कारखाना ([illegible]) है, जिससे सब कमरों में बिजली का प्रकाश पहुंचता है। शीत के महीने में गलियों और मकानों पर कई फुट बर्फ जमी रहती है। कमरे में बैठे हुए लोगों को जाड़ा नहीं लगता। उष्ण भाफ के नल कमरे को गरम रखते हैं। बाहर १० या १५ दर्जा शून्य से नीचे तापमान (Temperature) हो, परन्तु कमरे में ७० दर्जा की गर्मी रहता है। विश्वविद्यालय की सड़कों के नीचे भाफ के बड़े बड़े नल लगे हैं जो सड़कों की बर्फ को पिघला देते हैं जिससे विद्यार्थियों को आराम रहता है।

अब, अन्त में, मुझे इस बात का विचार करना है कि शिकागो-विश्वविद्यालय विद्यार्थियों के लिये क्यों अधिक लाभकारी है ? शिकागो व्यापार की बहुत बड़ी मण्डी है। हज़ारों कारख़ाने, गोदाम और बड़े बड़े व्यापारियों के कारोबार यहां हैं। यहां ऐसे ऐसे कारख़ाने हैं जहां आदमियों की सदैव आवश्यकता रहती है। इसलिए बहुत से विद्यार्थी, जो धन के अभाव से और कहीं कालेज में नहीं पढ़ सकते, यहां चले आते हैं। विश्वविद्यालय में नौकरी दिलाने का भी एक महकमा है उसका सम्बन्ध सभी बड़े बड़े कारख़ानों से है। विद्यार्थी जैसा काम कर सकता हो वही काम तीन चार घंटे करके वह अपने ख़र्च के लिए रुपया पैदा कर सकता है। सैकड़ों विद्यार्थी इसी तरह यहां पढ़ते हैं। विश्वविद्यालय ने एक कम्पनी भी ऐसी बना रक्खी है जो होनहार निर्धन विद्यार्थियों को १००० रुपये वार्षिक तक कर्ज़ देती है, पर उन्हीं को जो तीन चार वर्ष के अन्दर बिना सूद के रुपया अदा करने का प्रण करते हैं। यहां एक और भी महकमा है जहां कोई १७५ विद्यार्थी विश्वविद्यालय के प्रबन्ध सम्बन्धी काम करके अपनी फ़ीस का रुपया कमा लेते हैं। ४० या ५० छात्र भोजन-शाला में दो घण्टे रोज़ काम करके अपने भोजन का ख़र्च निकाल लेते हैं। इस विश्वविद्यालय के अध्यापक बहुत योग्य, उदार और सुशील हैं। इसलिए अमरीका के प्रत्येक प्रान्त के विद्यार्थी यहां पढ़ने आते हैं।

यहां के विश्वविद्यालय की इमारतें शहर के बाहर, मिशीगन नामकी झील के दूसरी तरफ़ हैं। उनके इर्द गिर्द सुन्दर सुन्दर बाग़ और पुष्पवाटिकायें हैं। इससे इमारतों की शोभा दूनी

हो गई है। यही कारण है जो शिकागो-विश्वविद्यालय दूर दूर के विद्यार्थियों को आकर्षित कर लेता है। यहां विद्यार्थियों को सब तरह की स्वतन्त्रता है। जहां चाहें जायं; जहां चाहें घूमें। किसी प्रकार की रोक टोक नहीं।

प्यारे पाठक! मैंने आपको, संक्षेप से, अमरीका के एक बड़े भारी विश्वविद्यालय का वृत्तान्त सुनाया और उसकी शिक्षा-प्रणाली का भी कुछ वर्णन किया। अब आप सोचिये कि क्या भारत वर्ष के जुदा जुदा कालेज एक यूनिवर्सिटी—एक विश्वविद्यालय—के रूप में नहीं लाये जा सकते? मैं तो कोई रुकावट इसमें नहीं देखता। यदि हिन्दू कालेज, अलीगढ़ कालेज, खालसा कालेज, डी० ए० वी० कालेज अमरीका का यूनिवर्सिटियों की भाँति हो जाय और अपने विद्यार्थियों को सरकारी परीक्षाओं के पचड़े से निकाल, नियमानुकूल विद्याभ्यास करने पर, उन्हें पदवियां दें तो विद्यार्थियों को इस बात का अनुभव हो जायगा कि हम भी स्वतन्त्रता से अपना प्रबन्ध करने योग्य हैं। यह आवश्यक नहीं है कि दूसरों पर अवलम्बन करके ही हम उन विद्याओं को प्राप्त करें। इसके सिवा विद्यार्थियों को किताबी कीड़े न बना कर उपयोगी और उपकारी विद्या और कला-कौशल की शिक्षा देनी चाहिये। यह भी स्मरण रहे कि जिस प्रकार अमरीका के धनाढ्य पुरुष अपनी सम्पत्ति को जाति के उपकार के लिए अर्पण करते हैं, उसी प्रकार, हमें भी अपने धन का सदुपयोग करना चाहिये। बिना इसके भारत का कल्याण नहीं हो सकता।

एक बड़ी भारी शिक्षा जो हमको अमरीका से मिलती है यह आपस का प्रेम है। जैसे अमरीका में भिन्न भिन्न मतों के

विद्यार्थी एक ही कालेज में लिखते पढ़ते उठते बैठते और मिलते-जुलते हैं वैसेही हमारे देशमें भी होना चाहिए। प्रत्येक के हृदय में दूसरे के विचारों के लिए सम्मान होना उचित है, यदि कोई किसी बात में हमसे भिन्न मत रखता है तो उससे घृणा न करके, जिसमें हम और वह सहमत हैं, उसमें उसके साथ मिल कर काम करना चाहिए।

हो गई है। यही कारण है जो शिकागो-विश्वविद्यालय दूर दूर के विद्यार्थियों को आकर्षित कर लेता है। यहाँ विद्यार्थियों को सब तरह की स्वतन्त्रता है। जहां चाहें जायं; जहां चाहें घूमें। किसी प्रकार की रोक टोक नहीं।

प्यारे पाठक! मैंने आपको, संक्षेप से, अमरीका के एक बड़े भारी विश्वविद्यालय का वृत्तान्त सुनाया और उसकी शिक्षा-प्रणाली का भी कुछ वर्णन किया। अब आप सोचिये कि क्या भारत वर्ष के जुदा जुदा कालेज एक यूनिवर्सिटी—एक विश्वविद्यालय—के रूप में नहीं लाये जा सकते? मैं तो कोई रुकावट इसमें नहीं देखता। यदि हिन्दू कालेज, अलीगढ़ कालेज, खालसा कालेज, डी० ए० वी० कालेज अमरीका की यूनिवर्सिटियों की भाँति हो जाय और अपने विद्यार्थियों को सरकारी परीक्षाओं के पचड़े से निकाल, नियमानुकूल विद्याभ्यास करने पर, उन्हें पदवियां दें तो विद्यार्थियों को इस बात का अनुभव हो जायगा कि हम भी स्वतन्त्रता से अपना प्रबन्ध करने योग्य हैं। यह आवश्यक नहीं है कि दूसरों पर अवलम्बन करके ही हम उन पदवियों को प्राप्त करें। इसके सिवा विद्यार्थियों को किताबी कीड़े न बना कर उपयोगी और उपकारी विद्या और कला-कौशल की शिक्षा देनी चाहिये। यह भी स्मरण रहे कि जिस प्रकार अमरीका के धनाढ्य पुरुष अपनी सम्पत्ति को जाति के उपकार के लिए अर्पण करते हैं, उसी प्रकार, हमें भी अपने धन का सदुपयोग करना चाहिये। बिना उसके भारत का कल्याण नहीं हो सकता।

एक बड़ी भारी शिक्षा जो हमको अमरीका से मिलती है वह आपस का प्रेम है। जैसे अमरीका में भिन्न भिन्न मतों के

विद्यार्थी एक ही कालेज में लिखते पढ़ते उठते बैठते और मिलते-जुलते हैं वैसेही हमारे देशमें भी होना चाहिए। प्रत्येक के हृदय में दूसरे के विचारों के लिए सम्मान होना उचित है, यदि कोई किसी बात में हमसे भिन्न मत रखता है तो उससे घृणा न करके, जिसमें हम और वह सहमत हैं, उसमें उसके साथ मिल कर काम करना चाहिए।